

RNI नं. : 7387/63

मुद्रण तिथि : 15-16 अगस्त 2024

डाक प्रेषण तिथि : 15-17 अगस्त 2024

ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62

अंक : 09

मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 84

डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26

Office Posted at R.M.S., Bikaner



राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

# श्रमणापासक

धार्मिक पाक्षिक

विश्व का कल्याण  
क्षमा में ही निहित है



पर्व पर्युषण समक्ष हमारे,  
करें कर्मों की निर्जरा।  
अभयदान दें सब जीवों को,  
सही तीर्थकरों की परंपरा।

”

गुरु कृपा की  
अनुभूति होती है,  
अभिव्यक्ति नहीं।

”

हमने अच्छा  
किया होता तो  
बुरा क्यों होता?

”

कार्य सफलता की झलक  
तुम्हारे भीतर पहुँच जानी चाहिए।  
तुम्हें अहसास हो जाना चाहिए कि  
तुम कामयाबी हासिल करोगे।

॥ -परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ॥

# ॥ आगमवाणी ॥

जह बालो जंपंतो, कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ।  
तं तह आलोइज्जा, मायामयविप्पमुक्को वि।।

-महाप्रत्याख्यान (22)

जैसे बालक अपने कार्य-अकार्य को सरलतापूर्वक माँ के समक्ष व्यक्त कर देता है, वैसे ही साधु को भी अपने समस्त दोषों की आलोचना माया-मद (छल-छद्म) त्यागकर करनी चाहिए।

As a child simply reports all his deeds good and bad to its mother, so must a monk reveal all his flaws to his guru without any pride and guile, and obtain due expiation for them.

जह खलु मइलं वत्थं, सुज्जइ उदगाइएहिं दव्वेहिं।  
एवं भावुवहाणेण, सुज्जाए कम्ममट्टविहं।।

-आचारांगनिर्युक्ति (282)

जिस प्रकार जल आदि शोधक द्रव्यों से मलिन वस्त्र भी शुद्ध हो जाता है, उसी प्रकार आध्यात्मिक तप साधना द्वारा आत्मा ज्ञानावरणादि अष्टविध कर्ममल से मुक्त हो जाता है।

As the clothes are washed clean of their blemishes by the use of water and other detergents, so the soul is washed clean of its eight types of karmic mire by spiritual observances of the volitional penance.

निउणो वि जीव पोओ, तवसंजममारूअविहूणो।

-आवश्यकनिर्युक्ति (96)

शास्त्र ज्ञान में कुशल साधक भी तप, संयम रूप पवन के बिना संसार सागर को तैर नहीं सकता।

Even the aspirant learned in scriptural learning cannot sail across the ocean of worldly existence and liberate without the favourable wind of restraint and penance.

जहा तवस्सी धुणते तवेणं, कम्मं तहा जाण तवोऽणुमंता।

-बृहत्कल्पभाष्य (4401)

जिस प्रकार तपस्वी तप के द्वारा कर्मों को धुन डालता है, वैसे ही तप का अनुमोदन करने वाला भी।

As an austere aspirant destroys his accumulated karmic bondage by observing penance, so does the aspirant who approves and admires the observance of such penance by others.

तो पूयणं तवसा आवहेज्जा।

-सूत्रकृतांग (1/7/27)

तप के द्वारा पूजा-प्रतिष्ठा की अभिलाषा नहीं करनी चाहिए।

The spiritual aspirant ought not to aspire to honour and fame for his penance.

साभार- प्राकृत मुक्तावली ॐॐॐॐ



राम चमकते भानु समाना

# अनुक्रमणिका

## धर्मदेशना

- 08 क्षमामूर्ति**  
-आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.
- 13 प्रवृत्ति हो क्षमा में...**  
-आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.
- 19 पर्युपासना का स्वरूप**  
-आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

## ज्ञान सार

- 26 ऐसी वाणी बोलिए : मधुर वचन**  
-संकलित
- 32 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला**  
-कंचन कांकरिया

## ज्ञान सार

- 18 संयम पथ पर बढ़े चलेंगे**  
-बाबूलाल सेठिया
- 31 राम नाम से, मन ये हर्षित हुआ**  
-हर्षिता दशोरिया
- 48 पुकार**  
-पायल वया
- 50 पंच परमेष्ठी वंदन**  
-संध्या धाड़ीवाल
- 58 अपनी अलग पहचान बना**  
-मुक्ति जैन

## संस्कार सौरभ

- 34 धर्ममूर्ति आनंद कुमारी**  
-संकलित
- 41 जब हो संस्कारों की परीक्षा**  
--गौतम पारख
- 43 क्षमा अमरत्व की औषधि**  
-पदमचंद गाँधी
- 47 सामूहिक भोज रखता है...**  
-सुभाष कोटड़िया
- 49 जैन दर्शन बनाम आस्तिक दर्शन**  
-डॉ. जवाहरलाल नाहटा
- 51 चातुर्मास टाइम ऑन...**  
-भाविन जैन 'सजग'
- 53 राष्ट्रधर्म के उद्बोधक...**  
-डॉ. दिलीप धींग
- 56 जैन धर्म में पंच शरीर...**  
-डॉ. बी रमेश गादिया
- 59 महत्तम परिवर्तन का आधार**  
-प्रो. सुमेरचंद जैन
- 61 पर्वाधिराज पर्व पर्युषण**  
-डॉ. आभाकिरण गाँधी

## विविध

- 38 बालमन में उपजे ज्ञान**  
-मोनिका जय ओस्तवाल
- 64 भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार**  
-महेश नाहटा



# पीड़ित नहीं, प्रेरित हों

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

**व्य**क्ति जब दूसरे को जो हम उम्र है, साथी है, उसे कई विषयों में अपने से आगे बढ़ा हुआ देखता है तो उसके मन में उसके प्रति क्या प्रतिक्रिया व्यक्त होती है? अधिकांश स्थितियों में ऐसे प्रसंग पर व्यक्ति के भीतर एक टीस पैदा होती है, मन में व्यथा होती है कि मैं उससे-उनसे क्यों पिछड़ गया? वह अपने पिछड़ेपन को व्यक्त नहीं होने देना चाहता। वह चाहता है कि वह सुपर दिखे। उसका पिछड़ापन यदि व्यक्त हो जाता है तो उसको बड़ी पीड़ा होती है। वस्तुतः वह पीड़ा उसके अहंकार को होती है। वह जो सुरक्षा चाहता है, सुपर दिखना चाहता है, वह उसकी नहीं उसके अहं की चाहत होती है। उस चाहत को पूरा करने के लिए वह

दाँव भी खेलता है, लेकिन वे उसे समाधान नहीं दे पाते, बल्कि समस्या और अधिक बढ़ती जाती है। **‘ज्यों-ज्यों उपचार किया, रोग बढ़ता गया’** उक्ति उस पर चरितार्थ हो जाती है। यथार्थ में उपचार हुआ ही नहीं। वह जिसे उपचार मानता है वह उपचार न हो कर अपचार हो रहा है। वह पथ्य नहीं, अपथ्य का आसेवन कर रहा होता है। अपथ्य सेवन से उसका मर्ज कैसे घट सकता है? कैसे दूर हो सकता है? उसे तो बढ़ना ही है और वह बढ़ता जाता है। ऐसा व्यक्ति हर संभव स्थिति में अपने अहं को ऊपर रखने का मानस बनाए रखता है। यदि वह कभी नम्र रुख अख्तियार भी करता है तो उसे भी अपने अहं पोषण के लिए ही कर रहा है, ऐसी पूर्ण संभावना है। इससे बचने का सही उपाय है कि अपने अहं का रक्षण मत करो। दूसरों में यदि योग्यता विशेष है तो उससे पीड़ित नहीं होना, अपितु प्रेरित होना चाहिए। यदि प्रेरणा ले सकेगा तो वह अपना प्रोग्रेस, विकास कर पाने में, अपने व्यक्तित्व को निखारने में समर्थ हो सकता है, अन्यथा उसकी सारी सोच अहं रक्षण के इर्द-गिर्द ही घूमती रहेगी। वह उसी में फँसा रह जाएगा। आत्म-विकास उसके लिए दुष्कर नहीं तो कठिन अवश्य है। मेरी भावना में कहा गया है उस पर विचार करें, **‘देख दूसरे की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ।’** दूसरे को देखकर अपने में ग्लानि मत आने दो। स्वयं को दोषी मत मानो। उससे प्रेरणा लेकर प्रकर्ष को प्राप्त करो।

कार्तिक कृष्ण 11, शनिवार, 07-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर ❤️❤️❤️

# BE INSPIRED, NOT OPPRESSED

-Param Pujya Acharya Pravara 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

When a person finds his coeval companion streets ahead of him in several respects, how does his mind react towards him? In most situations, on such occasions, the person is anguished within and feels pained as to why he fell behind. He would not let his lag show up. He desires to look super. And if it becomes apparent that he has trailed behind, he feels miserable. In fact, it is his ego that feels the agony. The security that he seeks, the desire to look super, is not his longing but that of his ego. He is not above resorting to trickery to fulfil his desire, but that hardly makes for satisfaction; rather, the problem aggravates. The disease worsened as the treatment proceeded; this saying begins to fit his case.

Truly speaking, the treatment did not get under way at all. What was supposedly therapy was simply an aberration. He would have been savouring of not wholesome but unwholesome diet. Now, could a non-nutritive diet have helped with curbing the virulence of disease? Or curing it? It is bound to aggravate and, in fact, keeps worsening.

Such a person has a mindset of having the ascendancy of his ego in all situations. Should he ever adopt a milder stance, it would be, in all likelihood, just to feed his ego. The way to eschew it is to not protect your ego. If others manifest a special aptitude, one ought to be inspired thereby and not anguished. If he would take inspiration, he would be enabled to register his own progress, post his own growth, and refurbish his own personality; else, his entire thinking will revolve around preservation of his ego. He will remain trapped therein. For him, the development of 'Self' is difficult, if not arduous. It says in 'Meri Bhavna' (the twelve reflections or thoughts in Jain religious literature) that the following line may be pondered over : '**Dekh doosre ki badhti ko, kabhi na irshya bhavdharoon'** (or, never should I have the feeling of envy at another's prosperity).

Let not remorse assail you when you look at another. Do not fault yourself. Rather, take inspiration from him and attain excellence yourself.

Saturday, 07-11-2015

Courtesy- Brahmakshar ❤️❤️❤️



# क्षमा : एक ब्रह्मास्त्र



**क्षमा** को एक प्रकार का शस्त्र कहा गया है। सामान्यतया शस्त्र का अर्थ हथियार होता है। शस्त्र का नाम आते ही हमारी कल्पना में हिंसा के दृश्य उभर आते हैं, क्योंकि शस्त्र का उपयोग हिंसा के लिए, एक-दूसरे को आघात पहुँचाने के लिए किया जाता है।

जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि शस्त्र हिंसा का साधन है तो क्षमा को शस्त्र क्यों कहा गया है, जबकि हिंसा व क्षमा दोनों परस्पर विरोधी शब्द हैं। यहाँ शस्त्र उसे कहा गया है, जिसके द्वारा दूसरे को या सामने वाले को जीत लिया जाए। यह आवश्यक नहीं कि किसी को जीतने के लिए हिंसा का ही सहारा लिया जाए। ऐसी जीत में सिर्फ एक पक्ष की ही जीत होगी और दूसरे पक्ष की हार भी निश्चित होती है। लेकिन क्षमा! क्षमा ऐसा शस्त्र है, जिससे सामने वाले को जीत लिया जाता है फिर भी सामने वाला भी विजेता ही रहता है। क्षमा के शस्त्र से जीतने वाला भी विजेता और सामने वाला भी विजेता। इसमें किसी की हार नहीं होती। एक ऐसी विजय, जिसके बाद न तो फिर किसी शस्त्र की आवश्यकता रहती है और न ही किसी विजय की।

भगवान महावीर चंडकौशिक सर्प के सामने ध्यानस्थ खड़े थे। चंडकौशिक क्रोध से भगवान को देख रहा था, लेकिन भगवान पर उसका कोई असर नहीं हुआ। सर्प फुँकार रहा था, लेकिन भगवान पर उसका भी कोई असर नहीं हुआ। इससे त्रिद्विग्न हो सर्प का क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया और उसी क्रोध के वश उसने भगवान के पैर के अँगूठे पर इस लिया, लेकिन भगवान पर अब भी कोई असर नहीं हुआ।

ऐसा क्यों? जिस चंडकौशिक के विष के प्रभाव से वह वन उजड़ गया, उसके भय से मनुष्य तो क्या पशु व पक्षी तक भयभीत थे, वृक्ष तक फल, पुष्प व पर्णहीन बन चुके थे, लेकिन भगवान पर उसका कोई असर नहीं हुआ।

मनुष्य शस्त्र संचालन में पारंगत हो सकता है फिर भी कोई एक व्यक्ति भी चंडकौशिक तक शस्त्र के साथ भी नहीं पहुँच सका। कोई इतना साहस नहीं कर पाया, लेकिन भगवान पहुँच गए वहाँ पर और वो भी बिना किसी शस्त्र के। भगवान बाह्य दृष्टि से निःशस्त्र थे, लेकिन उनके पास एक आंतरिक शस्त्र था और वह शस्त्र था **क्षमा!** वह शस्त्र था स्वयं की विजय के लिए तथा सामने वाले की भी विजय के लिए। भगवान ने अपने ऐसे दिव्य क्षमा शस्त्र का उपयोग कर चंडकौशिक को शांत रहने का बोध दिया। स्वयं तो शांत थे ही अतः वह शस्त्र प्रभावशाली बना और उस शस्त्र ने चंडकौशिक को भी शांत कर दिया। यह था क्षमा रूपी शस्त्र का असरदार उपयोग, जिसमें किसी की पराजय नहीं हुई। चंडकौशिक स्वयं भी जीत गया और दुर्गति में जाने लायक कार्य करके भी भगवान से बोधित होकर सद्गति की प्राप्ति कर ली।

क्षमा रूपी शस्त्र हमारे पास भी है। तीर्थंकर भगवंतों ने, गुरु-भगवंतों ने हमें भी यह शस्त्र प्रदान किया है। इसके उपयोग की विधि व आवश्यकता भी बताई है। क्षमा रूपी शस्त्र है, सांवात्सरिक क्षमापना जैसा अवसर भी है, सामने चार गति, छह काया एवं चौरासी लाख जीवयोनियों के जीव हैं। ये सभी सुयोग हैं तो उनके प्रति हम क्षमा का भाव रखें। जिस तरह चंडकौशिक का विष निष्प्रभाव हो गया था, वैसे हम भी अपने क्रोध रूपी, वैर रूपी विष को क्षमा रूपी शस्त्र से, क्षमा रूपी अमृत से निष्प्रभावित करें। सांवात्सरिक क्षमायाचना को मात्र औपचारिकता न बनाकर वास्तविकता बनाएँ। सभी जीवों के प्रति वैर को भुलाकर वास्तविक क्षमा को प्रकट करें तो हमारा सांवात्सरिक पर्व मनाना सार्थक होकर हमें मोक्ष के निकट अवश्य पहुँचा सकता है।

विगत वर्षभर में श्रमणोपासक के माध्यम से मेरे द्वारा हुई भूलों के लिए सभी सुधी पाठकों, लेखकों एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सभी सहयोगियों से क्षमायाचना का भाव रखती हूँ।

-सह-संपादिका

राजर्षि नमि की माता मयणरेहा (मदनरेखा) का वृत्तांत आप यदि जानेंगे तो आपको विदित होगा कि आप अपने कुटुंबियों के प्रति सज्जनता का व्यवहार करते हैं या दुर्जनता का ?

राजर्षि नमि की माता अत्यंत सुंदरी थी। जैसा उसका नाम था वैसा ही उसका सौंदर्य था। मयणरेहा या मदनरेखा उसका नाम था। वह युगबाहु की पत्नी थी। युगबाहु के एक बड़े भाई थे, जिनका नाम राजा मणिरथ था। एक दिन मणिरथ ने मदनरेखा को देख लिया और देखते ही वह उस पर मुग्ध हो गया। उसके हृदय में पाप-वासना जाग उठी। उसने मदनरेखा को अपनी पत्नी बनाने का निश्चय कर लिया।

यद्यपि मणिरथ ने अपने कुत्सित मन की सिद्धि के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया, पर मदनरेखा के हृदय में लेश मात्र भी पाप का संचार नहीं हुआ। वह बचपन से ही धर्म-ध्यान व प्रभु स्मरण में परायण थी। मदनरेखा की इस दृढ़ता से मणिरथ कुछ-कुछ निराश हुआ।

अंत में उसने विचार किया कि मदनरेखा जब तक युगबाहु के पास रहेगी, तब तक हाथ न आएगी। किसी भी प्रकार युगबाहु को उससे अलग करना चाहिए।

इस प्रकार विचार करके मणिरथ ने दौरे पर जाने का ढोंग रचा। युगबाहु ने भाई से दौरे पर जाने का कारण पूछा तो मणिरथ ने कहा—“राज्य की सीमा पर कुछ उपद्रवियों ने उत्पात मचा रखा है। उनका दमन करने के लिए मेरा जाना आवश्यक है।” युगबाहु बोला—“उपद्रवियों का दमन करने के लिए मेरे रहते आपका जाना ठीक नहीं है। जब तक मैं जीवित हूँ, आपको नहीं जाने दूँगा। अतएव कृपा कर मुझे जाने की आज्ञा दीजिए। यदि मैं उसका दमन न कर सका तो फिर भविष्य में मुझे कौन गिनेगा ?”

बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा। मणिरथ जो चाहता था वही हुआ। फिर भी उसने ऊपरी मन से युगबाहु को घर रहने के लिए कहा और अंत में उसे विदा कर दिया।



युगबाहु के चले जाने पर मणिरथ ने उत्तमोत्तम वस्त्र, आभूषण, सुगंध की वस्तुएँ और खाने-पीने के अनेक स्वादिष्ट पदार्थ एक दूती के साथ मदनरेखा के पास भेजे। दूती ने मणिरथ की भेजी हुई सब विलास-सामग्री मदनरेखा को भेंट की। उस समय मदनरेखा ने कहा—“जिस नारी का पति परदेश गया हो, उसे विलास सामग्री की क्या आवश्यकता है? उसे तो उदास भाव से धर्म की आराधना करते हुए समय-यापन करना चाहिए। मुझे इन वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है। जाओ, इन्हें वापस ले जाओ।”

मित्रो! अधिकांश स्त्रियों को पतित बनाने वाली ये ही वस्तुएँ हैं। स्त्रियाँ यदि पौद्गलिक शृंगार की लालसा पर विजय प्राप्त कर सकें, गहना, कपड़ा व खान-पान की वस्तुओं पर न ललचावें, इनसे ममत्व हटा लें तो किसकी शक्ति है, जो परस्त्री की ओर बुरी नजर से देख सके!

मदनरेखा ने कहा कि जिसका पति परदेश में हो, उसे विलास-सामग्री से क्या प्रयोजन है!



मदनरेखा ने मणिरथ के भेजे हुए वस्त्राभूषण लाने वाली दूती को फटकार लगाई और वापस ले जाने को कहा। दूती ने धृष्टता के साथ कहा—“राजा आपको चाहते हैं। इन गहनों-कपड़ों की बात ही क्या है, वे स्वयं आपके अधीन होने वाले हैं। ये वस्त्र व आभूषण तो अपनी हार्दिक-कामना प्रकट करने के लिए ही उन्होंने भेजे हैं।”

दूती की निर्लज्जतापूर्ण बात सुनते ही मदनरेखा का अंग-अंग क्रोध से जल उठा। उसने अपनी दासी से अपनी खड्ग मँगवाई और दूती को उसकी धृष्टता का मजा चखा देने का विचार किया।

मदनरेखा की भयंकर आकृति देखकर दूती सिर से पैर तक काँप उठी। उसकी प्रचंड मुखमुद्रा देख दूती के चेहरे की हवाइयाँ उड़ने लगीं। **मदनरेखा** ने उससे कहा—“जा, काला मुँह कर, अपने राजा से कह देना कि वह सिंहनी पर हाथ डालने की खतरनाक व निष्फल चेष्टा न करे, अन्यथा धन-परिवार सहित उसका समूल नाश हो जाएगा।”

दूती अपनी जान बचाकर भागी। उसने मणिरथ से आद्योपांत सारा वृत्तांत कह सुनाया। मणिरथ ने सोचा, ऐसी वीरांगना स्त्री तो मेरे ही योग्य है।

### ‘विनाशकाले विपरीत बुद्धिः’

एक दिन आधी रात के समय स्वयं मणिरथ मदनरेखा के महल में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने द्वार खटखटाया। मदनरेखा सारा रहस्य समझ गई। उसने किवाड़ खोले बिना ही राजा को फटकारते हुए कहा—“इस समय तेरा यहाँ क्या प्रयोजन है? जा, इसी समय चला जा यहाँ से।”

**राजा**—“मदनरेखा! बिना प्रयोजन कौन किसके यहाँ आता है! मैं अपना मन तुम्हें समर्पित कर चुका हूँ। यह तन और बचा है, इसी को तुम्हारे चरणों में अर्पित करने के लिए आया हूँ। मदनरेखा! मेरी भेंट स्वीकार करो। इस तन के साथ ही यह विशाल राज्य भी तुम्हें सौंप दिया जाएगा।”

**मदनरेखा**—“राजा! काम की अग्नि को अगर सहन नहीं कर सकते तो चिता की अग्नि को अपना शरीर समर्पित कर दो। अपनी कामाग्नि से सती-साध्वी पतिव्रता नारी के धर्म को आग न लगाओ। उस आग में नीति को भस्म न करो। अपने भविष्य को नष्ट होने से बचाओ। पतित

पुरुष! अपने छोटे भाई की पत्नी पर तू कुत्सित दृष्टि डालता है। मैं नारी होकर तुझे दुत्कारती हूँ और तू मेरे पैरों में पड़ता है। कहाँ है तेरा पुरुषत्व? जो काम के अधीन होकर स्त्री के सामने दीनता दिखलाता है, वह पुरुष नहीं, हिजड़ा है। तू स्त्री व नपुंसक से भी गया-बीता है। अपना भला चाहता है तो अभी इसी क्षण यहाँ से चलता बन, वरना तुझे अपनी करतूत का अभी मजा चखाया जाएगा।”

मदनरेखा ने मणिरथ को जब इस प्रकार फटकार लगाई तो वह अपना-सा मुँह लेकर लौट आया। फिर भी उसे सदबुद्धि न आई। उसने सोचा—“जब तक युगबाहु जीवित रहेगा, तब तक यह स्त्रीरत्न हाथ न लगेगा। किसी प्रकार इस काँटे को निकाल फेंकना चाहिए।”

इस प्रकार मणिरथ का पाप बढ़ता चला गया, लेकिन पापी का पाप बढ़ने से ज्ञानीजन घबराते नहीं हैं। ज्ञानीजन सोचते हैं कि पाप की वृद्धि होने से ही आत्मीय शक्ति अर्थात् धर्म का बल प्रकाश में आता है। अधर्म की वृद्धि से धर्मों में नया जीवन आता रहता है। पाप के बढ़ने से ज्ञानियों की महिमा बढ़ती है। ज्यों-ज्यों मणिरथ का पाप बढ़ने लगा, त्यों-त्यों मदनरेखा के जीवन की शुद्धि बढ़ने लगी।

अगर भारत दुःखी न होता तो गाँधी जी की महिमा न बढ़ती। अतएव पाप की वृद्धि होने पर घबराना नहीं चाहिए। पाप के प्रतिकार का प्रकृति में एक बड़ा नियम है। इसी नियम के अनुसार मणिरथ पाप के मार्ग पर आगे बढ़ता गया और मदनरेखा पवित्रता की ओर अग्रसर होती गई।

युगबाहु विद्रोहियों को दबाकर लौट आया। मणिरथ ने ऊपर से खूब प्रसन्नता प्रकट की। मदनरेखा को भी अत्यंत प्रसन्नता हुई। उसने सोचा—“पति आ गए, अब किसी प्रकार का भय नहीं रहा।” लेकिन मदनरेखा ने दुर्व्यवहार के विषय में कुछ न कहा।

मदनरेखा की यह गंभीरता प्रशंसनीय है। उसकी वीरता ऐसी है कि राजा को बुरी तरह फटकार सकती है और गंभीरता इतनी है कि ऐसी बड़ी घटना के विषय में भी वह अपने पति से एक शब्द नहीं कहती। कुलीन स्त्रियाँ जहाँ तक संभव होता है, भाई-भाई में विरोध उत्पन्न नहीं होने देती। यही नहीं, वरन् किसी अन्य कारण से उत्पन्न हुए

विरोध को भी शांत करने का प्रयत्न करती है। मदनरेखा प्रथम तो स्वयं वीरांगना थी, उसे अपनी शक्ति पर भरोसा था। दूसरे उसने सोचा कि पति के आ जाने से दुष्ट राजा रास्ते पर स्वयं आ जाएगा, अतएव अब पारस्परिक कलह जगाने से क्या लाभ है? यही सोचकर उसने पिछली घटना के विषय में युगबाहु से एक शब्द भी न कहा।

एक बार राजा मणिरथ वसंतोत्सव मनाने के लिए वन में गया। युगबाहु भी वसंतोत्सव के अर्थ वन को चला। **मदनरेखा** ने सोचा—“पति अकेले वसंतोत्सव मनाने जाएँगे तो उन्हें उत्सव फीका लगेगा। उनका साथ छोड़ना उचित नहीं है।” यह सोचकर वह युगबाहु के साथ हो ली। वन में पहुँचकर युगबाहु ने वह रात्रि वन में ही व्यतीत करने का निश्चय किया। उसने मदनरेखा को भी अपना निश्चय कह सुनाया। **मदनरेखा** बोली—“नाथ! मैं आपके आनंद में विघ्न डालना नहीं चाहती। पर यह कह देना आवश्यक समझती हूँ कि वन में अनेक आपत्तियों की आशंका रहती है। अतएव वन में रात्रि के समय रहना उचित नहीं है।” **युगबाहु** ने कहा—“अपने साथ रक्षक मौजूद हैं। मैं स्वयं कायर नहीं हूँ। फिर डर किस बात का है?”

बाग में ही युगबाहु के डेरे-तंबू लग गए। युगबाहु व मदनरेखा रातभर वहीं रहने के विचार से ठहरे। डेरे के आस-पास पहरा लग गया।

मदनरेखा सहित युगबाहु को बाग में ठहरा देख मणिरथ ने विचार किया कि आज अच्छा अवसर है। अगर मैंने आज युगबाहु का काम तमाम कर दिया तो मदनरेखा हाथ लग जाएगी। इस प्रकार पाप-संकल्प करके मणिरथ घोड़े पर सवार होकर अकेला ही युगबाहु के डेरे पर आया। युगबाहु के पहरेदारों ने उसे अंदर घुसने से रोक दिया।

**राजा** ने कहा—“मैं राजा हूँ। युगबाहु मेरा छोटा भाई है। मुझे अंदर जाने की मनाही कैसे हो सकती है?”

**पहरेदार**—“आप महाराज हैं, यह तो ठीक है। आपकी आज्ञा सिर माथे, किंतु युवराज युगबाहु सपत्नीक ठहरे हुए हैं अतः आपका अंदर जाना ठीक नहीं है।” आखिर में एक पहरेदार ने भीतर जाकर युगबाहु से आज्ञा ली और युगबाहु ने कहा—“भाई भीतर आना

चाहते हैं तो आने दो।”

**मदनरेखा** ने कहा—“नाथ, सावधान रहिए। भाई की नजर भाई सरीखी न समझिए। वे इस समय आपकी जान के ग्राहक बनकर आ रहे हैं।”

यद्यपि मदनरेखा ने युगबाहु को सब बात भली-भाँति सुझाई, पर उसने उपेक्षा के साथ कहा—“यह तुम्हारा भ्रम है। जिस भाई ने अपने पुत्र को युवराज न बनाकर मुझे युवराज बनाया, वह मेरे प्राणों का ग्राहक क्यों होगा? अगर उनके हृदय में पाप होता तो वे मुझे युवराज क्यों बनाते?”

मदनरेखा एक ओर हट गई। मणिरथ डेरे में आ गए। युगबाहु ने मणिरथ का यथोचित अभिवादन करके पूछा—“इस समय आपने पधारने का कष्ट क्यों किया? आज्ञा दीजिए, क्या कर्तव्य है?”

**मणिरथ**—“तू शत्रुओं को जीतकर आया है, पर तेरे शत्रु अब भी तेरा पीछा कर रहे हैं। इधर तू किला छोड़कर उद्यान में आकर रह रहा है। इसी चिंता के मारे मुझे नींद नहीं आई और मैं दौड़ा चला आया।”

मणिरथ ने अपने आने के विषय में जो सफाई पेश की, वह कुछ संगत नहीं थी। युगबाहु को उसकी बात से कुछ संदेह उत्पन्न हो गया। **युगबाहु** ने तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा—“आप मुझे इतना कायर समझते हैं? क्या मैं डरपोक हूँ? यहाँ तो किला व सेना, सब समीप ही हैं। जहाँ मैं युद्ध करने गया था, वहाँ से तो से सब दूर थे। फिर भी न तो मुझे किसी प्रकार का भय हुआ और न ही आपको मेरी चिंता सवार हुई। मुझे शत्रुओं से किसी प्रकार की हानि हो सकती है, यह आपकी भ्रमपूर्ण संभावना है। ऐसे अवसर पर आपका आना और विशेषतः इस अवस्था में जब मैं सपत्नीक हूँ, नितांत अनुचित है। राजा स्वयं मर्यादा का भंग करेगा तो मर्यादा का पालन कौन कराएगा?”

**मणिरथ** के चेहरे पर मुर्दनी-सी छा गई। वह बोला—“अच्छा, जाता हूँ। मगर प्यास के मारे मेरा गला सूख रहा है, थोड़ा पानी तो पिला दे।”

सामने ही पानी रखा था। युगबाहु भाई को पानी पिलाने से कैसे इनकार करता! एक सामान्य अतिथि को

पानी पिलाने के लिए मनाही नहीं की जाती तो मणिरथ बड़ा व राजा था। उसे पानी पिलाने से युगबाहु कैसे मुकरता ?

युगबाहु पानी पिलाने के लिए तैयार हुआ। उसने जैसे ही पानी की ओर हाथ बढ़ाया, वैसे ही मणिरथ ने उस पर जहर बुझी हुई तलवार का वार कर दिया। युगबाहु जमीन पर लोट गया।

मणिरथ तत्काल घोड़े पर चढ़कर भागने को तैयार हुआ, हाथ में खून से भरी तलवार देख पहरदारों ने उसे रोक लिया। मणिरथ पहरदारों से युद्ध करने लगा और आपस में संग्राम छिड़ गया।

युगबाहु क्षत्रिय था। क्षत्रिय भाव के अनुसार घायल अवस्था में भी उसे बड़ा क्रोध हुआ। क्रोध के मारे वह इधर-उधर लोटने लगा। उसी समय मदनरेखा आ गई। उसने पति को इस अवस्था में देखा तो वह क्षणभर के लिए किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। इस समय मदनरेखा का क्या कर्तव्य है ? उसे क्या करना चाहिए ?

**अरे ओ सज्जनो! व्हाला! पियो न प्रेम का प्याला। धरी प्रभु नामनी माला, करो जीवन सफल आजे।।**

ऐसे प्रसंग पर रूदन करके जो अपना व मरने वाले का भविष्य बिगाड़े, उसके विषय में आप कहेंगे कि उसे मरने वाले से बड़ा प्रेम है। रोना-धोना ही आज प्रेम की कसौटी समझी जाती है, लेकिन यह कसौटी भ्रम है, धोखा है, ठगाई है। सच्चा प्रेम क्या है और 'सज्जनता' किसमें है, यह मदनरेखा के चरित्र से सीखना चाहिए।

मदनरेखा के जीवन में इससे अधिक अनिष्ट क्षण दूसरा कौनसा होगा ? दुष्ट मणिरथ ने उसके निरपराध पति का वध कर डाला, इससे अधिक विपदा मदनरेखा पर और क्या आ सकती है ? इतना ही नहीं, भविष्य का भय भी उसकी आँखों के आगे नाच रहा था। वह गर्भवती है। ऐसे विकट समय में वह क्या करे ?

कायर के लिए यह बड़ा भयंकर समय है, मगर मदनरेखा वीर क्षत्राणी थी। कायरता उससे कोसों दूर थी। उसने उसी समय अपना कर्तव्य स्थिर कर लिया। सोचा, पतिदेव का जीवन अधिक से अधिक दो घड़ी का है। इन दो घड़ियों का मूल्य बहुत अधिक है। इतने

समय में ही मुझे ऐसा करना है, जिससे इनकी सहधर्मिणी के नाते मैं अपना कर्तव्य निभा सकूँ।

बाहर मणिरथ व पहरदारों में होने वाले युद्ध के कारण कोलाहल मच रहा था। **मदनरेखा** दौड़कर बाहर आई और द्वार-रक्षकों से बोली—“तुम किससे युद्ध कर रहे हो ? तुम्हारे स्वामी केवल दो घड़ी के मेहमान हैं। इन दो घड़ियों में मैं स्वामी को ऐसी कुछ चीज देना चाहती हूँ, जो उनके काम आ सके। इसलिए तुम युद्ध बंद करो, जिससे कोलाहल मिटे और शांति हो। अगर तुम राजा को मार डालोगे, तब भी कोई लाभ न होगा। स्वामी जीवित नहीं हो सकते। तुम अपने स्वामी के हितचिंतक हो, पर मैं तुमसे भी अधिक उनका हित चाहती हूँ। राजा को भाग जाने दो। शांत हो जाओ।” मदनरेखा की बात सुनते ही द्वार-रक्षक शांतिपूर्वक खड़े हो गए। **राजा मणिरथ** उस समय सोचने लगा—“अब मदनरेखा मुझे चाहने लगी है। ऐसा न होता तो वह मेरी जान क्यों बचाती ? अपने पति को न रोकर मेरी रक्षा के लिए वह दौड़ी क्यों आती ?”

इस प्रकार अपने विचारों से प्रसन्न होता हुआ मणिरथ घोड़े पर सवार होकर वहाँ से भागा, लेकिन पाप का फल भोगे बिना छुटकारा कहाँ ? राजा मणिरथ के घोड़े का पैर एक साँप की पूँछ पर पड़ गया। पूँछ कुचलते ही साँप उछला और उसने मणिरथ को डस लिया। मणिरथ चल बसा और चौथे नरक का अतिथि बना।

इधर **मदनरेखा** ने देखा कि स्वामी वेदना से तड़प रहे हैं। उसने घाव पर पट्टी बाँधी और उनका सिर अपनी गोद में रखकर कहने लगी—“नाथ! आपकी इहलोक लीला दो घड़ी में समाप्त होने जा रही है। कृपा कर मेरी बात पर ध्यान दीजिए।”

**युगबाहु** ने आँख खोलकर कहा—“मदनरेखा, मुझे तुम्हारी चिंता हो रही है। तुम्हारा क्या होगा ? भाई तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करेगा ?”

**मदनरेखा** ने सोचा कि स्वामी का मोह व क्रोध यों दूर न होगा। उसने एक ऐसा मंत्र पढ़ा, जिससे करोड़ों साँपों का भी विष दूर हो सकता था। करोड़ों साँपों का

विष दूर होना उतना कठिन नहीं है, क्रोध का शांत होना कठिन है। उसने पति से कहा—“प्राणनाथ! अंतिम समय में आपका यह क्या हाल है? आप मुझ पर राग और भाई पर द्वेष धारण किए हुए हैं। यह विपरीत बात क्यों? यह खंजर जो आपके शरीर में लगा है वह आपके भाई ने नहीं, वरन् मैंने ही मारा है। आप उन पर अनावश्यक क्रोध क्यों कर रहे हैं? भाई को तो आप प्रिय ही हैं। यदि भाई आपसे प्रेम न करते तो अपने बेटे की उपेक्षा करके आपको युवराज क्यों बनाते? मेरी बात आपकी समझ में न आती हो तो आप स्वयं विचार कीजिए। अगर आप मेरे पति न होते और अगर मैं आपकी पत्नी न होती तो आपके भाई आपसे रुष्ट क्यों होते? मैं आपकी पत्नी हुई और आप मेरे पति हुए, इसी कारण उन्होंने आपके ऊपर तलवार चलाई है। भाई के साथ आपका वैर कराने वाली मैं ही हूँ। आप मेरे स्वामी हैं अतः आपको यह अवस्था भोगनी पड़ी है। मेरे स्वामी बनने का यह फल आपको इसी जन्म में भुगतना पड़ा है। अगर अंत समय में भी आपका मन मुझ में लगा रहा तो परलोक में आपकी क्या अवस्था होगी? आप अगर नरक के मेहमान बनेंगे तो आपका—मेरा फिर सम्मिलन न हो सकेगा। जब यह स्पष्ट है कि आपकी इस दशा का कारण मैं हूँ तो फिर आप भाई पर रोष और मुझ पर राग क्यों करते हैं? आप परिणामों में समता लाइए! ऐसा करने से ही आत्मा को शांति मिलेगी और अंत में शुभ गति का लाभ होगा।”

**मदनरेखा** कहती है—“इस समय आपके लिए सबसे श्रेष्ठ यही है कि आप मुझ पर राग न कीजिए और अपने भाई पर द्वेष न कीजिए। जब तलवार मारने वाले भाई पर ही द्वेष न रहेगा तो क्या किसी दूसरे पर वह रह सकेगा?”

“नहीं।”

तो फिर सब मिलकर बोलो—

**व्रामेभि ऋव्वजीवे, ऋव्वे जीवा व्रमंतु मे।  
मिन्ती मे ऋव्वभूएवु, वेवं मज्झं न केणइ।।**

**मदनरेखा** कहती है—“नाथ! यह शांति का समय है। आप सब जीवों से क्षमा की अभिलाषा कीजिए, क्षमायाचना कीजिए और सर्वप्रथम अपने भाई से ही

क्षमा माँगिए।” इस प्रकार मदनरेखा के उद्बोधन से उसके मरणासन्न पति ने राग व द्वेष का त्याग करके अपने हत्यारे भाई को हृदय से क्षमा कर दिया और फिर सब जीवों से क्षमायाचना करके शरीर छोड़ दिया।

साभार— श्री जवाहर किरणावली-17

(उदाहरण माला भाग-2) ♥♥♥♥

## संधारा व महाप्रयाण

युगनिर्माता, उत्क्रांति प्रदाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. एवं साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. को संधारे के प्रत्याख्यान करवाए गए।

जावरा (म.प्र.) में चातुर्मासार्थ विराजित **शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा.** की गंभीर अस्वस्थता को देखते हुए 9 अगस्त 2024 को प्रातः 7:55 पर रखे जाने वाले सभी आगारों सहित तिविहार संधारे के प्रत्याख्यान व दोपहर में 2:30 बजे चौविहार संधारे के प्रत्याख्यान साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा. आदि ठाणा द्वारा करवाए गए। इसी दिन रात्रि 9:40 बजे आपका संधारा सीझ गया। आपके महाप्रयाण से संपूर्ण जैन समाज में दुःख की लहर व्याप्त हो गई। आपश्रीजी की डोलयात्रा 10 अगस्त 2024 को प्रातः 9 बजे समता भवन, जवाहर पेठ, जावरा से निकाली गई।

इसी क्रम में रतलाम (म.प्र.) में चातुर्मासार्थ विराजित **साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा.** को भी 9 अगस्त 2024 को ही प्रातः 9:59 बजे चौविहार संधारे के प्रत्याख्यान शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधा जी म.सा. द्वारा करवाए गए हैं। संधारे पश्चात् धर्म-ध्यान सुनाने का क्रम अनवरत जारी है। आपश्रीजी का संधारा पूर्ण जागृत अवस्था में ज्ञान-ध्यान के साथ गतिमान है।

(विस्तृत समाचार आगामी अंक में)

# प्रवृत्ति ही क्षमा में, निवृत्ति ही क्रोध से

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

- ✦ आग्रहमुक्त : जिनवाणी
- ✦ जीवन की मणियाँ
- ✦ धैर्यता मत खोइए
- ✦ प्रतिबिंब देखो : स्वच्छता में
- ✦ सजातीय निमित्त
- ✦ मानस हंस को जागृत करो
- ✦ क्रोध बनाम संसार विस्तार
- ✦ क्रोध को हटाएँ
- ✦ क्रोध कैसे छोड़ें
- ✦ क्रोध का परिणाम : चंडकौशिक सर्प
- ✦ क्षमा का प्रभाव
- ✦ क्रोध को जीतने के उपाय

उत्कर्मण ह्ये कोहं

-दशवैकालिक सूत्र, 8/39

उपशम से क्रोध का हनन करो।

क्रोध को जीतने के लिए जीवन में क्षमा का आना आवश्यक है। जीवन को क्षमामय बनाने के लिए अंतरंग में समीक्षण की नितांत आवश्यकता है।

क्रोध, आत्मा की ही नहीं, अपितु शारीरिक व मानसिक सभी प्रकार की हानियाँ करता है। अतः इसे कैसे जीते? इसके लिए पढ़िए प्रस्तुत प्रवचन में क्रोध विषयक विशिष्ट मार्मिक विवेचन।

विमल जिम दिङ्गा लोयण आज।

भावा विज्या वांछित काज।।

बंधुओ! भव्य जीवों को ज्ञानीजन जो कुछ भी उपदेश-प्रतिबोध देते हैं, उस प्रतिबोध में 'बाबावाक्यं प्रमाणम्' की स्थिति नहीं रहती। उपदेश देते हुए कभी यह नहीं कहा जाता है कि मैं कहता हूँ सो मान लो। बल्कि यह स्पष्ट निर्देश होता है कि जो कुछ कहा जा रहा है, वह असंदिग्ध, द्रष्टा, अविद्यत, प्रवक्ता, वीतराग वाणी के अनुसार कहा जा रहा है। उस कथन पर चिंतन-मनन किया जाए तो वस्तु-सत्य स्वतः ही स्पष्ट रूप से उजागर हो जाता है, क्योंकि वीतराग-वाणी का कुछ महत्त्व ही ऐसा होता है कि वह भव्य-साधक के हृदय को छू जाती है।

आग्रहमुक्त : जिनवाणी

वीतराग वाणी में किसी भी आचरण के प्रति आग्रह-दुराग्रह नहीं होता। मध्यस्थ दृष्टि से उपदेश दे दिया जाता है। आचरण करना है या नहीं, यह सब श्रोताओं के ऊपर छोड़ दिया जाता है। उनकी इच्छा हो तो ग्रहण करें, न हो तो न करें। महाप्रभु महावीर के पास कोई व्यक्ति दीक्षा लेने की भावना से आया तो भी महाप्रभु ने कभी उससे आग्रह नहीं किया, बल्कि यही कहा— 'अहामुहं देवानुप्पिया'। हे देवानुप्रिय! तुम्हें जैसा सुख हो, वैसा करो। क्योंकि यह सत्य है कि किसी

पर दबाव डालकर यदि आचरण करवाया जाएगा तो वह आचरण स्थायित्व को प्राप्त नहीं हो सकेगा। स्वेच्छा से किया गया आचरण ही स्थायित्व को प्राप्त होता है और यथानुरूप फलवान भी होता है। महाप्रभु का मुख्य उद्देश्य लोगों को हिताहित का ज्ञान कराना रहा है। क्योंकि हित-अहित का विवेक होने पर ही हित में प्रवृत्ति और अहित से निवृत्ति हो सकती है। जब किसी बालक को यह समझा दिया जाए कि यह पॉयजन-जहर है, जिसे खाने पर तत्काल मृत्यु हो जाती है तो वह बच्चा उस जहर को खाने के लिए कतई तैयार नहीं होता। यही स्थिति भव्यात्माओं की वीतराग वाणी सुनकर होती है। उनकी भी अहित से निवृत्ति और हित में प्रवृत्ति होने लग जाती है।

### जीवन की मणियाँ

हित तत्त्वों में प्रवृत्ति भी तभी हो सकती है, जब अंतर में पैठ की जाए। जीवन की ऊँचाइयों का स्पर्श वहीं से होगा। विशालकाय बड़े-बड़े पहाड़ों की चट्टानों के बीच कहीं-कहीं चम-चम करती हुई मणियाँ भी उपलब्ध हो जाएँ, जिन्हें पाने के लिए मानव को न मालूम कितना परिश्रम करना पड़ता है। आप जानते ही हैं अत्यंत परिश्रम के बाद भी यह आवश्यक नहीं होता कि उसे मणियों की उपलब्धि हो ही जाए, फिर भी खोजी व्यक्ति अपनी खोज नहीं छोड़ता। व्यापारी व्यापार करता है, दिन-रात परिश्रम करता है, तथापि यह आवश्यक नहीं कि उसे धन की प्राप्ति हो ही जाए तो भी व्यापारी व्यापार करना नहीं छोड़ता है। जब बाहरी धन की प्राप्ति हो या न हो, व्यापारी व्यापार करना नहीं छोड़ता है, जब बाहरी धन को प्राप्त करने के लिए भी इतने परिश्रम करने की आवश्यकता होती है तो बंधुओ! जरा विचार करिए कि जीवन की मणियाँ, अंतरंग की चमक-दमक को पाने के लिए कितने परिश्रम की आवश्यकता होगी? जरा अपनी मानसिक शक्ति को बाहरी प्रवृत्तियों से हटाकर अंतरंग की ओर नियोजित करने का प्रयास करें।

### धैर्यता मत खोइए

अंतरंग की खोज यद्यपि बहुत रूक्ष विषय है, किंतु जब रूक्ष विषय से भी तत्त्व मिलने वाला होता है तो समझदार मानव उसे छोड़ता नहीं है।

बंजर भूमि पर भी कृषक अपना परिश्रम नहीं छोड़ता है, उसे खोद-खोदकर कंकर-पत्थर बाहर निकालकर उसे सरस व उपजाऊ बना देता है और उसमें समय पर बीज बो देता है तथा अत्यंत परिश्रम के साथ उसका सिंचन-संरक्षण करने लगता है। अब उसका परिश्रम चमत्कार दिखाता है और वह बंजर भूमि अत्यधिक फसल से लहलहा उठती है। यह है परिश्रम व धैर्य का फल। ठीक उसी प्रकार आज के मानवों के अंतरंग का जीवन भी बंजर हो चुका है। वह काम-क्रोध, मद-मोह, विषय-कषाय आदि कंकर-पत्थरों से भरा पड़ा है। जब तक इस बंजरता को दूर नहीं किया जाएगा, तब तक उनमें धर्म का बीज बोया नहीं जा सकेगा। इसके लिए कठिन परिश्रम करना ही होगा। अविचल विश्वास व अटल धैर्य के साथ परिश्रम किया जाए तो अंतरंग जीवन में भी शांति की वह फसल लहलहा सकती है। आवश्यकता है धैर्य के साथ सत्यपुरुषार्थ करने की।

### प्रतिबिंब देखो : स्वच्छता में

जीवन में अंतरंग की बंजर भूमि को सरस बनाने के लिए सत्पुरुषार्थ की आवश्यकता है। वह सत्पुरुषार्थ आत्मा को निर्मल बनाने वाला बनता है। निर्मल वस्तु का ध्यान करने से व्यक्ति निर्मल बनता है और मलिन वस्तु का चिंतन करने से व्यक्ति की मानसिक भूमिका भी मलिन बन जाती है। मनुष्य कीचड़ के सामने खड़ा होता है तो उसका प्रतिबिंब कीचड़ से सना प्रतीत होता है और स्वच्छ पानी के सामने खड़ा होता है तो उसका प्रतिबिंब स्वच्छ रूप में उभरने लगता है। ठीक इसी प्रकार निर्मल गुणों के स्वामी तीर्थंकर देव के जीवन को सामने रखने पर स्वयं के जीवन में भी पवित्रता का प्रतिबिंब पड़ता है। आत्मा में जो गुण मलिनता को प्राप्त

है, कर्मों के उदय से जो अशुद्ध बन चुके हैं, जिन्हें विकारी भाव की दशा भी कहा जा सकता है। वैभाविक रूप या राग-द्वेष, काम-क्रोध की परिणति भी कहा जा सकता है, उन काम-क्रोधादि के प्रभाव से आत्मा के निर्मल गुण भी मलिन बन जाते हैं। जैसे कि चमकदार रत्न मिट्टी से लिप्त होकर मलिन हो जाता है, वैसे ही आत्मा भी कर्म रूपी मिट्टी से मलिन हो जाती है।

तीर्थकरों ने जब पवित्र स्वरूप को प्राप्त किया तो उनकी आत्मा पर रहा कर्म का मलिन रूप दूर हटता चला गया। अतः ऐसे पवित्र महाप्रभु की स्तुति करते हुए जीवन के भीतर प्रवेश किया जाए तो स्वयं का जीवन भी पवित्र बन जाता है, क्योंकि निर्मल वस्तु का ध्यान करने से व्यक्ति स्वयं भी निर्मल बन जाता है।

### सजातीय निमित्त

निमित्त जरूर चाहिए, निमित्त से व्यक्ति जल्दी ऊपर आता है। परंतु निमित्त भी ऐसा हो, जो गुणों को बाहर प्रकट करने वाला सजातीय हो, विजातीय निमित्त नहीं। सजातीय का मतलब यह है कि जिस जाति में भगवान ने शुद्ध स्वरूप को प्राप्त किया है, वैसी ही शुद्ध जाति सजातीय है। क्योंकि स्वजाति का व्यक्ति स्वजाति के व्यक्ति को जल्दी आकर्षित कर लेता है। शायद इसका कभी आप लोगों ने अनुभव किया हो। हम संतों को तो प्रायः इसका अनुभव होता रहता है। उदाहरण के रूप में जब विहार के प्रसंग से हम एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहे थे, इस बीच जंगल में हमें देखने को मिला कि एक तीतर पकड़ने वाला व्यक्ति जंगल में आया हुआ था। उसके पास पाला हुआ एक तीतर पहले से ही था। उस व्यक्ति ने उस तीतर को झाड़ियों के बीच में छोड़ दिया। अब वह तीतर जोर-जोर से आवाज लगाने लगा। अपने स्वजातीय तीतर की आवाज सुनकर अनेक तीतर जो झाड़ियों में छिपे हुए थे, बाहर आने लगे और वहाँ एकत्रित होने लगे, जिससे उस तीतर पकड़ने वाले ने सुगमता से उन्हें पकड़ लिया। तीतर पकड़ने के लिए अधिकतर लोग

ऐसा करते हैं क्योंकि बिना तीतर की आवाज के अन्य तीतर झाड़ियों से निकलकर बाहर नहीं आते हैं।

तीतरों की तरह ही मनुष्य का जीवन भी एक ऐसा सजातीय जीवन है, जिससे परमात्म स्वरूप की प्राप्ति हो सकती है। मनुष्य जीवन में रहने वाली आत्मा के चारों ओर भी कर्मों की ऐसी झाड़ियाँ हैं कि उनके बीच में यह आत्मा अपने निर्मल स्वरूप में होकर भी उसमें उलझी हुई है। ऐसी इस आत्मा को बाहरी तत्त्वों में आप बुलाना चाहें तो वह आ नहीं सकती। आत्मा की जाति का शुद्ध स्वरूप परमात्मा ही है। जब आत्मा, परमात्मा के निर्मल गुणों को याद करती है, तब उस आत्मा का परमात्म स्वरूप निखरने लगता है और वह कर्मों की झाड़ियों से हटती हुई अपने परिपूर्ण स्वरूप को निखरने में समर्थ हो जाती है।

### मानस हंस को जागृत करो

कवि ने भगवान को संबोधित करते हुए कहा— **‘मुनिजन् मानस हंस !’** भगवन्! आप गुणीजनों के निर्मल मन रूप सरोवर के हंस हो। वह हंस सरोवर के किनारे बैठता है, जहाँ उसे मोती मिलते हैं। वैसे ही भगवान रूपी हंस भी जिस व्यक्ति के मन सरोवर में गुण रूपी मोती बिखरे होते हैं, वहीं जाकर बैठते हैं। भगवान कोई सिद्ध लोक से चलकर नहीं आते, अपितु ज्यों-ज्यों हमारे गुणों का विकास होता जाता है, त्यों-त्यों हमारी आत्मा का भगवत् स्वरूप प्रकट होने लग जाता है। इसलिए आनंदघन जी ने संकेत किया है कि तुम स्वयं अभ्यास करो, गुण ही तुम्हारे जीवन में लाभप्रद सिद्ध होंगे। यदि अपने जीवन को गुणों की तरफ आकर्षित नहीं किया तो यह आत्मा स्वस्वरूप को निखरने में समर्थ नहीं हो सकेगी। ऐसी स्थिति में अनादिकाल से संसार में भटकती आई आत्मा और भटकती रहेगी।

### क्रोध बनाम संसार विस्तार

कल मैंने कषाय विवेचन में क्रोध कषाय के विषय में कुछ बतलाया था। जब आत्मा इसका यथार्थ बोध प्राप्त कर इन्हें दूर करने का प्रयास करती है, तब वह

निरंतर वीतराग भाव की ओर बढ़ने लगती है और जो आत्मा कषाय भाव में रहती है, वह संसार को, भव-भवांतर को बढ़ाने लगती है। आचारांग सूत्र में स्पष्ट रूप से कहा है— **‘जे गुणे के मूलठाणे जे मूलठाणे के गुणे’** अर्थात् जो व्यक्ति कषायरूप मूल को सींचता है, वह संसार के मूल का सिंचन करता है। ऐसा व्यक्ति संसार-सागर में डूब जाता है। जैसे काजल की डिब्बी में काजल ठसाठस भरा हुआ है, वैसे ही कर्मवर्गणा के योग्य पुद्गल संसार में ठसाठस भरे हुए हैं। जब व्यक्ति गुस्सा करता है तो कर्मवर्गणा के पुद्गल आत्मा को मलिन बना देते हैं। जब उत्तेजना आने लगती है, तब आत्मिक स्वरूप मलिन से मलिन होता चला जाता है। क्रोध की उत्तेजना से आत्मा की कर्मों से मलिनता ही नहीं, अपितु शारीरिक हानियाँ भी होती हैं। इससे ब्लड प्रेशर, लकवा, हार्ट-फेल तथा ब्रेन हेमरेज भी हो जाते हैं।

### क्रोध को हटाएँ

क्रोध की इन हानियों को जानते हुए क्रोध को दूर करने का प्रयास करें। यद्यपि शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो जो अपनी ही हानि करना चाहे, तथापि क्रोध में बेभान होकर वे अपनी हानि करते रहते हैं, ऐसी स्थिति में उन्हें होने वाली स्वयं की हानियाँ जान लेना आवश्यक है, जो कि मैं बतला चुका हूँ। जरा आप ध्यान दीजिए कि जब किसी को क्रोध आता है, तब क्रोध का प्रभाव सबसे पहले शरीर पर दिखलाई देता है। तभी सामने वाला व्यक्ति उसे देखकर जान लेता है कि इसे क्रोध आ रहा है। जिस व्यक्ति को क्रोध नहीं आता है, उसका चेहरा सौम्य रहता है। उसके सौम्य चेहरे को देखकर सामने वाला व्यक्ति यह सहज ही अनुमान लगा लेता है कि इन्हें क्रोध नहीं आता है। यदि अपना चेहरा सदा सौम्य बनाए रखना है तो क्रोध का त्याग कर देना चाहिए।

### क्रोध को कैसे छोड़ें?

कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति क्रोध को छोड़ना चाहते हुए भी छोड़ नहीं पाता है। बहुत चाहता है कि

क्रोध न करूँ, लेकिन जब सामने ऐसी कोई परिस्थिति है तो वह क्रोध कर बैठता है। उस समय सब कुछ भूल जाता है। ऐसी परिस्थिति में क्रोध का छूटना संभव नहीं लगता, किंतु ऐसी बात नहीं है। जब क्रोध छोड़ने की भावना दिल की गहराई से जागती है तो उस दिन क्रोध छूट ही जाता है। यदि आपको क्रोध आता है तो आप किसी को क्रोध में बेभान होकर कुछ भी बोल देते हैं। आप यह निर्णय लीजिए कि जिस पर मुझे क्रोध आएगा, मैं उससे माफी माँग लूँगा। यदि आप अपने अभिमानवश इतना साहस न कर सकें तो उस दिन आपकी सर्वाधिक प्रिय वस्तु को खाना छोड़ दीजिए। जैसे किसी को चाय अधिक प्रिय होती है, उसे पिए बिना काम नहीं चलता तो उस दिन के लिए चाय छोड़ दीजिए। जब-जब भी क्रोध आए चाय पीना छोड़ दें। तो स्वतः ही क्रोध शांत हो जाएगा। यह एक प्रक्रिया है, क्रोध छोड़ने की। प्रबुद्ध व्यक्ति क्रोध से होने वाली हानियाँ और क्षमा से होने वाले लाभ को समझकर ही क्रोध को छोड़कर क्षमा धारण कर लेते हैं। क्रोध नहीं करने पर शरीर की पवित्रता, बुद्धि की स्वच्छता और जो सारभूत तत्त्व हैं उनको पोषण मिलता है। क्रोध करने पर वे सारभूत तत्त्व विष में परिणत हो जाते हैं।

### क्रोध का परिणाम : चंडकौशिक सर्प

आप जानते ही होंगे— चंडकौशिक का जीव पूर्वभ्रम में साधु रूप में था। साधना पथ पर चल रहा था, किंतु शिष्य के द्वारा बार-बार छोड़ने पर उसे गुस्सा आ गया और गुस्से में मृत्यु होने से उसका परिणाम आगे चलकर चंडकौशिक सर्प के रूप में उभरकर आया। चंडकौशिक सर्प का विकराल रूप क्रोध की भयंकरता को बतला रहा था, जिसकी फुँकार मात्र से चरिंदे व परिंदे भी काँपने लगे थे। पूरा जंगल साँय-साँय करने लगा था। मीलों तक आवागमन बंद हो चुका था। चंडकौशिक का नाम सुनने मात्र से लोगों के मन में कँपकँपी-सी छूटने लगती थी।

ऐसे चंडकौशिक सर्प को भी महाप्रभु ने अपने तेज के प्रभाव से शांत बना दिया था।



एक क्रोधी को भी पूर्ण क्षमाशील बना देना किसी जादुई चमत्कार से कम नहीं था। यह जादू था – प्रभु महावीर के शांत-प्रशांत जीवन का। जादू से तात्पर्य कोई मंत्र-तंत्रों के प्रयोग से नहीं है, अपितु महाप्रभु के क्षमाशील जीवन से है।

## क्षमा का प्रभाव

जब महाप्रभु का विचरण छद्मावस्था में हो रहा था, उस समय गौशालक नामक एक व्यक्ति उनके साथ हो गया और महाप्रभु से कहने लगा—“भगवन्! मैं आपका शिष्य बनूँगा।” यह कहता हुआ वह भगवान के साथ ही रहने लगा। एक बार वन विहार करते हुए प्रभु महावीर पधार रहे थे। उस समय महाप्रभु के विहार मार्ग पर वैश्यायन बाल तपस्वी साधना कर रहा था। वैश्यायन बाल तपस्वी के सिर से जुएँ निकल-निकलकर जमीन पर गिर रही थीं। सूर्य के तेज से जुएँ मर न जाए, इसलिए बाल तपस्वी उन्हें उठा-उठाकर पुनः सिर पर रख रहा था।

महाप्रभु तो युगप्रमाण भूमि को देखते हुए अपनी गति से आगे बढ़ गए, किंतु महाप्रभु के पीछे आ रहे गौशालक से यह दृश्य देखा नहीं गया और वह बोल उठा—“ए जुँओं के शय्यातर!” लेकिन बाल तपस्वी ने गौशालक की बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। तब गौशालक ने दो तीन बार इस वाक्य को दोहराया। बार-बार के इस कथन से बाल तपस्वी क्रोधित हो गया और उसने गौशालक को खत्म करने के लिए उस पर तेजोलेश्या का प्रयोग किया। इस प्रयोग से गौशालक बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगा। महाप्रभु ने पीछे मुड़कर गौशालक को तेजोलेश्या से जलते देखा तो उन्होंने शीतल लेश्या से तेजोलेश्या को लौटाकर गौशालक की रक्षा की। महाप्रभु ने अपनी अप्रमत्त साधना के बीच अनुकंपा का यह महान कार्य कर जनता के समक्ष एक आदर्श उपस्थित किया था। महाप्रभु की इस क्षमा साधना का ही यह प्रभाव था कि उनमें तेजोअग्नि को

प्रशमित करने की शक्ति भी जागृत थी। जितना-जितना अंतर में क्षमा का विस्तार होता जाता है, उतनी-उतनी शक्ति का अर्जन होता जाता है। जो शक्ति महाप्रभु को प्राप्त थी, ऐसी ही शक्ति भव्य मानवों को प्राप्त हो सकती है। आवश्यकता है क्रोध से हटकर क्षमा को जीवन में अपनाने की।

## क्रोध को जीतने के कुछ उपाय

आप प्रातःकाल जब ब्रह्म मुहूर्त में उठें, तब यह दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि मैं गुस्सा-क्रोध नहीं करूँगा। चाहे कैसी भी परिस्थिति आए, क्षमा भाव से विचलित नहीं होऊँगा। अपने आप ही क्रोध से कहिए कि क्रोध तुम रुक क्यों नहीं जाते? तुम्हारा आना मेरी आत्मा के लिए हितकर नहीं है। इस चिंतन के साथ ही क्रोध का समीक्षण करो। यह समीक्षण इन चर्मचक्षुओं से नहीं हो सकता। इसके लिए अंतर्चक्षुओं की आवश्यकता है। जब अंतर्चक्षु में आप क्रोध का समीक्षण करने लगेंगे तो क्रोध दूर भागता हुआ नजर आएगा। शास्त्रकारों ने भी कहा है—‘**उत्कमेण हणे कोहं**’, उपशम से क्रोध को शमित करो। यह उपशम भी समीक्षण से ही होगा। जिस प्रकार पूर्व दिशा में सूर्य उदित होता है और अंधकार भागता चला जाता है, उसी प्रकार क्रोध समीक्षण का तेज ज्यों-ज्यों अंतरंग में फैलता चला जाता है, त्यों-त्यों क्रोध का अंधकार समाप्त होता चला जाता है।

क्रोध को समाप्त करने के लिए इससे भी सरल उपाय है कि जब भी क्रोध आए, उस समय तुरंत आप मुँह में गर्म या धोवन पानी रख लें। उस पानी को न तो पेट में उतारें और न ही बाहर फेंके। जब आपका क्रोध समाप्त हो जाए तब उसका जो भी करना चाहें, स्वतंत्र हैं। यह तो बच्चों व सामान्य व्यक्तियों के लिए उपाय है। परंतु जो समझदार व्यक्ति हैं, वे तो क्रोध की हानि और क्षमा के गुणों को जानकर स्वतः ही विवेक से क्रोध के दुर्गुणों से मुक्त हो सकते हैं। जब बुद्धिमान व्यक्ति यह समझ लेता है कि इस वस्तु में जहर है तो वह उस

वस्तु को किसी भी कीमत पर खाने के लिए तैयार नहीं होता, क्योंकि वह यह अच्छी तरह से जानता है कि इसके खाने से निश्चित ही मेरी मृत्यु हो जाएगी। क्रोध भी एक प्रकार का जहर ही है, जिसके लिए वैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोग कर दिखाए हैं। उनकी व्याख्या मैं पूर्व में ही कर चुका हूँ। ऐसे क्रोध रूपी जहर से बुद्धिमान व्यक्ति को सदा मुक्त रहना चाहिए।

क्रोध वह घातक शस्त्र है, जिसका प्रहार हमारी शारीरिक, मानसिक व कायिक सभी परिस्थितियों पर होता है। क्रोधी व्यक्ति कभी भी शांति की अनुभूति नहीं कर सकता। ऐसे घातक प्रहार से अपने आपको बचाना है। भक्त भगवान से यही प्रार्थना करता है कि—

क्रोध निकट नहीं आने देऊँ,  
सच्चा भगत बन जाऊँ,  
भगवान तुम्हारा अब मैं।  
क्रोध निकट नहीं आने देऊँ,  
क्षेत्र अचूक क्षमा का लेऊँ।  
दूब ही मात्र भगाऊँ,  
भगवान तुम्हारा अब मैं...।।

हम भी अपने भीतर विद्यमान परमात्म-शक्ति को जागृत करने के लिए परम प्रभु से प्रार्थना करें और सत्पुरुषार्थ के बल से क्रोध को हटाने का प्रयास करें तो एक न एक दिन हमारी आत्मा भी परमात्मा के समान हो सकेगी।

साभार— नानेशवाणी-8 (परदे के उस पार) ❀❀❀

भक्ति रस

## संयम पथ पर बढ़े चलेंगे

—बाबूलाल सेठिया, रतलाम

ज्ञान, ध्यान, तप आराधन से, संयम पथ के फूल खिले।  
दृढ़ मनोबल से राम गुरु, संयम पथ के 50वें वर्ष की ओर बढ़े चले।।

जहाँ ज्ञान, दर्शन, चारित्र के साथ, सम्यक् दर्शन को प्राप्त किया।

आगमवाणी से आलोकित कर, राम गुरु ने जीवन उन्नत किया।।

समता, सेवा और साधना के ज्योतिर्मय दीप जलाए।

दृढ़ मनोबल से राम गुरु, संयम पथ के 50वें वर्ष की ओर बढ़े चले।।1।।

संयम पथ सबके लिए उत्कृष्ट, बुद्धि, बुद्धिवाद से अनुत्तर।

आत्मवाद का उद्घोषक, संघवाद को लगता सुखकर।।

इस पथ पर राम गुरु के, सारे उद्देश्य फले-फूले।

दृढ़ मनोबल से राम गुरु, संयम-पथ के 50वें वर्ष की ओर बढ़े चले।।2।।

श्री साधुमार्गी जैन संघ के नवम् पट्टधर।

अपनी अनुपम यशगाथा से, दीक्षा-दानेश्वर ने संघ में किया कमाल।।

दीक्षाओं के अनुपम फूल खिले, खिल रहे और खिलेंगे।

दृढ़ मनोबल से राम गुरु, संयम-पथ के 50वें वर्ष की ओर बढ़े चले।।3।।

आचार्य श्री रामेश साधुमार्गी संघ के शिरोमणि सरताज।

कीर्तिवंत करुणानिधि भगवंत, देते सबको सच्चा ज्ञान।।

महत्तम महोत्सव वर्ष में हम सब करते, आपके उज्ज्वल, स्वस्थ दीर्घायु जीवन की कामना।

दृढ़ मनोबल से राम गुरु, संयम-पथ के 50वें वर्ष की ओर बढ़े चले।।4।। ❀❀❀

ॐ

धर्मदेशना

# पर्युपासना का स्वरूप

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

प्रभु महावीर ने भव्य आत्माओं को संबोधित करते हुए दशवैकालिक सूत्र में कहा है- कल्याण मार्ग को भी सुनो और पाप मार्ग को भी सुनो—

**‘क्रीच्चा जाणइ कल्लाणं, क्रीच्चा जाणइ पावमं’**

क्योंकि सुनने से ही कल्याण मार्ग का ज्ञान हो सकता है और सुनने से ही पाप मार्ग का ज्ञान हो सकता है। इसलिए यदि कल्याण व पाप मार्गों को जानना है तो सुनना होगा। जरा विचार करें कि उन्होंने यह क्यों नहीं कहा कि अध्ययन करना होगा। यह निर्देश क्यों नहीं दिया कि ग्रंथों का, आगमों का अध्ययन करो, अध्ययन करने से कल्याण मार्ग व पाप मार्ग को जान पाओगे। इस शंका का समाधान हमें ढूँढ़ना होगा।

भगवान ने स्वाध्याय करने की बात कही है। स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होना भी कहा है, पर कल्याण मार्ग, पाप मार्ग के लिए सुनने की बात कही। इसमें बहुत गहरा विज्ञान छुपा हुआ है। इस पर हमें गहनता से विचार करना होगा, क्योंकि ऊपर-ऊपर से ही अर्थ लगा लेने से अथवा गाथाओं का कोई अर्थ लगा

लेने मात्र से हम कथन के मर्म तक नहीं पहुँच पाएँगे।

भगवान जब सुनने की बात कह रहे हैं तो स्पष्ट है कि सुने बिना कल्याण मार्ग, पाप मार्ग को नहीं जाना जा सकता। आगमों में, ग्रंथों में बहुत कुछ भरा हुआ है। उनका जब आलोड़न करते हैं और गहराई से विचार करते हैं तो हमें वहाँ कुछ संकेत मिलते हैं। इस प्रकार स्वाध्याय के पाँच भेद - वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा व धर्मकथा कहे गए हैं। इन भेदों के रहस्यों को समझना भी आवश्यक है। वाचना का तात्पर्य यह नहीं कि किताब उठाकर बाँच लें अथवा उठाकर देख लें। वहाँ कहा है— **‘जंबू जाव पज्जुवाक्कमाणे !’** सुधर्मा स्वामी की पर्युपासना करते हुए जंबू स्वामी कहते हैं— अमुक अंग का यह भाव है तो आगे आने वाले इस आगम का प्रभु महावीर ने क्या कथन किया, यह गुरु की उपासना करते हुए जाना जाता है। हम बहुत कुछ सुनते हैं, पर वह सब सार्थक नहीं होता। सुनने के लिए कहा है— **‘वक्खे मुक्कुले निच्चं’**, गुरु के समीप रहें, समीप वास करें। समीप वास का क्या तात्पर्य? गुरु यहाँ है तो

पास में बैठे रहें ताकि आने-जाने वाले देखें और यही समझें कि यह शिष्य गुरु के पास रहता है, गुरु को छोड़कर रहने वाला नहीं है। जो शिष्य इस भावना से बैठेगा, वह क्या पाएगा? यदि ज्ञान के दरवाजे-खिड़की बंद करके बैठा है सिर्फ इसलिए कि आने-जाने वाले देखें तो समझ लीजिए कि वहाँ पाने के द्वार बंद है। जंबू स्वामी, सुधर्मा स्वामी के इर्द-गिर्द ही नहीं रहते थे, किंतु पर्युपासना करते थे। पर्युपासना के अर्थ को समझना भी आवश्यक है।

**पर्युपासना** से तात्पर्य है- गुरु की आत्मा के निकट अपना वास बनाना। गुरु की आत्मा के साथ अपनी आत्मा को जोड़ना, यह है पर्युपासना। 'परि' उपसर्ग है उसमें 'उपासना' शब्द जुड़ा है। उपासना कब होगी? गुरु के हृदय के साथ अपनी आत्मा को संयोजित करे, तब 'उप' अर्थात् नजदीक 'आसना' यानी आसन ले आना। ऐसे तो हम भौतिक आसन नजदीक ले आते हैं, पर गुरु की आत्मा के नजदीक आत्मा को लाने का भी क्या सोचा? इसका भी क्या कोई उपक्रम किया? भाष्य-टीका उठाकर देखिए, वहाँ यह नहीं कहा गया है कि गुरु के निकट आसन लगाकर बैठें। यद्यति अंतेवासी की विवेचना करते हुए कहा गया है—निकट वास करने वाला। किंतु यदि शब्द को ही पकड़कर बैठ जाएँ और कहें कि गुरु के पास रहने वाला अंतेवासी है तो यह गलत अर्थ होगा। वहाँ कहा गया है—जो ज्ञान, दर्शन, चारित्र का दान करने वाले गुरु हैं तथा जो अंधकार को दूर करने वाले हैं, ऐसे गुरु की आज्ञा-निर्देश धारण करने वाला अंतेवासी है। वह चाहे किसी भी क्षेत्र में रहने वाला हो, वह समीप ही है। स्थान की दूरी तो चल जाएगी, परंतु यदि भाव की दृष्टि से थोड़ी-सी भी दूरी हो तो काम नहीं जमेगा। हम जानते हैं कि दूध व दही के बर्तन सटाकर भी रख दिए जाएँ तो सवेरे दूध जमा हुआ नहीं मिलेगा। रातभर पास-पास पात्र रख देने से ही क्या जम जाएगा? आप जानते हैं कि ऐसा नहीं हो सकता। बहनें दूध के भीतर जावण डालकर हाथ से हिलाती हैं और उसे कुछ समय दही के संपर्क में रहने देती हैं, तभी दूध का दही जमता है। वैसे ही गुरु व शिष्य

की आत्मा तदाकार हो, तभी शिष्य की आत्मा में गुरु की आत्मा का अवतरण होता है और तब ही शिष्य की आत्मा गुरु की आत्मा में अवतरित होती है। जब दही दूध के अणु-अणु में रमता है, तब पूरे दूध का दही बना देता है। वैसे ही यदि शिष्य, गुरु का अवतरण आत्मा के प्रदेशों में कर लें तो अज्ञान व अंधकार का नाश होता है और ज्ञान-ज्योति प्रस्फुटित होती है। ज्ञान-ज्योति का प्रस्फुटन ही गुरु का अवतरण कहा गया है। अवतरण का तात्पर्य ज्ञान-ज्योति का अवतरण है। वह होगी पर्युपासना में लीन बनने पर ही। ऐसी पर्युपासना जंबू स्वामी ने की थी, यही कारण है कि जंबू स्वामी, सुधर्मा स्वामी की ज्ञान राशि को आत्मसात कर पाए और वही आज हम तक पहुँची है। यह आज हमारा सौभाग्य भी है और दुर्भाग्य भी। सौभाग्य इस रूप में कि आज गाँव-गाँव में आगम है। यह जितना प्रचलन हुआ है वह छपाई के कारण हुआ है, पर उससे ज्ञान का हास ही हुआ है। हम पर्युपासना से दूर हुए हैं, केवल ग्रंथों में मन लगा देते हैं, यह दुर्भाग्य है। मात्र किताबों से ज्ञान नहीं मिल सकता, जो उपासना से मिलता है। इसलिए सुनने का कहा है—

**'कौच्चा जाणइ कल्लाणं, कौच्चा जाणइ पावम।'**

हे भवी आत्मनो! तुम सुनो। पर सुनना क्या है? यदि कुछ भी अनर्गल सुना अथवा किसी ऐसे कुपात्र से सुन लिया, जो बिना सोचे-समझे बोलता हो, जिसकी बोलने पर लगाम नहीं हो, जिसे तौर-तरीके का ज्ञान नहीं हो, जिसने पहले जो बोला और बाद में जो बोला उसमें परस्पर संबंध नहीं हो तो उसे सुनने से कोई लाभ नहीं है, क्योंकि उससे तो कल्याण मार्ग, पाप मार्ग का ज्ञान नहीं होगा। सच्चा ज्ञान तो आप्त पुरुष को सुनने से ही प्राप्त होगा। आप्त पुरुष किसे कहा जाए? आप्त वह है जिसके वचन अविस्वादी हों। फिर प्रश्न होगा, अविस्वादी यानी क्या? अविस्वादी अर्थात् जहाँ वचनों में परस्पर टकराहट न हो। जहाँ वचनों में टकराहट होती है तो वहाँ आप्त अवस्था नहीं हो सकती। आप्त पुरुष वह है जो तत्त्वों का द्रष्टा-ज्ञाता होता है तथा अपने ज्ञान का अनुभूतिपूर्वक प्रतिपादन करता है। ऐसे आप्त पुरुष से ही कल्याण मार्ग

और पाप मार्ग का सुनना सार्थक होता है।

परिषद अथवा सुनने वाले भी नंदीसूत्र में तीन प्रकार के बताए गए हैं—(1) जाणिया (ज्ञानी) परिषद—जिसमें पहले से ही ज्ञान की ज्योति है। (2) अजाणिया परिषद—जैसे दीपक में तेल है, बाती है, पर लौ का स्पर्श नहीं हुआ। (3) दुर्विदग्ध परिषद—जिस दीप में तेल है, बाती है, लौ भी है, पर तेल में पानी मिला हुआ है। पहली परिषद में दीप जल रहा है तो प्रकाश मिलेगा। दूसरी परिषद में तेल है, बाती है, लौ नहीं है, पर संभावना है कि लौ लगी तो प्रकाश मिलेगा। तीसरी दुर्विदग्ध परिषद में दीप है, बाती है, तेल भी है, पर तेल में पानी का बहुत भाग है। ऐसे दीपक से प्रकाश तो मिलेगा, पर वह चड़चड़-चड़चड़ करता रहेगा। बाती जलती रहेगी पर लौ के प्रकाश में प्रफुल्लता नहीं रहेगी। कभी टिमटिमाएगी, कभी बुझने जैसी स्थिति में आ जाएगी। जाणिया अथवा ज्ञानी परिषद, जैसे पानी में पड़ा तेल बिंदु फैल जाता है, उसी तरह समझ जाता है। प्रभु महावीर के चरणों में गौतम स्वामी आदि पहुँचे। प्रभु ने 'उप्पमेइ वा, धुवेइ वा, विममेइ वा' त्रिपदी कही, उन्हें चौदह पूर्वों का ज्ञान हो गया।

अजाणिया परिषद जिसे ज्ञान नहीं है, पर गुरु की पर्युपासना में वह दत्तचित्त है, गुरु की आत्मा से उसने अपनी आत्मा को जोड़ लिया है। गुरु की लौ का स्पर्श होते ही उसमें ज्ञान का अवतरण हो जाएगा। तीसरी दुर्विदग्ध परिषद, गुरु का स्पर्श मिला भी, पर तेल में पानी मिला हुआ है। वह थोड़ा-सा जान लेता है, फिर गुरु के पास नहीं जाता। परंतु जो गुरु के पास ज्ञान प्राप्त करने जाता है, उनसे पूछेगा—“आज काँई विषय चाल्यो सा?” वह थोड़ा इधर से, थोड़ा उधर से सुन लेता है, पर पूरी बात जान नहीं पाता। जैसी भी आधी बात पकड़ी,

उसे ज्ञान मान लेता है और स्वयं को ज्ञानी समझने लगता है। हम जानते हैं कि 'अध जल गगरी छलकत जाय'। ऐसा शिष्य सोचता है कि वह सब जानता है, परंतु वास्तव में वह जानता नहीं। वह अपने को यों ही पंडित मानने लगता है। पंडितमानी उसे कहते हैं, जो ज्ञानी नहीं हो, पर स्वयं को ज्ञानी, पंडित मानता हो। आजकल ऐसे पंडितमानियों का जमाना है। जानता कुछ नहीं, पर बवंडर करता है कि वह बहुत कुछ जानता है। श्रुतज्ञान की वह बूँद भी नहीं जानता। वह तो राई जितना भी नहीं जानता। राई जितना भी जानता हो तो समझो बहुत जानता है, पर उतना भी नहीं जानता और कहता है—पहाड़ जितना जानता हूँ। यह स्थिति है आज के पंडितमानी की। इसलिए प्रभु ने सुनने के लिए कहा है—



जाणिया परिषद अजाणिया परिषद दुर्विदग्ध परिषद

कोंच्चा जाणइ कळ्ळाणं,  
कोंच्चा जाणइ पाठमं।  
उभयंपि जाणइ कोंच्चा,  
जं क्केयं तं क्कमायवे।।

तुम दोनों मार्गों को सुन लो और फिर मेरा दबाव नहीं है

कि साधु बनना पड़ेगा। इच्छा हो जाए तो ठीक अन्यथा 'अहाकुहं', जैसा सुख हो, वैसा करो। आचार्यदेव (स्व. आचार्य श्री नानेश) ऐसा ही करते थे। जब दीक्षार्थी तैयार होकर आ जाता था, तब प्रत्याख्यान कराने से पूर्व गुरुदेव पूछते थे—“बोल भाई! क्या इच्छा है, अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। यदि उतार-चढ़ाव हो तो अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। अभी तो माथा मुंडाया है, कपड़े ही बदले हैं, प्राण नहीं फूँके हैं।” यही प्रभु महावीर भी कहते हैं—“सुन लो, सुनकर 'जं क्केयं तं क्कमायवे'—जो अच्छा लगे, वह ग्रहण कर लो।” पर सुनने की सम्यक् क्षमता प्राप्त होगी तो गुरु की उपासना से ही। सुनने का तरीका जानना प्रमुख बात है, अन्यथा सुनना तो दुर्विदग्ध शिष्य भी करता है, किंतु गुरु की उपासना नहीं करता। गुरु की

आत्मा का अपनी आत्मा में अवतरण नहीं कराता। इधर-उधर से सुनकर उन बातों को अपने दिमाग में फिट कर लेता है। गुरुदेव की भाषा में—“सॉठ का गाँठिया एवं थोड़ी-सी चीजें लेकर बैठ गया और सोचे में बड़ा दुकानदार हूँ” पर समझना यह है कि क्या बने हो। तोलो, भीतर देखो। किस स्टेज पर हो? आज देखने की दृष्टि नहीं है। दृष्टि है- यहाँ क्या है, वहाँ क्या है? इसमें ही यदि भटकते रहे तो भीतर का ज्ञान प्राप्त नहीं होगा।

सुनने के लिए बुद्धि के कई आयाम बताए गए हैं। यदि सुनने में मन जुड़ जाए, पर बुद्धि न जुड़े तो सुनने की विधि पूर्ण नहीं होगी। सुनने के जो तरीके बताए गए हैं, उनमें कहा गया है—**शुश्रूषा**, जिसका अर्थ सेवा करना होता है। इसका एक अर्थ सुनने की इच्छा भी कहा गया है। यदि किसी की सुनने की इच्छा नहीं है, उसे आप जबरदस्ती लाकर व्याख्यान में बैठा भी दें तो वह क्या सुन पाएगा? इसलिए पहले सुनने की इच्छा का जागरण होना जरूरी है। आपने सुना भी होगा कि एक व्यक्ति को जबरदस्ती व्याख्यान में लाया गया। उसे रुचि नहीं थी। सोचने लगा—कहाँ आ गया, इससे तो एक घंटे सिनेमा में चला जाता तो ठीक रहता। उसे व्याख्यान में बोरियत होने लगी। इस स्थिति में क्या उसका कल्याण हो पाएगा? जबरदस्ती बिठा भी दें तो भी वह सुन नहीं पाएगा। इसीलिए भगवान ने कहा है—पहले इच्छा का जागरण हो, फिर सुना जाए। जरा सोचिए कि एक व्यक्ति को भूख नहीं है, पर आप जबरन परोसते जाएँ तो क्या फायदा? आजकल का तो नहीं मालूम पर मारवाड़ में पहले बड़े बाजोट पर बड़ा थाल रखकर दस-पंद्रह व्यक्ति साथ-साथ भोजन करने बैठ जाते थे। पहले तो भोजन कराते फिर जब पेट भर जाता, तब पीछे से कमर में घुटने लगाते और मुँह में लड्डू ठूँसते थे। इस प्रकार जबरन खिलाते थे। जब जबरन ठूँसा भले खा ले, निकाले नहीं, बदनामी के भय से कि इतनी भी क्षमता नहीं, लेकिन उसे पचा नहीं पाएगा। उसका पाचन बिगड़ेगा, उसे अजीर्ण हो जाएगा। इसलिए कहा है—इच्छा जगे, फिर ज्ञान

दिया जाए। भगवान ने भी कहा है—**‘मुट्टु दिण्णं, दुट्टु पडिच्छियं’** पात्रता नहीं, यदि सेर की हाँड़ी में सवा सेर भर दिया तो या तो उफान आकर वह निकल जाएगा या यदि पूरा ढक्कन लगा दिया गया तो हँडिया फूट जाएगी। वैसे ही पात्रता नहीं तो ज्ञान टिकेगा नहीं।

आचारांग सूत्र में कहा गया है—**‘मइमं पाक्क’** मतिमान देख। आप कहेंगे—क्या देखेगा? सुनने के साथ देखने की बात कहाँ आ गई? भीतर की गहराई (क्षमता) को आपने देखा नहीं और अधिक लेने की कोशिश की तो पचेगा नहीं, इसलिए मात्रा को देख। मतिमान देख, ज्ञान की जिज्ञासा के साथ पचाने की क्षमता कितनी है? क्षमता से ज्यादा ग्रहण करने की कोशिश की तो बोलचाल की भाषा में बुजुर्ग कहा करते हैं कि ज्ञानी के कोठे में अजीर्ण हो तो अहं पैदा होता है और तपस्वी तप को नहीं पचा पाए तो क्रोध पैदा होता है। ऐसा ज्ञानी वस्तुतः ज्ञानी नहीं है। यथार्थ में जो ज्ञानी होगा, वह अहंकारी नहीं होगा और अहंकारी ज्ञानी नहीं हो सकता। वह विद्वान्/पंडित हो सकता है। ज्ञान व अहं का परस्पर संबंध नहीं है। यदि संबंध है तो समझिए दूध में नींबू या खून के टपके पड़ गए हों, ऐसा लगता है। वैसी विद्वता आत्मा के लिए कल्याणकारी नहीं हो सकती। कल्याणकारी वही ज्ञान होगा, जिसे निरहंकार भाव से ग्रहण किया गया हो। यदि साथ में अहं का विष भी है तो साँप की तरह फुँकार मारेगा। फुँकार मारेगा तो ज्ञान को पचा नहीं पाएगा। अजीर्ण की स्थिति हो गई तो खट्टी डकारें आएँगी। ज्ञान का अहं के रूप में प्रस्फुटन न हो, इसलिए गुरु कहते हैं—**‘मइमं पाक्क’**। देख घड़ा कितना भरा है, कितना खाली है। ऊनोदरी भाव है तो इच्छा बनी रहेगी। यदि एक बार में ही पूरा डोज ले लिया तो धाप जाओगे, फिर इच्छा नहीं जगेगी। फिर कितना ही सुनाओ, कारगर नहीं होगा। पहले इच्छा जगे, तभी हम सुनने का उपक्रम कर पाएँगे।

विनय का प्रसंग भी यहाँ उपस्थित होता है क्योंकि सुनने की क्रिया तथा पर्युपासना के साथ उसका संबंध भी जुड़ा हुआ है। पर विनय का स्वरूप है क्या? क्या हम

जानते हैं कि विनय समाधि किस चिड़िया का नाम है? हमने सोचा होगा कि गुरु के आने पर उठना, सामने जाना, सेवा कर देना, भोजन ले जाना, उनके वस्त्रों का प्रतिलेखन कर देना, यही विनय है। परंतु इसे शास्त्रकारों ने लोकोपचार विनय कहा है। यदि वह लोकोपचार है तो यथार्थ विनय कुछ और ही है। **विनय** को धर्म का मूल कहा गया है। सुनने बैठा है और यदि विनय नहीं है तो उपासना कैसे हो पाएगी? इसलिए विनय के गहरे रूप को समझना आवश्यक है। डॉक्टर से औषध का ज्ञान कर लिया, पर उसे विनयपूर्वक ग्रहण नहीं किया तो असर नहीं होगा। कभी-कभी विचार करता हूँ तो लगता है कि विनय यह हो सकता है—**वि = विशिष्टः नयः। नय** का अर्थ नम्रता, व्यवहार, विधि और बर्ताव भी होता है। जो व्यवहार विशिष्ट रूप का हो और हमारे भीतर वह प्रकट हो। इस प्रकार यदि विशिष्ट या विशुद्ध रूप आचरण का हमारे भीतर प्रकटीकरण हो तो वह विनय है अन्यथा नहीं। तब समझें कि हम केवल शरीर साध रहे हैं। विनय भाव उत्पन्न होगा तो विशिष्ट प्रकार का प्रवाह बहे बिना नहीं रहेगा। हम यह भी कह सकते हैं—**‘विगतः नयः यक्मात्’**—जहाँ सारे विचार तिरोहित हो जाएँ, परंतु यह जड़ होना नहीं होगा। क्योंकि इसके पीछे भाव होता है—

**अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।  
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।**

इसी कारण यहाँ सारे के सारे विचार प्रवाह शांत हो जाते हैं, तर्क-वितर्क नहीं रहते। हम जानते हैं कि यदि नीचे आग जल रही हो तो बटलोई में उफान आएगा। जब तक पदार्थ खदबद्-खदबद् नहीं करेगा, तब तक वह पक नहीं पाएगा। जब वह पक जाएगा, तब खदबद्-खदबद् बंद हो जाएगी। इसी प्रकार तब सारे विचार प्रवाह शांत हो जाएँगे। जब हम सोचें कि भगवन्! तुम्हारे चरणों में जब सारा जीवन सौंप दिया, तब क्या रहा हमारा? यदि आप श्रमणोपासक हैं, भगवान की उपासना कर रहे हैं और वस्तुतः **‘सब कुछ सौंप दिया’** तब जैसा

इशारा होगा—**‘इंमियामात्रं कंपञ्जे’** तब इंगित व आकार के अनुसार प्रवृत्ति की क्षमता आएगी। यदि ऐसा नहीं किया और मात्र ऊपर से समर्पणा की तो भीतर खदबद्-खदबद् चलती रहेगी, प्रवाह शांत नहीं होगा। हम स्वयं अँधेरे में रहेंगे और दूसरों को भी अँधेरे में रखेंगे। हम अँधेरे में रहेंगे तो गुरु की लौ का स्पर्श भी नहीं कर पाएँगे। तेल में पानी मिला है तो दीपक चड़चड़-चड़चड़ करता रहेगा। तब हम प्रकाश या ज्ञान की प्राप्ति सम्यक्तया नहीं कर पाएँगे।

**‘क्वोच्चा जाणइ कब्बाणं, क्वोच्चा जाणइ पावमं’**

आप सुन रहे हैं कान से, लेकिन मन से कुछ और ही सोच रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा कान से सुन लिया, पर मन का चक्का अलग ही चलाते हैं। कहीं की बात कहीं घटित करते हैं। गणित अलग से लगाते हैं तो सुनने की स्थिति घटित नहीं होगी। हमें सोचना है कि प्रभु ने जो संकेत दिया है कि पहले सुनने की क्रिया करो, उसे गंभीरता से समझें। शब्दों पर नहीं, उनके मर्म पर जाएँ। सुनने की क्रिया का संबंध न जुड़े तो आगे क्या कुछ प्रवृत्ति कर पाएँगे, यह बता पाना बहुत कठिन है। डॉक्टर उपचार देता है। आप गए डॉक्टर के पास, डॉक्टर ने देखा, निदान कर दिया। कहा—यह दवा ले जाओ, पाँच दिन बाद वापस मेरे पास आना। वह यह नहीं कहता— इससे आप अच्छे हो जाएँगे। पाँच दिन बाद आप पहुँचे। पुनः दवाई दी और कहा—ठीक नहीं हुए तो फिर मेरे पास आना। उसे भरोसा नहीं है, फिर भी डॉक्टर के पास जाता है और डॉक्टर के निर्देश के बाद भी पूरा कोर्स न ले तो डॉक्टर कहेगा—पूरा कोर्स नहीं लिया। बीमारी न जाए फिर कहा जा सकता है—ये क्या किया? अब तो स्थिति बदली है, पर पहले चीन में डॉक्टरों को फीस नहीं वेतन दिया जाता था। इससे क्या अंतर आया? वेतन इसलिए दिया जाता था कि व्यक्ति बीमार न पड़े। यदि बीमार पड़ गया तो डॉक्टर से हर्जाना वसूल किया जाता था। आज व्यक्ति बीमा करवाता है। मान लीजिए आपने इंश्योरेंस कंपनी में अपनी गाड़ी का

बीमा करवा लिया और उससे कोई आदमी मर गया तो कंपनी सारी राशि का भुगतान करती है। उसके लिए आप प्रीमियम की किरतें भरते हैं, वैसे ही चीन में डॉक्टरों को वेतन दिया जाता था कि तुम्हारी जवाबदारी है कि कोई बीमार न पड़े। यदि बीमार पड़ गया तो दवाई आदि का हर्जाना तुम्हें भुगतना होगा। यदि आपने कोर्स ही पूरा नहीं लिया, तब तो आप आरोप नहीं लगा सकते।

आप कहा करते हैं— **‘सुण्यो पर गुण्यो नहीं’**।

सौ-पचास व्याख्यान सुन लिए, सुणता-सुणता आखी उमर हो गई। केश काला सूंधोळा व्हेग्या, पर गुण्यो नीं—

**सुण्या पर गुण्या नहीं, रीते चूल्हे फूँक।  
गुरु बिचारा काँई करे, चेला माँही चूका।**

रीते चूल्हे में आग नहीं, राखड़ो भरियो है और भूंगली लेकर फूँक लगाओ तो आग सुलगेगी क्या? तब राख ही उड़ेगी, उड़ते-उड़ते शरीर पर छा जाएगी। भूत बन जाओगे। यदि विधि को ध्यान में न रखा तो कैसे सुनेंगे? स्थिति यह है कि न सुनने की मानसिकता है, न सुनने का समय। व्याख्यान लंबा चलता है, खा-पीकर आना पड़ता है, क्योंकि पहले पेट-पूजा, फिर काम दूजा। खा-पीकर आए तो फिर आलस्य आएगा, झपकी आ जाएगी। तब विधि से सुनना है तो कैसे सुने? गुरु तो भव से तारणहार हैं, पर समय कहाँ है? यह भी समझ लीजिए कि जो-जो रात्रियाँ बीत गईं, वे लौटने वाली नहीं हैं। जिंदगी ही जब गुजर गई तो अब क्या होना है, फिर तो सुनना ही बेकार है।

सुनने का अधिकारी कौन है? दशवैकालिक सूत्र में बताया गया है— **‘थंभा व कौहा मयप्पमाया’**। ऐसा व्यक्ति क्या सुनेगा, क्या सीखेगा, जो क्रोध, माया, प्रमाद, रोग व आलस्य से ग्रस्त है। वस्तुतः वह पात्र नहीं है। यदि खदब्द समाप्त नहीं हुई, फिर भी कुछ और पदार्थ डाल दें तो अजीर्ण ही होगा, कुछ भी अंग नहीं लगेगा। अजीर्ण बढ़ेता तो फिर वह जीर्ण में ले जाएगा। जो बीमारी अब तक पेट की थी, वह यदि धातुगत बन

गई तो शमन कठिन होगा। जीर्ण अवस्था का उपचार कठिन होता है। परिश्रम करना पड़ता है तो कष्टप्रद होता है। इसलिए जब प्रारंभिक अवस्था है, तब ही उसे शांत-प्रशांत करने का प्रयास करें, अन्यथा वह प्रवाह हमारे भीतर प्रवाहित नहीं होगा। इस भावना से सुनें, फिर निर्णय लें, तब ही सुनना कल्याणप्रद हो सकता है। तब ही कल्याण मार्ग को सुन पाएँगे, समझ पाएँगे। नहीं तो न कल्याण मार्ग को, न पाप मार्ग को सुन पाएँगे, न समझ ही पाएँगे। इस स्थिति को एक दृष्टांत द्वारा समझें।

एक जगह महाभारत का वाचन चल रहा था। भक्त सुनने के लिए पहुँचे। जब सुना कि द्रौपदी ने पाँच पतियों का वरण किया था और यह भी सुना कि धर्मराज ने उसे दाँव पर लगा दिया। कथा एक पटेलन भी सुन रही थी। वह पंडितजी के पास पहुँची और कहने लगी— “महाराज! यदि यह महाभारत मैं पहले सुन लेती तो मेरे जीवन का कल्याण हो जाता।” पंडितजी ने सोचा— देखो कितनी भावुक आत्मा है। वह आगे बोली— अबे काँई करूँ! अब तो समय निकल गया। मेरा भी बुढ़ापा आ गया। उसने बात स्पष्ट की—बात ऐसी है कि द्रौपदी ने पाँच पतियों का वरण किया था, यदि मेरी जवानी होती तो मैं भी पाँच पतियों का वरण करती। इधर सभा में पटेल भी बैठा था। वह भी आया, कहने लगा—यदि यह महाभारत मैं पहले सुन लेता तो बहुत अच्छा हो जाता। पूछा गया—क्या अच्छा हो जाता? उत्तर मिला—अब तक तो मैंने घर की संपत्ति ही दाँव पर लगाई थी। मुझे यह नहीं मालूम था कि पत्नी को भी दाँव पर लगाया जाता है। आज मालूम हुआ कि हमारे आदर्श पुरुष धर्मराज ने पत्नी को भी दाँव पर लगाया था तो मैं भी अपनी पत्नी को दाँव पर लगाकर अपनी हारी हुई संपत्ति अर्जित कर लेता।

आप कहेंगे खूब अच्छा रहा। लेकिन समझ लीजिए तो कहेंगे—मति ठीक नहीं है। ऐसी बातें सोचेंगे तो जीवन में निर्माण नहीं होगा। जिस सत्य को लेना है, उसे ले नहीं पाएँगे। क्या कल्याणप्रद है? क्या हेय है?



धर्म ग्रंथ हमें दोनों का बोध कराते हैं। वे यह भी बताते हैं कि ऐसा करने से कितना नुकसान हुआ। द्रौपदी को दाँव पर लगाने से कितनी हानि हुई। पर यह सब कौन सोचता है? बस एक बात पकड़ ली और निर्णय कर लिया, तब उसका सुनना कहाँ सार्थक होगा? अतः दोनों मार्गों को जानो, फिर वह मार्ग स्वीकार करो, जो सुख के लिए श्रेयस्कर है। तब ही इसे सुनना कहेंगे, तब ही उसका लाभ भी मिलेगा। इस प्रकार सही निष्कर्ष निकालो और उसे ग्रहण करो।

इस संसार में बहुत से पदार्थ भरे पड़े हैं, जैसे—ताँबा, पीतल, काँसा, लोहा आदि, किंतु यदि चुंबक घुमेगा तो किसे आकृष्ट करेगा? केवल लोहे को। वैसे ही हम जहाँ भी हों, कहीं भी घूमें, किंतु जो जीवन के लिए उपयोगी है, उसे ही आकर्षित करें। इस प्रकार गुरु का अवतरण अपने भीतर कर लें। गुरु के ज्ञान से, लौ से रगड़ करेंगे तो हमारे भीतर भी ज्ञान पैदा होगा। आप कहेंगे हमारे भीतर दीप कहाँ है, बाती कहाँ है? भले ही नहीं है, पर जैसे एरंड की लकड़ी या चकमक पत्थर के दो टुकड़े जब आपस में रगड़े जाते हैं तो उस रगड़ से आग पैदा हो जाती है। विद्युत के लिए भी कहा गया है कि संघर्ष—रगड़ से आग पैदा हो जाती है। उसी प्रकार आवश्यक है कि गुरु के ज्ञान से हमारे ज्ञान की रगड़ हो जाए। कहा भी जाता है—

**करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजाना  
रसरी आवत जात ते, सिल पर पड़त निशाना।**

रगड़ लगाते चलें तो एक दिन हमारे भीतर भी ज्योति निश्चित रूप से जगेगी और यदि यह सोच लिया कि इतने दिन हो गए, रगड़पट्टी करते-करते, अब कब तक करें तो क्या पता कि अगले ही क्षण ज्योति प्रकट होने वाली हो। इतनी दूर आकर रुक गए तो यह परम दुर्भाग्य होगा, क्योंकि फिर तो पुनः शुरू से रगड़ लगानी पड़ेगी। भगवान महावीर स्वामी ने गौतम स्वामी से कहा— **‘मौयम! तिवमा मए’**, तीर पर आ गए हो। तीर पर आकर कोई हताश अथवा उदास हो गया तो

सोचिए कि क्या दशा होगी!

मुंबई में आचार्यदेव के साथ बाहर जाने का प्रसंग आया। समुद्र के पास गए, दरिया को देखा तो लोगों ने बताया कि इस दरिया में कोई भी चीज होती है तो लहरें उसे किनारे पर लाकर डाल देती हैं। किनारे पर डाल देने पर भी यदि नहीं सँभाला, नहीं उठाया तो दूसरी लहर उसे पुनः बहाकर ले जाती हैं। यदि हम सचेत नहीं रहे तो ऐसा ही हमारे साथ भी होगा। किनारे पर आकर भी उदास हो गए तो फिर चतुर्गति के चक्कर में पड़ जाएँगे। हम किनारे आ गए हैं, शायद अगले ही क्षण एक रगड़ से ज्योति पैदा होने वाली है। अतः पहले हम सुनने की विधि जान लें। आगे और भी बातें हैं, वे न भी सीखें तो कम से कम सुनने की विधि तो अवश्य सीख लें और वह सुनना भी विनय से हो। यदि वह इच्छापूर्वक भी होगा तो वह निश्चय ही कल्याणकारी भी होगा। यह भी ध्यान रखें कि यदि कुछ संशय, शंका अथवा अनिश्चय की स्थिति है तो फल नहीं मिलेगा। क्योंकि कहा गया है—

**‘श्रद्धावान् लभते ज्ञानं, विश्वाक् फलदायकं’**। श्रद्धावान को ही ज्ञान का लाभ मिलता है तथा विश्वास फलदायक होता है। अविश्वास, संशय, शंका ही खद्बद् है। यदि खद्बदाहट मौजूद है तो कार्य नहीं होगा। विचारों को शांत बनाकर गुरु की वाणी को अपने भीतर उतारते चलें। हमारा सौभाग्य है कि गुरु ज्ञान का वह नवनीत हमारे लिए मौजूद है। अतः गुरु से तादात्म्य स्थापित करें। सुनने से रगड़ पैदा होगी। स्वाध्याय के जो पाँच भेद कहे गए हैं, उनके माध्यम से ज्ञान को परिपक्व करें, निश्चय ही वह आत्मा के लिए कल्याणकारी होगा और इस प्रकार सुनना सार्थक होगा। वह भवों—भवों की बीमारी को शांत भी करेगा। तब गुरु ज्ञान व सुनना सब कुछ सार्थक हो जाएगा। इसलिए संकल्पपूर्वक, अविचलित रहकर जीवन में प्रयास करें। यह जीवन जो हमें अनेक भवों में भ्रमण के बाद प्राप्त हुआ है, कहीं व्यर्थ न चला जाए, नहीं तो पता नहीं कितने और भवों में पुनः भटकना होगा।

साभार— श्री राम उवाच—5 (मानवता की खोज) ❀❀❀

ऐसी वाणी  
बोलिए



मधुर वचन

‘ऐसी वाणी बोलिए’

धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। ‘मित वचन’ पूर्ण होने के पश्चात् ‘मधुर वचन’ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय ही व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है....

भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में

श्रावक का वचन व्यवहार (सार-संक्षेप)

ज्ञान सीखते हुए कोई बात गलत कहने में आ जाए तो माफी माँगना

आलंभिका नगरी में एक बार कुछ श्रमणोपासक आपस में धर्म चर्चा कर रहे थे। प्रश्न उपस्थित हुआ कि देवलोक में देवों की स्थिति (उम्र) कितने काल की कही गई है? तब ऋषिभद्रपुत्र नामक श्रमणोपासक ने उत्तर दिया — “आर्यों! देवों की स्थिति जघन्य 10,000 वर्ष उत्कृष्ट 33 सागरोपम की कही गई है। इससे अधिक स्थिति वाले देव देवलोक में नहीं हैं।”

उनकी इस बात पर उन श्रमणोपासक ने विश्वास नहीं किया। फिर भगवान महावीर से पूछने पर उन्हें पता चला की वह कथन सत्य था। तब श्रमणोपासक ने पुनः ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक के पास जाकर उन्हें वंदन, नमस्कार किया। उनकी बात को सत्य नहीं मानने के लिए विनयपूर्वक बार-बार क्षमायाचना की।

**E** शिक्षक-विद्यार्थी के साथ वचन एवं व्यवहार

1. आप भले ही कितने इंटेलीजेंट हों, अपने से कम इंटेलीजेंट स्टूडेंट की भी रेस्पेक्ट करें।
2. अपने मुँह से कभी-भी अपनी तारीफ न करें। मैं-मैं शब्द की आदत वालों को कोई पसंद नहीं करता।
3. अपनी गलती को सहजता से स्वीकार करें।
4. आपके पढ़ाने के तरीके के विषय में कोई पॉजिटिव फीडबैक दे तो भी सहज रहें और नेगेटिव फीडबैक दे तो भी सहज रहें। अपना बचाव करने की कोशिश न करें।

## कोई Feedback देने आए तो उसे ग्रहण कैसे करना (How to receive feedback)

- (i) शिकायत नहीं, सुझाव समझकर ग्रहण करें।
  - (ii) सारे Points को संक्षिप्त में Note कर लें और सामने वाले को Repeat करके बता दें।
  - (iii) चेहरे पर मुस्कान रखें, ताकि सामने वाला समझ जाए कि नाराज नहीं है।
  - (iv) सुधार के लिए उपाय पूछें।
  - (v) धन्यवाद दें।
  - (vi) Improve करने के लिए Practice करें।
5. किसी के भी सामान्य प्रश्न सुनकर न उस पर झुंझलाएँ और न हँसें।
  6. अच्छा पुरुषार्थ करने पर स्टूडेंट्स को Appreciate करें, आपने अच्छा किया।
  7. पढ़ाते हुए भाव (Intention) और हावभाव (Body Language) दोनों पॉजिटिव रखें।

Intention – सबका विकास हो।

Body Language – सहज, बिना मस्तक पर सल डाले।

8. Class के Rules पहले से ही बता दें और Rules के प्रति Strict रहें, परंतु किसी के द्वारा Rules तोड़ने पर भी रफ टोन में कुछ न कहें, सहजता से कहें।
9. 2-3 जानकार श्रावक-श्राविका एक साथ बैठे हों तो भी सब मिलकर एक साथ न पढ़ाएँ। एक-दूसरे के बीच में न बोलें। इससे पढ़ने वाले कन्फ्यूज (Confuse) हो जाते हैं। जो Class हैंडल कर रहा है, उसे ही पढ़ाने दें। यदि पढ़ाने वाला खुद आपको कहे तो आप भी पढ़ा सकते हैं।
10. विद्यार्थी बनकर पढ़ाएँ, Teacher बनकर नहीं। इस प्रकार बताएँ कि हमने जो सीखा, गुरु भगवंतों से सीखा है। वह आपके साथ शेयर कर रहा हूँ।
11. किसी भी विद्यार्थी को ये न कहें कि आपसे नहीं होगा, आप छोड़ दो।
12. Tone का ध्यान रखें। जितने लोग पढ़ने वाले हों, उनके अनुसार ही आवाज तेज होनी चाहिए। जरूरत से ज्यादा तेज आवाज कान को चुभती है और Disturbance भी Create करती है।
13. प्रामाणिक बात करें, मन से जोड़कर कुछ न पढ़ाएँ। पहले अच्छे से सीख लें, जो नहीं पता हो उसके लिए स्पष्ट कहें— 'मुझे ध्यान में नहीं है।'
14. डर-डर के न पढ़ाएँ, Confidently पढ़ाएँ। विषय की स्पष्ट जानकारी न हो तो भी Confidently कहें— 'मैं प्रयास कर रहा हूँ।'

### DON'T (ऐसा न करें)

- 1 किताब-विताब की मुझे जरूरत नहीं है, ये तो आप लोग ही देखो, मेरा तो दिमाग ही किताब है।
- 2 आप लोग अपना दिमाग मत लगाओ, जो मैं कह रहा हूँ वो सुनो।
- 3 मैं ऐसा कहता हूँ, मैं ऐसा कहता आया हूँ।

### DO (ऐसा करें)

- 1 आप देखिए, मुझे जरूरत होगी तो मैं आपसे Book ले लूँगा।
- 2 आप लोग अपना दिमाग मत लगाओ — कहने की बजाय मौन रहें।
- 3 जो मुख्य Point हैं, वो बताएँ। साथ में ये वाक्य न जोड़ें, मैं ऐसा कहता हूँ।

## DON'T (ऐसा न करें)

- 4 मैंने जिंदगी में बहुत लोगों को आगे बढ़ाया है, मैं तो साधु-संतों को भी पढ़ाता हूँ।
- 5 मेरा हर काम Perfect है।
- 6 आज तक मेरा हर काम Success हुआ है।
- 7 आपको जल्दी समझ में नहीं आता।
- 8 किसी के बीच में बोलने पर भी रफ टोन में न टोकें— आप चुप रहो, आप क्यों बीच में बोल रहे हो ?

## DO (ऐसा करें)

- 4 मौन रहें।
- 5 बताने की जरूरत नहीं है कि मेरा हर काम परफेक्ट है।
- 6 आज तक जो भी अच्छा हुआ, गुरु कृपा से हुआ है।
- 7 कोई बात नहीं, आपको इस तरह से समझ में नहीं आ रहा है तो किसी दूसरे तरीके से समझते हैं।
- 8 बीच में बोलने पर Politely कहें— 'प्लीज, जिससे पूछा जाए, वो ही बोले।'

## F श्रावक—श्रावक के साथ वचन एवं व्यवहार

1. आप कितने भी ज्ञानवान क्रियावान हों, परंतु जो अल्प ज्ञानवान, क्रियावान श्रावक हैं, उनका भी सम्मान करें। किसी का तिरस्कार कभी न करें।  
बिखरा हुआ घास कोई काम का नहीं दिखता, पर वह भी एकजुट हो जाए तो मजबूत रस्सी बनता है, इसलिए संघ में सभी को जोड़कर रखना चाहिए। सबका अपना महत्व है।
2. काम करें, पर अपनी प्रशंसा बिलकुल न करें और न इच्छा रखें कि कोई करे।
3. किसी भी संघ सदस्य की निंदा-चुगली न करें, सबके प्रति सद्भावना रखें।
4. समस्या पर ही चर्चा करने के बजाय समाधान पर बात करें। एक ही प्रॉब्लम को जितनी बार रिपीट करेंगे, उतनी वो बड़ी हो जाएगी।
5. सलाह दें, पर इस बात का आग्रह न रखें कि आपकी बात ही मान्य हो।
6. सबकी बात धैर्यपूर्वक सुनें, बीच में न काटें।
7. बहस में न उलझें, बात को छोड़ने की आदत डालें।
8. हर छोटे से छोटे श्रावक को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करें। आप कर सकते हैं, आपने बहुत अच्छा काम किया...।
9. किसी से सेवा लेवें, तब धन्यवाद-आभार व्यक्त करें। अच्छे काम का श्रेय सबको दें।
10. किसी भी काम के लिए छोटों को प्रेम से कहें व बड़ों को विनम्रता से।
11. कोई व्यक्ति लाभ कम लेता हो तो उसकी शिकायत न करें, इससे तो और टूट जाएगा। उसकी परिस्थिति समझें, उसके साथ सहज रहें।
12. गलतफहमी को बढ़ाने के बजाय बात करके उसे दूर करें। कोई कितना भी उग्र हो जाए, पर संघ हित के लिए हम मौन रहें। हम बोलेंगे तो हमारा नाम भी विवाद करने वालों की लिस्ट में आ जाएगा।
13. सभी से मुस्कुराकर सहज बात करें और किसी भी बड़े कार्य में सबको जोड़ने का प्रयास करें। आपका कहने का तरीका यह तय करता है कि कोई आपकी बात सुनेगा या नहीं। कोई नहीं सुने तो भी सहज रहें, शिकायत करने न

लग जाएँ। आपका काम प्रयास करना है, आग्रह करना नहीं।

14. कुछ लोग अड़चनें पैदा कर सकते हैं, भड़क सकते हैं, पर हमें समझकर चलना है कि वह उनकी आदत है। अतः वो वैसा करेंगे, पर हमें उस बात से परेशान नहीं होना है। उस व्यक्ति की बात सुन लेना है।
15. कोई समस्या नहीं सुलझ रही हो तो आचार्य भगवन् के चरणों में निवेदन करें और फिर वो जो संकेत कर दें, उसे एक बार में स्वीकार करें। इससे हम बहुत सुखी रहेंगे और सुरक्षित भी।

## G श्रावक-साधु-साधियों के साथ वचन व्यवहार

1. सम्मान सूचक शब्दों का प्रयोग करें।
2. तुलना न करें। वे म.सा. तो इतनी बातें करते थे, ये तो बोलते ही नहीं। वे हमेशा बच्चे-बच्चे को मांगलिक सुनाते थे, ये तो सुनाते ही नहीं। वे अच्छी Class लेते थे, ये तो Class लेते ही नहीं...।  
जो महापुरुष अपने क्षयोपशम अनुसार जैसी कृपा करावें, उसका अनुमोदन करना चाहिए। शिकायत नहीं करना चाहिए।
3. साधु-संतों पर किसी बात के लिए प्रेशर न डालें, निवेदन करें।
4. व्याख्यान के बीच में किसी साधु को न टोकें तथा नीचा दिखाने के लिए कोई प्रश्न न पूछें।
5. संत-महापुरुषों के सामने झूठ न बोलें। जो बात जैसी है, वैसी कहें।
6. साधु-संतों के साथ सार्थक ज्ञान-चर्चा करें। निंदा-विकथा, लड़ाई-झगड़े की बातें न करें।
7. ज्ञान सीखने के पहले का पाठ बोलकर सीखना शुरू करें।
8. ज्ञान सीखने के बाद का पाठ बोलकर आभार व्यक्त करें।
9. कुछ गलत लगे तो अकेले में जिसकी बात है, उन्हें निवेदन करें।
10. साधु-संतों के साथ बहस न करें अथवा आवाज ऊँची न करें। शालीनतापूर्वक बात करें।
11. ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय, मांगलिक सुनाने का आग्रह न करें।



## भाषा विवेक



### DON'T (ऐसा न करें)

- 1 म.सा., आप कहाँ के हो?
- 2 म.सा., आप कहाँ-कहाँ घूमकर आए?
- 3 म.सा., आपको कुछ चीज चाहिए क्या?
- 4 म.सा., रास्ते में कितने कष्ट आए होंगे ना?
- 5 गुरुदेव कितना जल्दी-जल्दी चल के जा रहे हैं।

### DO (ऐसा करें)

- 1 मत्थण वंदामि, आपश्रीजी की जन्मभूमि कौन-सी है?
- 2 मत्थण वंदामि, आप किधर से विचरण करके पधारे?
- 3 मत्थण वंदामि, औषध भेषज आदि किसी भी वस्तु की आवश्यकता हो तो कृपा कराना।
- 4 मत्थण वंदामि, विहार में कितने परीषह आए होंगे ना?
- 5 आचार्य भगवन् कितना उग्र विहार करके पधार रहे हैं।

## DON'T (ऐसा न करें)

- 6 म.सा., यहाँ बैठो ना!
- 7 म.सा., आप यहाँ से कब जाओगे?
- 8 म.सा., कैसे हो?
- 9 म.सा., मेरे घर पर ही ठहरो।
- 10 म.सा., Sorry-Sorry.
- 11 म.सा., हमको भूलना मत।
- 12 आपसे मिलकर अच्छा लगा।
- 13 म.सा., कोई कामकाज हो तो बताओ।
- 14 म.सा. बातें कर रहे हैं।
- 15 म.सा. पानी फेंक रहे हैं।
- 16 म.सा. पोछा लगा रहे हैं।
- 17 म.सा. कपड़े देख रहे हैं।
- 18 म.सा. कपड़े धो रहे हैं।
- 19 म.सा., आप कितने लोग हैं?
- 20 म.सा., ये पढ़ा दो तो।
- 21 म.सा., हमारे घर गोचरी चलो।
- 22 हॉं/जी/Yes
- 23 म.सा., आप क्या बोल रहे थे?

## DO (ऐसा करें)

- 6 मत्थण वंदामि, यहाँ विराजो।
- 7 मत्थण वंदामि, अभी स्थिरता रखना।
- 8 मत्थण वंदामि, आपके साता है?
- 9 मत्थण वंदामि, मुझे भी शय्यातर का लाभ देवें।
- 10 क्षमायाचना।
- 11 मत्थण वंदामि, हम पर कृपा दृष्टि बनाए रखना।
- 12 मत्थण वंदामि, आपके दर्शन करके बहुत प्रसन्नता हुई।
- 13 मत्थण वंदामि, मेरे योग्य कोई सेवा हो तो फरमाओ।
- 14 म.सा. ज्ञान चर्चा कर रहे हैं।
- 15 म.सा. परठ रहे हैं।
- 16 म.सा. सीत ले रहे हैं।
- 17 म.सा. वस्त्र का प्रतिलेखन कर रहे हैं।
- 18 म.सा. वस्त्र प्रक्षालन कर रहे हैं।
- 19 मत्थण वंदामि, आप कितने ठाणा हैं?
- 20 मत्थण वंदामि, आप की अनुकूलता हो तो ज्ञान-ध्यान सिखाने की कृपा करें।
- 21 मत्थण वंदामि, अमुक मोहल्ले में बहुत दिनों से पधारना नहीं हुआ।
- 22 तहत्ति।
- 23 मत्थण वंदामि, आप क्या फरमा रहे थे?

## उपसंहार

- ❁ मनुष्य विभिन्न भावों का विचित्र समूह है। उसके एक नहीं, दो नहीं, अनेक व्यक्तित्व होते हैं। व्यवसाय में एक रूप, दोस्तों के बीच दूसरा रूप और घर का तीसरा रूप। परंतु श्रावक का व्यक्तित्व इस प्रकार का नहीं होता। श्रावकत्व (देश चरित्र) आत्मा का गुण है, यह कोई मुखौटा नहीं है कि कभी-भी उतार लो और कभी भी पहन लो। यह गुण जीव के साथ उसके स्वभाव के रूप में रहता है। स्थानक में रहते हुए जो व्यक्ति श्रावक है, वह घर पर या दुकान पर या अपने दोस्तों के बीच रहते हुए भी तो श्रावक ही है, अतः उसका वचन व्यवहार सर्वत्र प्रशस्त होना चाहिए।
- ❁ इसी विषय को स्पष्ट करने के लिए यहाँ 'सत्य हित मित मधुर' वचनों को विभिन्न उदाहरणों के साथ समझाया गया है (पहले सामूहिक रूप से और फिर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की अपेक्षा भिन्न-भिन्न रूप से)।
- ❁ यहाँ ज्ञातव्य है कि असत्य में जिन उदाहरणों को दिया गया है उनका प्रयोग करने से केवल असत्य का ही दोष लगता है, ऐसा नहीं है। एक दोष के साथ अन्य दोष भी लग सकते हैं।

जैसे— एक व्यक्ति ने गुस्से में किसी को कहा — ‘जानवर कहीं के, मेरी बात काटता है, तू हमेशा दुःखी रहेगा।’

यह वचन

क्या सत्य वचन है? नहीं (क्योंकि अवास्तविक है)  
क्या हित है? नहीं (क्योंकि पीड़ाकारी है)  
क्या मित वचन है? नहीं (क्योंकि अनावश्यक है)  
क्या मधुर वचन है? नहीं (क्योंकि कान को चुभने वाला है)

अतः एक अशुभ वचन अनेकानेक पाप कर्मों का बंध कराने वाला बनता है। इससे सार्तो अशुभ कर्मों का बंध तो होता ही है, साथ ही आयुष्य का बंध हो जाए तो दुर्गति में ले जाने वाला भी बन सकता है।

✿ अतः अपनी आत्मा का हित चाहने वाले सभी विवेकवान श्रावक-श्राविकाओं को दुर्गति में ले जाने वाले अशुभ वचनों को छोड़कर इस भव व परभव को सुखी बनाने वाले शुभ वचनों का ही प्रयोग करना चाहिए अथवा मौन रहना चाहिए।

✿ दूसरे कुछ भी करें, ये उनका विषय है। हम उस पर ध्यान न देकर अपने आपको नियंत्रित रखने का अभ्यास करें और जब भी बोलें—

बोलने से पहले सोचें — जो मैं बोलने जा रहा हूँ, क्या वह सत्य हित मित मधुर है?

बोलने के बाद सोचें — जो मैंने बोला, वह क्या सत्य हित मित मधुर था?

—संपूर्ण ❤️❤️❤️

भक्ति रस

## राम नाम से, मन ये हर्षित हुआ

—हर्षिता दशोरिया, भद्रेसर

(तर्ज : राम को देखकर श्री जनक नंदिनी)

राम को देखकर, मन ये बोले सदा,  
राम संग है सदा, राम मन में सदा।  
राह चुनना कठिन, राम संग है मेरे,  
राम मेरे हर कष्टों में, संग है सदा॥  
राम को देखकर, मन ये बोले सदा,  
राम पद पंकजों में, समर्पण मेरा।  
राम गुरु की कृपा से, मैं संयम चुनूँ,  
आत्मकल्याण के पथ पर, मैं चलूँ॥  
राम को देखकर, मन ये बोले सदा,  
राम सूर्य सम हैं, चमकते सदा।  
राम की गोद में, हो शीश मेरा,  
सिर्फ एक लक्ष्य ही है, अब जीवन मेरा॥  
राम को देखकर, मन ये बोले सदा,  
राम के नाम के संग, संयम चुनूँ।  
राम कहते सदा, संयम श्रेष्ठ यहाँ,



आत्मचिंतन किया, राम नाम लिया।  
राम-सा बनने को, संयम पथ ये चुना॥  
राम को देखकर, मन ये बोले सदा,  
राम का यश सदा ही, फैलाती रहूँ।  
उपाध्याय जी की शिक्षा से मैं,  
आपके गुणों को सुशोभित करूँ॥  
संत-सतियों से सीखा, दृढ़ निश्चय किया,  
राम के नाम के संग, संयम धरूँ।  
राम को देखकर, मन ये बोले सदा,  
राम की कृपा सदा ही, बरसती रहे॥  
राम नाम मुझे, अब जल्दी मिले,  
नौ आचार्यों को, है वंदन मेरा।  
आपके गुणों को, मैं धारण करूँ,  
राम को देखकर, मन ये बोले सदा॥  
राम नाम से, मन ये हर्षित हुआ॥





# श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 जुलाई 2024 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

- प्रश्न 77 क्या किसलय (कोंपल यानी उगते हुए अंकुर, उगते हुए पत्ते, फूल की कली) अनंतकायिक होते हैं?  
उत्तर सभी किसलय नियमा अनंतकायिक होते हैं, किंतु वृद्धि पाते हुए कोई प्रत्येक शरीरी हो जाते हैं अर्थात् अनंतकायिक जीव मर जाते हैं और प्रत्येक शरीरी वृक्ष आदि में प्रत्येक शरीरी उत्पन्न हो जाते हैं तथा कोई अनंतकायिक ही रहते हैं।
- प्रश्न 78 प्रत्येक शरीरी वृक्ष के किसलय कितनी देर तक साधारण शरीर रूप में रहते हैं?  
उत्तर यद्यपि निगोद जीवों की स्थिति अंतर्मुहूर्त ही है, किंतु कुछ अधिक देर तक नए उत्पन्न हो सकते हैं। (अनंत जीवों द्वारा एक शरीर का निर्माण होना – कैसा आश्चर्यकारी संयोग!)
- प्रश्न 79 निगोद के जीव और प्रत्येक वनस्पतिकाय के जीव कितने हैं?  
उत्तर 1) निगोद के जीव अनंत हैं। यथा— एक-एक आकाश प्रदेश पर एक-एक निगोद के जीव को रखा जाए तो अनंत लोकाकाश भर जाए। (सूक्ष्म निगोद और बादर निगोद मिलाकर यह संख्या है तथा एक निगोद के जीवों से भी अनंत लोकाकाश भर जाए)।  
2) प्रत्येक शरीरी वनस्पतिकायिक जीव असंख्येय हैं। यथा— एक-एक आकाश प्रदेश पर एक-एक प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीव को रखा जाए तो असंख्येय लोकाकाश भर जाए। (प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीव बादर ही होते हैं)।
- नोट – निगोद के शरीर असंख्येय लोकाकाश प्रमाण हैं।
- प्रश्न 80 प्रत्येक वनस्पतिकाय के पर्याप्तक और अपर्याप्तक जीव कितने हैं?  
उत्तर 1) प्रत्येक वनस्पतिकाय के पर्याप्तक जीव असंख्येय हैं, ये घनीकृत लोक के असंख्येयतम भाग मात्र हैं अर्थात् लोक के असंख्येयतम भाग में जितने आकाश प्रदेश हैं उतने और  
2) प्रत्येक वनस्पतिकाय के अपर्याप्तक जीव असंख्येय लोकाकाश के प्रदेशों के बराबर हैं।
- प्रश्न 81 जहाँ प्रत्येक वनस्पतिकाय का एक पर्याप्तक जीव होता है, वहाँ उसके आश्रित कितने अपर्याप्तक जीव होते हैं?  
उत्तर कदाचित् संख्येय, कदाचित् असंख्येय होते हैं अर्थात् असंख्येय जीवों वाले मूल, कंद आदि में असंख्येय और संख्येय जीवों वालों में संख्येय।

## विकलेंद्रिय जीवों की प्रज्ञापना - पद 1

- प्रश्न 82 द्वीन्द्रिय जीव कितने प्रकार के हैं?  
उत्तर द्वीन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के हैं। यथा— 1) शंख, 2) कौडी, 3) सीप, 4) जोंक, 5) पुलाकृमि (मलद्वार में उत्पन्न होते हैं), 6) कुक्षिकृमिक (उदर में उत्पन्न होते हैं)।



ये सभी सम्मूर्च्छिम और नपुसंक हैं तथा पर्याप्तक और अपर्याप्तक दो प्रकार के होते हैं। इनकी 7 लाख जाति-कुलकोटि-योनि प्रमुख हैं।

प्रश्न 83 सम्मूर्च्छिम शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर जो बाह्य कारणों (पुद्गलों) के संयोग से गर्भ के बिना अपने योग्य उत्पत्ति स्थान में स्वतः उत्पन्न होते हैं, उन्हें सम्मूर्च्छिम कहते हैं। ये असंज्ञी ही होते हैं।

प्रश्न 84 जाति-कुलकोटि-योनि शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर पूर्वाचार्यों ने इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है—

1) जाति से तिर्यच गति, 2) कुल यानी सजातीय जीवों का समूह, 3) कोटि – प्रकार, 4) योनि – उत्पत्ति स्थान। जैसे— गोबर में अनेक कोटि (प्रकार) के कृमि, कीट आदि उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 85 त्रीन्द्रिय जीव कितने प्रकार के हैं ?

उत्तर त्रीन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के हैं। यथा – कुंथु (अति सूक्ष्म कीट), पिपीलिका (चींटी), दीमक, घुन, झींगुर, जूँ, खटमल आदि। इनके समान अन्य अनेक त्रीन्द्रिय जीव हैं। ये सभी सम्मूर्च्छिम और नपुंसक हैं तथा पर्याप्तक और अपर्याप्तक दो प्रकार के होते हैं। इनकी 8 लाख जाति-कुलकोटि-योनि प्रमुख हैं।

प्रश्न 86 चतुरिन्द्रिय जीव कितने प्रकार के हैं ?

उत्तर चतुरिन्द्रिय जीव अनेक प्रकार के हैं। यथा – मक्खी, मच्छर, टिड्डी, पतंगा, गोबर का कीड़ा, कृष्णपत्र (कृष्ण पंख वाली तितली), नीलपत्र, लोहितपत्र, श्वेतपत्र आदि। इनके समान अन्य अनेक प्रकार के चतुरिन्द्रिय समझना चाहिए। ये सभी सम्मूर्च्छिम और नपुंसक हैं तथा ये पर्याप्तक और अपर्याप्तक दो प्रकार के होते हैं। इनकी 9 लाख जाति-कुलकोटि-योनि प्रमुख हैं।

### पंचेन्द्रिय-संसार समापन्न जीवों की प्रज्ञापना - पद 1

प्रश्न 87 पंचेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के हैं ?

उत्तर पंचेन्द्रिय जीव 4 प्रकार के हैं – 1) नैरयिक, 2) तिर्यच, 3) मनुष्य और 4) देव।

### नैरयिक प्रज्ञापना - पद 1

प्रश्न 88 नैरयिक कितने प्रकार के हैं ?

उत्तर नैरयिक 7 प्रकार के हैं। यथा – रत्नप्रभा पृथ्वी नैरयिक यावत् तमस्तमः प्रभा पृथ्वी नैरयिक, ये दो प्रकार के हैं – पर्याप्तक और अपर्याप्तक।

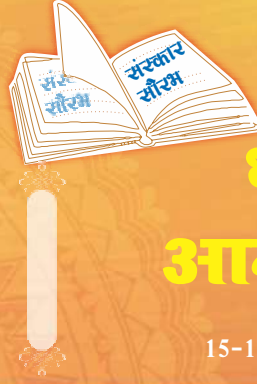
प्रश्न 89 'नैरयिक शब्द' का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ क्या है ?

उत्तर निर्+अय – अय अर्थात् इष्ट फल देने वाला शुभ कर्म निर् (निर्गत, निकल) गया हो। जहाँ इष्ट फल की प्राप्ति न होती हो अर्थात् स्वयंकृत घोर पापों का भयंकर कष्ट भोगता है, वह निरय/नरकावास है। निरय में उत्पन्न होने वाले जीव नैरयिक कहलाते हैं।

साभार – श्रीमद् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

– क्रमशः 

# आचार्यश्री का आशीर्वाद



## धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

15-16 जुलाई 2024 अंक से आगे....

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंद कँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र्य प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

**जि** न दिनों आनंद कुमारी जी ने दीक्षा ली, उस समय पूज्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. के संप्रदाय का नेतृत्व पूज्य जैनाचार्य 1008 श्री उदयसागर जी म.सा. के सुयोग्य करकमलों में था। फिर आपश्रीजी के स्वर्गारोहण पश्चात् श्रद्धेय श्री चौधमल जी म.सा. आचार्य पद पर विराजमान हुए थे।

मारवाड़ के स्थानकवासी जैन संप्रदायों में पूज्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. का संप्रदाय सबसे ज्यादा विख्यात है। पूज्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. बड़े ही तपोधनी व क्रियावान आचार्य हुए हैं। संप्रदाय का गौरव व विभूति एक प्रकार से उन्हीं की तपःसाधना का फल है। क्षीण व निस्तेज हो रहे कोटा के स्थानकवासी संप्रदाय में आपके द्वारा ही नवजीवन का संचार हुआ था।

पूज्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. के दिवंगत होने के बाद सं. 1917 में पूज्य श्री शिवलाल जी म.सा. ने आचार्यपद का भार सँभाला। आप बड़े ही विद्वान्, तपोमूर्ति व आगम उपदेशक थे। तत्पश्चात् वि.सं. 1933 में पूज्य आचार्य श्री उदयसागर जी म.सा. इस संप्रदाय के अधिनायक बने। आप उच्च चारित्र्य, सूत्रों की गहनतम बात को समझने व

समझाने में सक्षम, तीव्र बुद्धि के अधिकारी थे।

आनंद कुमारी जी को आपके सर्वप्रथम दर्शन रतलाम में हुए। जावरा से साध्वी श्री बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. आदि सतीवर्याओं के साथ नवदीक्षित साध्वी श्री आनंद कुमारी जी भी रतलाम पधारीं। रतलाम उस समय तीर्थस्थान बना हुआ था। पवित्र महापुरुष जिस स्थान को अपने चरणकमलों द्वारा स्पर्श करते हैं, वही स्थान तीर्थभूमि कहलाता है। तीर्थक्षेत्र में पवित्र होने के लिए और अपने अंतःकरण के मैल को धोने के लिए नवदीक्षित आनंद कुमारी जी भी पधारीं।

साध्वी आनंद कुमारी जी आचार्यश्री के दर्शन पाकर अत्यंत ही प्रसन्न हुईं। उनकी गंभीर-मुखमुद्रा, श्रेष्ठ शास्त्रीय ज्ञान व प्रभावोत्पादक वाणी साध्वी आनंद कुमारी जी के लिए अनुपम आकर्षण पैदा करने लगी। उनका दर्शन पाकर आप अपने को भाग्यशालिनी समझने लगीं। आपने उन महापुरुषों के निकट संपर्क में आकर उनका महान अनुग्रह प्राप्त किया। उनकी दीर्घदृष्टि ने एक लघु साध्वी में विलक्षण प्रकाश जगमगाता हुआ पाया। साध्वी आनंद कुमारी जी की विनय-भावना, शांत स्वभाव,

तीव्रबुद्धि व विवेकशीलता को देखकर आचार्यश्री ने बड़ा हर्ष प्रकट किया और बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. से आपका परिचय पूछा। उन्होंने फरमाया— “गुरुवर्य! यह सोजत के प्रसिद्ध सद्गृहस्थ श्री प्रभुदान जी सिंघी की पौत्री है। इनकी दीक्षा बड़े कष्ट सहने के बाद हुई है।”

पूज्यश्री ने कहा— “आप बड़ी भाग्यशालिनी हो। आपको एक योग्य शिष्या मिली है। देखना, इसे अच्छी तरह से सिखाना, पढ़ाना व योग्य बनाना। यह होनहार दिखती है और भविष्य में संप्रदाय की कीर्ति में चार चाँद लगा देगी।”

आचार्यश्री की यह आशा आपके लिए आशीर्वाद बन गई। पूज्यश्री ने नवदीक्षित साध्वी श्री आनंद कुमारी जी के संबंध में जो सुनहरी आशा बाँधी, वह आशीर्वाद ही नहीं, एक बड़ी जिम्मेदारी बन गई। पूज्यश्री का यह आशीर्वाद आपने थोड़े ही वर्षों में सफल भी कर दिखाया। आपकी निरंतर प्रगति होती रही और थोड़े ही वर्षों में आप चमक उठीं। आचार्यश्री का यह आशीर्वाद पाकर आप अहंकार से उन्मत्त नहीं हुईं, प्रत्युत कर्तव्य की गुरुता को जानकर और अधिक विनम्र हो गईं।

बड़ों का सहज भाव से दिया हुआ आशीर्वाद कभी निष्फल नहीं जाता। यही कारण है कि आज पूज्यश्री के दिए हुए आशीर्वाद का फल हम देख रहे हैं। आपको आचार्यश्री द्वारा प्रदत्त आशीर्वाद की जब भी याद आती तो आप कह उठतीं कि उनकी तो मुझ पर महान कृपा थी। उन्होंने मुझे जैसी छोटी साध्वी पर भी महती कृपावृष्टि की है और मुझे योग्य बनाने में जो प्रयत्न किया है, उसे भूल नहीं सकती।

कुछ दिन रतलाम ठहरने के पश्चात् आप खाचरोद आदि क्षेत्रों को पवित्र करती हुई पुनः जावरा में साध्वी श्री चंपा जी म.सा. की सेवा में पधारीं। आपका चातुर्मास जावरा ही तय हो चुका था। आपकी गुरुणी जी श्री लक्ष्मी कुमारी जी म.सा. को दूसरी जगह चातुर्मास के लिए भेजा गया और आपका सं. 1951 का चातुर्मास जावरा हुआ। चातुर्मास में लोगों का काफी उत्साह रहा। बहनों में

भी धर्म-ध्यान का ठाठ लग गया था। आपके सामने दो कार्य मुख्य थे—सेवा व अध्ययन। आप वयोवृद्धा साध्वी श्री चंपा जी म.सा. की सेवा तो करती ही थीं, इसके साथ ही दूसरी महासतीवर्याओं की सेवा करना भी आपका लक्ष्य रहता था। सेवा से बचा हुआ अधिकांश समय आप अध्ययन में बितातीं। इसी के साथ महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. आपको शास्त्रों का अध्ययन करवा रही थीं, पर देवयोग से अचानक ही आपके अध्ययन में विघ्न आ पहुँचा।

महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. की तबीयत अचानक खराब हो गई। उन्हें मियादी बुखार आने लगा और पानीझरा ने उग्ररूप धारण कर लिया था। उस समय आपने दत्तचित्त होकर उनकी सेवा की। उनके छोटे-बड़े सभी काम आप पूर्ण आत्मीय भावों के साथ करतीं। आपकी सेवावृत्ति देखकर जावरा संघ आपकी काफी प्रशंसा करता था। उन्हें आपकी ओर से आशा बंध गई थी कि यह एक उज्ज्वल मूर्ति महासती होंगी।

आपकी सेवावृत्ति की प्रशंसा साध्वी श्री बाला जी नाम की एक महासतीजी को असह्य मालूम पड़ी। यद्यपि वे साध्वी अत्यंत बुद्धिमती थी, फिर भी उनकी प्रकृति में कुछ उग्रता थी। उन्होंने आपके ऊपर कई आरोप लगाने के प्रयत्न किए, पर सब निष्फल हुए।

**‘अत्यमेव जयते नानृतम्’** यह भारतीय ऋषियों की उद्घोषणा है। विजय हमेशा सत्य की हुआ करती है। असत्य के पैर कच्चे होते हैं और वह ज्यादा दिन नहीं टिक पाता। साध्वी श्री बाला जी के मन में पहले आपश्री प्रति कुछ डाह पैदा हो गई थी, परंतु आपकी शांति व सच्चाई के सामने वह ठहरी नहीं। जब आपके सद्व्यवहार से साध्वी श्री बाला जी का हृदय बदल गया, तब उन्होंने एक दिन समस्त साध्वियों के सामने कहा— “देखिए! मैंने आप समस्त साध्वियों के जीवन को टटोला है। आप में से कितनी ही तो अत्यंत वृद्धा हैं, कितनी ही युवतियाँ हैं, परंतु यह जो छोटी आनंद कुमारी जी हैं, ये दोनों में ही

अपनी प्रकृति को मिलाने वाली हैं। मैं कहती हूँ कि यही तुम्हारी संप्रदाय की नाक बनकर रहेगी। यही तुम्हारे संप्रदाय में सूर्य की तरह चमकेगी। यही तुम्हारे संप्रदाय का नाम उज्ज्वल करेगी।”

साध्वी श्री बाला जी ने तो आवेश में आकर यह कहा था, परंतु साध्वी श्री आनंद कुमारी जी के लिए उनका आवेश वरदान रूप सिद्ध हुआ। उनकी कोपयुक्त वाणी भी सच्ची सिद्ध हुई और साध्वी श्री आनंद कुमारी जी ने संप्रदाय का मुख उज्ज्वल कर दिया।

साध्वी श्री आनंद कुमारी जी ने भी उन साध्वी श्री बाला जी के वे वचन सुने, किंतु सुनकर अपने भाग्य को कोसा नहीं, वरन् कहा— “तथास्तु! आपकी वाणी सफल हो। आपके आशीर्वाद से मेरे अंदर वह शक्ति आए।”

संसार में कई लोग तो किसी के मुँह से अपने लिए अच्छी बात सुनकर कहने लगते हैं— “हमारे भाग्य में यह बात कहाँ लिखी है? हम तो भाग्यहीन हैं। हमारे अंदर यह गुण कैसे हो सकता है?” परंतु जो मनस्वी आत्मा उच्च प्रकृति की होती है, वह अपने लिए साधारण मनुष्य द्वारा कही हुई अच्छी बात को स्वीकार कर लेती है और कहती है— “आपकी जबान सही हो, ऐसा ही बनूँ।” साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. किसी की अच्छी बात को टुकराती नहीं थी। आपकी प्रकृति तो ऐसी थी कि कोई बुरी बात कह देता तो भी आप सुधार लेतीं और उसे उपकारी मानतीं। किसी के बिगड़े हुए काम को सुधारने का गुण आपके जीवन में समाया हुआ था। एक नीतिकार ने कहा है—

**उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे त्वय को गुणः ।  
अपकारिषु यः साधुः ऋ साधुः ऋद्भिकच्यते ।।**

अर्थात् उपकारियों पर जो सज्जनता दिखलाता है, उसकी साधुता (सज्जनता) में क्या विशेषता है? सत्पुरुष अपकार्यों पर भी सज्जनता रखने वाले को सज्जन कहते हैं।

आपकी वृत्ति प्रारंभ से ऐसी ही थी। आप अपकार करने वाले पर भी सज्जनता प्रदर्शित करती थीं। जावरा चातुर्मास में ही आपने 8 दिन की तपस्या (अठाई) की।

लंबी तपस्या में मन को काफी मारना पड़ता है। जैन धर्म में तपस्या का बड़ा महत्त्व बताया गया है। प्राचीन समय में भी बड़े-बड़े तपस्वी हो गए हैं। काली, महाकाली, कृष्णा जैसी बड़ी-बड़ी राजरानियों ने जैन धर्म में दीक्षित होकर लंबी-लंबी तपस्याएँ की थीं। आज भी तीन-तीन महीने तक की तपस्या करने वाले मौजूद हैं। तपस्या से शरीर के सारे अवयव साफ हो जाते हैं, आत्मबल भी बढ़ता है। अतः शारीरिक, मानसिक व धार्मिक तीनों ही दृष्टियों से तपस्या हितकर है।

आपकी अठाई बड़ी शांति से हुई। पारणे के दिन आपको बड़ी साध्वियाँ बहुत दूर शौच के लिए ले गईं। आप चली तो गई, पर आखिर शरीर तो शरीर ही है, वह तो अपनी मर्यादा तक ही काम करता है। उससे ज्यादा काम लेने पर कभी-कभी सारा ही काम अटका देता है और टस से मस नहीं होता।

जंगल से वापिस लौटते समय पैरों ने चलने से इनकार कर दिया। पैरों में गाँठें-सी हो गईं तो भी आप साहस करके किसी तरह से धीरे-धीरे चलने लगीं। मुँह से आपने यह नहीं कहा कि आप लोग ठहरिए! मैं आ रही हूँ। इसलिए कि कहीं आपके दूसरे कार्यों में हर्ज न हो जाए या मन को किसी तरह का कष्ट न हो। दूसरी आर्याजी म.सा. बहुत आगे चली गईं। साध्वी श्री चंपा जी म.सा. ने पीछे मुड़कर देखा कि आप धीरे-धीरे आ रही हैं। इससे उन्होंने पहले तो अनुमान लगाया कि किसी कारण से देर हो गई होगी। बाद में पारणे की याद आई तो उन्होंने कहा— “अब वहीं ठहर जाओ, मुझे माफ करना, तुम्हारे पारणे की बिलकुल भी याद नहीं रही। पहले तुम मना कर देती तो मैं तुम्हें इतनी दूर क्यों लाती?” साध्वी आनंद कुमारी जी किसी तरह आवेश में नहीं आईं। आपने शांतमुद्रा से नम्रतापूर्वक कहा— “तहत्ति! मैंने ही आपको कह दिया, उसके लिए मेरा अपराध क्षमा कीजिए। मैं साथ में नहीं आती तो आपको इतना कष्ट क्यों होता?” फिर वहाँ कुछ देर विश्राम करने के पश्चात् धीरे-धीरे आप साध्वियों के साथ उपाश्रय आईं।

नम्रता से किसी बात का उत्तर देने का गुण आपके जीवन में विशिष्ट था। आपकी नम्रता से सभी साध्वियाँ आप पर प्रसन्न रहती थीं। जावरा चातुर्मास सानंद संपन्न हुआ।

जावरा के चातुर्मास पश्चात् आपश्रीजी का आस-पास के क्षेत्रों में धर्म-प्रचार करते हुए जावद पधारना हुआ। यहाँ की बोली मालवा और मेवाड़ से कुछ भिन्नता रखती है। जावद को ग्राम तो नहीं कह सकते, यह शहर है। यहाँ बोहरा मुसलमानों के काफी घर हैं। जैनियों की इस शहर में काफी अच्छी धाक है। बड़े-बड़े आचार्यों के चातुर्मास यहाँ हुए हैं। पूज्य श्री गणेशलाल जी म.सा. के युवाचार्य पद महोत्सव का सौभाग्य जावद को ही मिला था। जावद में हिंदू तेली लोग भी जैन-मुनियों से खासा अच्छा संपर्क व भाव भक्ति रखते थे और उपदेश भी सुनते थे। जावद में उस समय पूज्य श्री उदयसागर जी म.सा. के भावी पट्टधर आचार्य श्री चौथमल जी म.सा. विराजित थे। उनका गौरवर्ण, विशाल भाल, सौम्य आकृति बड़ी ही प्रभावोत्पादक थी। साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. ने आपके दर्शन कर नेत्र पावन किए। आचार्यश्रीजी साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. की विचक्षणता, सेवावृत्ति, विनयभाव आदि गुणों से बड़े प्रभावित हुए। कहा है—

**गुणाः प्रियत्वैऽधिकृता न संकतवः।**

मनुष्य अपने गुणों से प्रिय बनता है, परिचय से नहीं। गुणों का धनी हर कहीं आदर पाता है।

साध्वी आनंद कुमारी जी गुणों के क्षेत्र में अलौकिक थीं। जावद में प्रतापगढ़ के कई भाई उपस्थित हुए। उन्होंने आपके विषय में पूज्यश्री के मुख से आशाजनक बातें सुनकर निश्चय किया कि इनका चातुर्मास इस साल अपने यहाँ ही कराना चाहिए। प्रतापगढ़ संघ की बार-बार विनती होती रही। आखिरकार बड़ी साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. के साथ आपने प्रतापगढ़ में चातुर्मास किया। जनता में धर्म-ध्यान की श्रद्धा व संघ के लोगों की एकता सराहनीय थी। आजकल के समान अपनी-अपनी खिचड़ी अलग नहीं पकाई जाती थी। एक-दूसरे का सदा सम्मान करते थे। आज जहाँ देखो वहाँ संघर्ष है, कलह है।

छोटे-बड़े की कोई मान-मर्यादा नहीं। हर आदमी नेता बनने की धुन में है। सब लोग सेनापति बनना चाहते हो तो भला सिपाही कौन बने ?

प्रतापगढ़ के लोगों के कर्ण-कुहरों में नवदीक्षित साध्वी श्री आनंद कुमारी जी के गुणों ने स्थान पा लिया था। आपके गुणों की पहुँच संघ के लोगों के हृदय तक हो गई। लोगों ने आपके गुणों से आकृष्ट होकर आपकी वाणी सुनने की इच्छा प्रकट की। आपको व्याख्यान देने का अत्याग्रह किया। आप कहने लगीं— “मैं तो एक नवदीक्षिता छोटी साध्वी हूँ। आप लोग महाभाग्यशालिनी बड़ी साध्वीवर्या जी का व्याख्यान सुनें।” पर वे लोग किसी तरह मानने को तैयार न हुए। अंततोगत्वा आपने व्याख्यान देना स्वीकार किया।

आपके प्रभावशाली व ओजस्वी व्याख्यानों को सुनकर विशाल मानवमेदिनी एकत्रित होने लगी। श्रोताओं पर अपनी वाणी का असर डालने की शक्ति आपमें उस समय भी थी। साध्वी श्री आनंद कुमारी जी के भजनों व धर्मकथाओं के संक्षिप्त प्रवचनों में ही भविष्य की एक विशिष्ट प्रवक्ता के चिह्न स्पष्टतः परिलक्षित हो रहे थे। आपके मुँह से चरित्र भाग सुनकर जनता मंत्रमुग्ध हो जाती। उन्हें आपकी वाणी में काफी रस आता। कहने वाले कहते हैं कि पूर्व के चातुर्मासों में इतना आनंद कभी नहीं आया। पूरा चातुर्मास धर्म भावना का केंद्र बना रहा।

चातुर्मास समाप्त होने के बाद आपको विहार कराने समय जनता की आँखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी। वहाँ के लोगों को सांत्वना देकर बड़े हर्ष के साथ आपने विदाई ली और समस्त साध्वीवर्याएँ साध्वी श्री चंपा जी म.सा. की सेवा में जावरा पधार गईं। वहाँ से अनेक क्षेत्रों को पावन करते हुए आपश्री जी बिनोता पहुँची। यहाँ के लोगों की चातुर्मास के लिए अत्यधिक विनती देखकर आपने सं. 1954 का चातुर्मास बिनोता में ही किया। चातुर्मास में गाँव के भद्र भाई-बहनों ने काफी धर्म-ध्यान किया। चौमासा सानंद संपन्न हुआ।

साभार – धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

– क्रमशः 



# बालमन में उपजे ज्ञान

-मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

जय जिनेंद्र पाठको!

बाल पीढ़ी में संस्कारों का सिंचन करना एक महान कार्य है, जो न केवल एक बच्चे के सुनहरे भविष्य का निर्माण करता है, बल्कि संपूर्ण समाज के लिए एक अशक्त पीढ़ी को तैयार करता है। अतः हम सभी का कर्तव्य है कि हम बच्चों को तो अच्छे संस्कार दें ही, साथ ही साथ स्वयं के आचार-विचार भी इतने शुद्ध रखें कि बच्चे कोई गलत मार्ग चुनने की सोचें भी नहीं।

सौरभ की माताजी स्वयं को आदर्श के ढाँचे में ढालते हुए बच्चों के भीतर संस्कारों व धर्म का भली-भाँति सिंचन कर रही हैं।

(सौरभ बच्चे सौरभ के घर एकत्रित हुए)

**सौरभ-**

नीलिमा, आज तुम उदास क्यों दिख रही हो?

**नीलिमा-**

उदास तो मैं हूँ क्योंकि मुझे णमोत्थु णं का पाठ याद नहीं हो रहा है। आज आंटी मुझसे नाराज हो जाएँगी।

(सौरभ की माताजी कमरे में प्रवेश करते हुए)

**सौरभ की माताजी-**

ये कोई स्कूल है या स्कूल की कोई परीक्षा है, जो मैं तुम्हें डाँटूँगी!

**पंकज-**

आंटी! मुझे भी थोड़ा-थोड़ा ही याद हुआ है, सो मैं भी डर रहा हूँ।

**सौरभ की माताजी-**

कोई बात नहीं बच्चो। मैं समझ सकती हूँ कि ये सब आपको याद करना असर नहीं है। आप अगली कक्षा में याद करके सुनाना।

**नितिन-**

आंटी! हमने याद नहीं किया तो आपको बिलकुल भी गुस्सा नहीं आया और ना ही आपने हमको डाँटा।

**सौरभ की माताजी-** (मुस्कुराते हुए) बच्चो! आप सभी ने प्रयास तो किया न! बस यही महत्त्वपूर्ण है। कोशिश करते रहने से एक दिन जरूर याद हो जाएगा।  
(सभी बच्चे खुश थे कि आंटी ने उनको कुछ नहीं कहा।)

**सौरभ-** पता है दोस्तो! हमारे आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व सभी चाबित्रात्माएँ प्रतिदिन समझाते हैं कि कुछ सीखना चाहिए, कुछ याद करना चाहिए, पढ़ना चाहिए। कई लोग ऐसा करते हैं और कुछ लोग नहीं करते, फिर भी वे महापुरुष सबको समान नजरों से देखते हैं।

(सभी बच्चों को आश्चर्य हो रहा था कि स्कूल में एक दिन का होमवर्क देनी से होने पर हमें सजा मिलती है और यहाँ तो सब कितना प्यार से बोल रहे हैं।)

**नीलिमा-** आंटी! आप आगे का पाठ भी दे दीजिए, हम आपको पूरा एक साथ सुना देंगे।

**सौरभ की माताजी-** आज का पाठ है **एयस्स नवमस्स का पाठ**, जिसे 'सामायिक पारने' का पाठ भी कहा जाता है।

## एयस्स नवमस्स (सामायिक पारने) का पाठ

एयस्स नवमस्स सामाइय-वयस्स पंच अइयारा  
जाणियव्वा न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-  
मणदुप्पणिहाणे वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे,  
सामाइयस्स सइ अकरणया, सामाइयस्स  
अणवड्डियस्स करणया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सामाइयं सम्भं कारणं, ण फासियं, ण पालियं,  
ण तीरियं, ण किट्टियं, ण ओहियं, ण आराहियं, आणाए  
अणुपालियं ण भवइ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सामायिक में दस मन के, दस वचन के, बारह काया के, इन कुल बत्तीस दोषों में से कोई दोष लगा हो तो तन्त्रस मिच्छा मि दुक्कडं।

सामायिक में त्री कथा (त्रियाँ 'पुरुष कथा' बोलें), भक्त (भोजन) कथा, देश कथा, राज कथा, इन चार कथाओं में से कोई कथा की हो तो तन्त्रस मिच्छा मि दुक्कडं।

सामायिक में आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा, परिग्रह संज्ञा, इन चार संज्ञाओं में से किसी भी संज्ञा का सेवन किया हो तो तन्त्रस मिच्छा मि दुक्कडं।

सामायिक में अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जानते-अजानते मन, वचन, काया से कोई दोष लगा हो तो तन्त्रस मिच्छा मि दुक्कडं।

सामायिक व्रत विधिपूर्वक न लिया हो, विधिपूर्वक पूर्ण न किया हो, विधि में कोई अविधि हुई हो तो तन्त्रस मिच्छा मि दुक्कडं।

सामायिक का पाठ बोलने में काना, मात्रा, अनुस्वार, पद, अक्षर, ह्रस्व, दीर्घ, न्यूनाधिक तथा विपरीत पढ़ने में आया हो तो अनंत सिद्ध केवली भगवान की साक्षी से तन्त्रस मिच्छा मि दुक्कडं।

(सौरभ की माताजी ने सभी बच्चों को पाठ का उच्चारण करवाया तथा साथ ही कुछ प्रतिज्ञाएँ भी करवाई।)

प्र  
ति  
ज्ञा

1. प्रतिदिन दोष रहित एक सामायिक विधिवत् ग्रहण करके करें।
2. प्रतिदिन सात णमोत्थु णं दें।
3. प्रतिदिन एक ग्लास धोवन पानी पीने का लक्ष्य रखें।

## रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक 'महत्तम निर्जरा' व 'आत्म जागृति से स्व-पर कल्याण' पर आधारित रहेगा।



सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव व संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नंबर हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक व सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ - लेख, कविता, भजन, कहानी आदि हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं।

उपर्युक्त विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाएँ, संस्मरण, कविताएँ, लेख, कहानियाँ या अन्य कोई ऐसी विषयवस्तु जो सर्वजन हिताय प्रकाशित की जा सकती हो तो इन रचनाओं का भी सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम



9314055390



news@sadhumargi.com





# नब हो संस्कारों की परीक्षा...

-गौतम पारख, राजनांदगाँव

परीक्षा, पहचान, पारदर्शिता ही तो संस्कारों की कसौटी का मापदंड है। संस्कारों को परीक्षा, पहचान व पारदर्शिता की कसौटी पर लाकर खड़ा किया जाता है तो समझना चाहिए कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का यथार्थ परिदृश्य सामने उपस्थित होने लगा है। प्रवचनों, लिखित आलेखों में संस्कारों को परिभाषित किया जा सकता है। ग्रंथों, उपनिषदों में संस्कार के विभिन्न पहलुओं का दिग्दर्शन हो सकता है, लेकिन यथार्थ के धरातल पर निजी जिंदगी में संस्कारों की परीक्षा, पहचान व पारदर्शिता में खरा उतरना कठिन ही नहीं, अपितु दुष्कर है। मुखौटे के अंदर की कहानी परीक्षा के क्षणों, पहचान के अवसरों और पारदर्शिता के मापदंड बिना जानी, पहचानी व मानी नहीं जा सकती है। कहते हैं कि मुखौटों व चेहरों के बीच की खाई ही धोखे को परिभाषित करती है। छल, कपट के गर्त में छिपी असलियत को समझने के लिए वक्त का इंतजार करना पड़ता है, लेकिन पुण्यवानी का उदय, चमकते भाग्य के सितारे के बीच प्रायः असलियत अंगड़ाई लेकर सो जाती है, मौन हो जाती है। इसलिए शास्त्रकारों ने कहा है कि जो दिखता हूँ वह मैं नहीं हूँ और जो मैं हूँ, वह दिखता नहीं है। कई बार सत्य की परीक्षा, कुर्बानी, साहस, वचनबद्धता के साथ सैद्धांतिक प्रतिबद्धता की पारदर्शिता को ही चौखट पर लाकर खड़ा कर देती है। यही तो विवशता है, कसौटी की चरम सीमा है। अहिंसा की परीक्षा रसलोलुपता, लोभ के साथ करुणा, दया, संवेदनशीलता को नापने लगती है। वास्तव में इन सबका परीक्षण होना ही चाहिए, तभी तो

सत्य उद्घाटित होता है। अचौर्य की परीक्षा लोभ के साथ नैतिकता, ईमानदारी, मानवता के शंखनाद करने की शक्ति को पहचानने लगती है। ब्रह्मचर्य की परीक्षा मानव के स्वाभाविक व ईश्वर द्वारा प्रदत्त स्त्री-पुरुष के बीच के आकर्षण की लक्ष्मण रेखा को रेखांकित करने लगती है। पतिव्रता धर्म को मर्यादित करने लगती है। परिग्रह की परीक्षा इच्छाओं को नियंत्रित करने, अतृप्ति की अखूट तृष्णा को संयमित करने, लोभ के आक्रमण से बचने की पहचान बनाने का, पुरुषार्थ करने का संदेश दे जाती है।

मैं सोचने लगा कि कहीं मैं चिंतन की गहराइयों की सीमा तो नहीं लाँघ गया। विषय तो यथार्थ है, विवेचना भी सत्य के काफी करीब है, लेकिन विषय जटिल हो गया है। अतः मैं पहचान शब्द की सरलतम व्याख्या की ओर बढ़ गया। स्वाध्याय के क्षणों में पढ़ा हुआ एक दृष्टांत स्मृतिपटल पर उभरकर सामने आ गया। इस दृष्टांत के अनुसार, एक बार तीन स्त्रियाँ पनघट पर पानी भर रही थीं। वे एक-दूसरे के बीच अपने पुत्रों के गुणों का बखान करते-करते नहीं थक रही थीं। पहली महिला बोली— “मेरा पुत्र बहुत बड़ा ज्योतिषी है, दूर-दूर से लोग उसके पास आते हैं।” दूसरी महिला बोली— “मेरा पुत्र पहलवान है, कुश्ती में कभी पराजय का मुँह

उसे नहीं देखना पड़ा।” तीसरी स्त्री मौन थी। दोनों महिलाओं ने उससे उसके पुत्र के विषय में जानना चाहा। वह बोली— “मेरा पुत्र कोई नामी व्यक्ति नहीं है। मेरी दृष्टि में वह मेरा प्रिय पुत्र है। वह मेरा व अपने पिताश्री का बहुत ध्यान रखता है।” इसके उपरांत तीनों महिलाएँ सिर पर घड़ा लिए अपने-अपने घरों की ओर लौट रही थीं। मार्ग में पहली स्त्री का पुत्र मिला। ज्योतिषी तो था ही। सो, उसी भाषा में माँ से कहने लगा— “माँ, मैं जा रहा हूँ। आपने शुभ मुहूर्त में पानी भरा है। सगुन अच्छा है। आज दिन अच्छा बीतेगा।” थोड़ी दूर जाने पर दूसरी स्त्री का पुत्र मिला। कहने लगा— “मैं कुशती करके आ रहा हूँ। पहली बार में ही प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ दिया। माँ, भूख लग रही है। घर पहुँचकर जल्दी से खाना लगाओ।” तभी तीसरी स्त्री का पुत्र मिला और अपनी माँ से कहने लगा— “माँ, मैं तो आ ही रहा था। तू पानी भरने क्यों चली गई?” ऐसा कहकर वह माँ से घड़ा लेकर चलने लगा। शेष दोनों स्त्रियाँ देखती रह गई।

मैं सोचने लगा कि यही तो संस्कारों की पहचान और परीक्षा है। कहते हैं कि गणेश जी को जब संसार की परिक्रमा करने को कहा गया तो उन्होंने तत्काल अपने माता-पिता की परिक्रमा की और कहने लगे कि माता-पिता की परिक्रमा में ही संसार की परिक्रमा समाहित है। संस्कारों की पहचान परीक्षा के बीच पारदर्शिता पर मेरा ध्यान आकर टिक गया।

मैंने सुना है कि स्वामी विवेकानंद जी अमेरिका प्रवास पर जाने से पूर्व माँ शारदा से आशीर्वाद लेने पहुँचे। आशीर्वाद देने के पहले उन्होंने उन्हें चाकू उठाकर देने को कहा। स्वामी विवेकानंद जी के चाकू उठाकर देने पर माँ ने कहा— “मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है। खूब प्रगति

करो और अमेरिका में जाकर भारत का नाम रोशन करो।” स्वामी विवेकानंद जी ने सहज ही माँ से पूछ लिया कि चाकू उठाकर देने से आशीर्वाद का क्या संबंध है? माँ शारदा बोली— “जब किसी साधारण व्यक्ति को चाकू उठाकर देने को कहा जाता है तो वह मूठ अपने हाथ में रखकर धार की तरफ वाला चाकू देता है, लेकिन तुमने धार अपने हाथ में रखी और मूठ वाला भाग मेरी तरफ किया। सच्चे साधु, सरल इंसान का यही लक्षण है कि वे स्वयं कष्टों को स्वीकारते हैं और दूसरों के कल्याण के लिए सदा तत्पर रहते हैं। इस छोटे से घटनाक्रम ने बड़े कार्य के लिए तुम्हारी पात्रता सिद्ध कर दी कि तुम सदैव

दूसरों का पथ प्रदर्शन करते रहोगे और स्वयं के आचरण, साधना से दूसरों के लिए आदर्श बन जाओगे। इसलिए तुम आशीर्वाद के हकदार हो।” मैं सोचने लगा कि संस्कारों की यही तो असली कसौटी, परीक्षा, पहचान व पारदर्शिता है।

प्रभु से हम प्रार्थना करें कि हे प्रभो! हमें भी स्वयं को तरासने, जानने समझने की शक्ति प्रदान करें। संस्कारों, सिद्धांतों, सत्यनिष्ठा, अहिंसा की कसौटी में हमें भी सदैव तौलते रहना ताकि हम भी सजग रह सकें।



## ‘ज्ञान से खिलता जीवन’

प्रश्नोत्तरी मई 2024 अंक के विजेता

- महेंद्र कुमार जी सामोता, राजसमंद (राज.)
- राधा जी जैन, उड़ीसा
- कोमल जी धर्मावत, उदयपुर (राज.)
- कपिल जी जैन, मुंबई (महा.)
- नमन जी जैन, जयपुर (राज.)



# क्षमा

## अमरत्व की औषधि

-पदमचंद गाँधी, जयपुर

सुनने में आता है कि जो अमृत को पी लेता है, वह अमर हो जाता है, अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। जैनदर्शन इसे नहीं मानता क्योंकि जिसने जन्म लिया है, वह मृत्यु का वरण निश्चित रूप से करता है। यह सत्य है कि जिसने क्षमा की अमृतरूपी औषधि का पान किया है, वह निश्चित रूप से अमर हो जाता है और जन्म-मरण के बंधनों से मुक्त हो जाता है। **श्री उत्तराध्ययन सूत्र** अध्ययन 26 स्पष्ट करता है कि जिसकी आत्मा निर्मल हो जाती है, पवित्र हो जाती है, कषायमुक्त हो जाती है और जो क्षमा के गुणों को अपनाता है, आचरित करता है, जिनवाणी को श्रवण करता है, क्षमा का प्रभाव उसके जीवन को परिवर्तित कर देता है। अतः स्पष्ट है **'क्षमा'** ही अमरत्व की औषधि है और अमर बनने का मंत्र भी।

आज देखने में आता है **'क्षमा'** तो माँगी, लेकिन क्षार नहीं गया, क्योंकि हमने केवल होठों से क्षमा माँगी। हृदय से संवेदनाओं और अहोभाव के साथ क्षमा नहीं माँगी। याद रखो, हृदय से माँगी गई **'क्षमा'** अमृत है। इसमें दूसरों की कमियों व भूलों को देखने का स्थान नहीं होता। इसमें कोई शर्त नहीं होती कि सामने वाला भी आपको क्षमा करे ही। क्षमा में केवल स्नेह व मैत्रीभाव होता है। जहाँ मैत्रीभाव होता है वहाँ कोई शत्रु नहीं होता। मन में खार होता है, कुटिलता, मलिनता रहती है, तो वह

स्वयं को ही खाती रहती है। कवि ने सही कहा है—

**अमृत दिया पर अमर न हुआ, पीने की रीत न जानी।  
या तो अमृत घट में न गया, या तूने पीया पानी।।**

अनुभवी ने कहा है—“हे जीव! तुमने क्षमा माँगी, फिर भी मन में राग-द्वेष रूपी कषाय है तो सच्ची क्षमा नहीं हो सकती। तुझे क्षमापना का सुनहरा अवसर मिला है, सभी जीवों के साथ मैत्रीभाव रखने का साधन प्राप्त हुआ है, फिर भी तेरे हृदय में क्रोध की होली का शमन नहीं हुआ है। अतः सोच कि क्षमा का अवसर मिला यह तेरा सौभाग्य है, लेकिन क्षमा की सच्ची रीत को नहीं समझा यह तेरा दुर्भाग्य है।” **'खमत खामणा'**, **'मिच्छा मि दुक्कडं'** कहने मात्र से क्षमा नहीं होती। यह तो मात्र औपचारिकता है। सांवत्सरिक प्रतिक्रमण के बाद चौरासी लाख जीव योनि से क्षमायाचना का प्रावधान है। यह मात्र **'लिप्स पैथी'** रह गई है, क्योंकि क्षमा अंतःकरण से, अंतर्भाव से नहीं होती। जिनसे वास्तव में क्षमा माँगनी है, वहाँ तक तो हम पहुँच ही नहीं पाते हैं, क्योंकि हमारा अभिमान, हमारा अहं बीच में दीवार बनकर आ जाता है। आपसी रंजिश, दुश्मनी, बीच में आ जाती है और मैत्रीभाव नदारद हो जाता है।

अतः हे देवानुप्रियो! **'क्षमा'** के अमरत्व की औषधि तभी सिद्ध होती है, जब दवा पीए और दर्दी का

दर्द मिट जाए अर्थात् आत्मा का खार क्षीण हो जाए, अभिमान गल जाए, मैत्रीभाव बढ़ जाए। प्रभु पार्श्वनाथ के भवों में नौ भवों तक कमठ ने उपसर्ग दिए, प्रभु ने क्षमा कर दिए। प्रभु महावीर ने संगम देव के, गौशालक के, चंडकौशिक के कितने ही उपसर्ग सहे। वे चाहते तो विरोध कर सकते थे, लेकिन क्षमाभाव से, करुणाभाव से उन्हें क्षमा कर दिया। वे अमरत्व को, मोक्ष को पाना चाहते थे, इसलिए उन्हें भी अपनी शरण में लिया, त्राण व रक्षण किया, क्षमा का दान दिया और सिद्ध किया कि क्षमा ही मोक्ष का द्वार है। महासती चंदनबाला और मृगावती जी को याद करो। इन दोनों ने अपनी भूलों का प्रायश्चित्त किया और एक-दूसरे से क्षमा माँगी तथा क्षमा दी, जिससे दोनों को केवलज्ञान प्राप्त हो गया।

### क्षमा शत्रुता का अंत करती है :

क्षमा ऐसा अमृत है, जो शत्रु में स्थित शत्रुता को समाप्त करता है। प्रेम का पानी पिलाओ, क्षमा का शरबत दो और प्रीति के पुष्पों से स्वागत करो, इससे शत्रु चरणों में लौटेगा, शत्रुता दफन हो जाएगी और मित्रता का स्नेह सध जाएगा। राजा उदायन और चंडप्रद्योतक के बीच मंदसौर में मात्र दासी के लिए युद्ध हुआ। उदायन ने चंडप्रद्योतक को कैद कर लिया। पर्युषण पर्व सामने था। उदायन ने प्रतिक्रमण के बाद चंडप्रद्योतक से क्षमा माँगी तब चंडप्रद्योतक ने कहा—“बेड़ियों में बाँध कर क्यों क्षमा माँगते हो?” राजा उदायन ने प्रातः पौषध पालने के बाद बेड़ियों को खोलकर उसे क्षमादान दिया और अपनी पुत्री का विवाह भी उसके साथ कर दिया। यह कथानक सिद्ध करता है कि शत्रु की शत्रुता को भी क्षमा की औषधि से खत्म किया जा सकता है।

**अंतकृद्दशांग सूत्र** स्पष्ट करता है कि एक नवयुवक किशोरवय के बाद नवदीक्षित बन जाता है। कृष्ण उसकी शादी के लिए सोमा नाम की कन्या को लेकर आते हैं, लेकिन वह नवयुवक उनका अनुज गजसुकमाल प्रभु अरिष्टनेमि से प्रव्रज्या ग्रहण कर उसी

दिन महाकाल श्मशान में भिक्षु महा प्रतिमा धारण कर लेता है। संयोग से सोमिल ब्राह्मण (श्वसुर) उन्हें देख लेता है और उसका अनंतानुबंधी क्रोध जागृत हो जाता है। वह सोमिल ब्राह्मण नवदीक्षित मुनि के केश रहित सिर पर गिली मिट्टी की पाल बाँधकर धधकते अँगारे उसमें रख देता है। भंयकर वेदना को भी गजसुकमाल समभाव से सहन कर लेते हैं। गजसुकमाल चाहते तो बदला ले सकते थे, प्रतिकार कर सकते थे। कृष्ण उनका भाई था, धनबल, बाहुबल सभी उनके पास था, लेकिन उन्हें अपना भव बिगाड़ना नहीं था। उन्होंने सोमिल को अपना मददगार माना। समताभाव से उसे क्षमा कर दिया।

### क्षमा परिवार की पृष्ठभूमि है :

क्षमा व संस्कार के गुणों के कारण कई परिवारों की गृहस्थी बची है। इस गुण के अभाव में परिवार टूट रहे हैं, रिश्तों में दरारें आ रही हैं, क्योंकि उनका अहं टकराता है, जिसका परिणाम है विखंडन। एक नवदंपति ने प्रेम विवाह किया, जो उसकी माता को नहीं भाया। बेटा-बहू 25 वर्षों तक माँ से अलग रहे। दोनों संस्कारी थे। जैन संतों के चातुर्मास में बहू उपवास करते-करते 25 उपवास तक पहुँच गई। उग्र तपस्या का विचार और चातुर्मास का समय। पति ने बार-बार पारणे का निवेदन किया, अभिग्रह जानने का प्रयास किया, कोई माँग, शर्त को पूरा करने की जानकारी चाही, लेकिन गाड़ी, बंगला, सोना-चाँदी सभी उसके लिए तुच्छ था। बस एक ही अभिग्रह था कि मेरी सासू माँ के हाथों से पारणा करूँ, यही मेरी भावना है। खींचा-तानी में 30 दिन उपवास हो गए। आखिर पति ने माँ के यहाँ ले जाने की बात स्वीकार की। पति के मन में फिर भी टीस थी, शंका थी। वह बार-बार गाड़ी निकाले, अंदर रखे। ऐसा करते-करते शाम हो गई और बहू ने 31वें उपवास के प्रत्याख्यान कर लिए। अंततः पति-पत्नी दोनों माँ के पास जाकर क्षमायाचना कर पारणा करते हैं। माँ की ममता का आँचल भर जाता है। परिवार का मिलन होता है और माँ उन्हें क्षमा कर देती

है। यह है 'क्षमा की औषधि'।

### क्षमा है जीवनदान :

क्षमा के द्वारा जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए 84 लाख जीव योनियों से क्षमायाचना करते हैं। किसी मनुष्य को बिना सच जाने मृत्युदंड की सजा दे दी जाए तो बड़ा दर्द होता है। दिल्ली के बादशाह की शहजादी के गर्भ ठहर जाता है। बादशाह ने उसे कुलटा कहा और फाँसी की सजा दे दी। शहजादी बार-बार अपने को निर्दोष बता रही थी, पर बादशाह नहीं माना। पुत्री ने अनुनय-विनय से कहा कि मैं निर्दोष हूँ। मैंने कोई पाप नहीं किया। मैंने कोई बुरा काम नहीं किया। यह कैसे हो गया मैं नहीं जानती। बादशाह के समक्ष प्रस्तुत करने को साक्ष्य उसके पास नहीं थे। बादशाह ने फाँसी की सजा को बरकरार रखा। दरबार में सन्नाटा छा गया। बादशाह के एक मित्र थे खींक्सर जी भंडारी। उन्होंने अपने गुरु के समक्ष पूरा दृष्टांत रखा। गुरु ने गर्भधारण का कारण ढूँढ़ा और कहा कि गर्भ 5 कारणों से ठहरता है— मैथुन क्रिया से ठहरता है तो हाड़-मांस, शरीर संरचना बनती है अन्यथा वह केवल मांस का लौथड़ा ही रहता है। अतः गर्भकाल पूर्ण करके देखें। मुनि की बात से बादशाह सहमत हो गए। 9 माह बाद मांस का लौथड़ा ही उत्पन्न हुआ और अंतर्मुहूर्त में समाप्त हो गया। बादशाह की खुशी का पार नहीं रहा और निर्दोष का जीवन बच गया। पुत्री से क्षमा माँगी और उसका जीवन बच गया। यह है जैन धर्म में क्षमा की प्रभावना।

### शैतान को संत बनाती है 'क्षमा' :

प्रायश्चित्त का नाम ही 'क्षमा' है। अपने पापों का जो प्रायश्चित्त करता है वही क्षमा की पात्रता को जागृत करता है। एक विशाल काया वाला, धरती को कँपायमान करने वाला व्यक्ति नगर के बाहर बैठा हुआ अपने पापों का प्रायश्चित्त करता है, वह कहता है— 'हे भगवान! मेरा क्या होगा? मुझे ऐसी कुमति कहाँ से आई? मैं बड़ा

पापी हूँ। इस दुनिया में मुझ जैसा पापी और दुष्ट कोई नहीं होगा। हे मेरे देव! मैंने जीवनभर भंयकर घोर अपराध किए हैं। अब तू मुझे बचा ले।' इस प्रकार एक कदावर दिखता आदमी एकदम निर्बल व निढाल होकर आँसू बहाता हुआ विलाप कर रहा था। उसके पश्चात्ताप की सच्चाई आकाश तक पहुँच गई। उसी समय दो चारण मुनि आकाश मार्ग से नीचे उतरे। मुनियों को देखते ही वह दौड़ा और चरणों में गिरकर बोला— 'हे आत्मन! मुझे बचा लो, मेरी रक्षा करो।' संतों का हृदय करुणा से भरा था। उनसे उसका दुःख देखा नहीं गया। कारण स्पष्ट करते हुए व्यक्ति बोला— 'हे मुनिवर! मैं कुख्यात लुटेरा हूँ। मेरा नाम सुनकर लोग काँप जाते हैं। जिसके घर को लूटने जाता हूँ उसे पूरी तरह साफ कर देता हूँ। तलवार की धार से उस परिवार वालों के दो टुकड़े कर देता हूँ। मैंने कइयों को लूटा है, लेकिन आज की लूट ने मुझे द्रवित कर दिया। उसके लिए मेरी आत्मा रो रही है। आज मैंने गरीब बाह्यणी के घर को लूटा और बच्चों की थाली में परोसी हुई खीर छीनकर खा गया। वह खीर पड़ोस से उधार लाकर बच्चों की इच्छापूर्ति के लिए बनाई गई थी। माँ के विरोध करने पर उसके शरीर के दो टुकड़े कर दिए। पति के विरोध पर उसके भी शरीर के दो टुकड़े कर दिए। कमजोर गाय ने विरोध किया तो उसको भी मार गिराया। बच्चे चीख-पुकारकर कहने लगे कि हमें अब जिंदा नहीं रहना है, हमें भी मार दो। वह चीख मेरे कानों में बार-बार गूँजती है और उस दृश्य को देखकर मैं द्रवित हो रहा हूँ। मेरे हाथ से तलवार गिर गई, हृदय काँपने लगा, वह दृश्य देखा नहीं जाता। हे मुनिवर! मैं लुटेरा नहीं था। मैं ब्राह्मण समुद्रदत्त और समुद्रदत्ता का लाडला व इकलौता पुत्र हूँ। बचपन से शैतानियाँ करना, छीनना-झपटना मेरी आदत बन गई थी। धीरे-धीरे मैं चोरी करना सीख गया और वैसे ही साथी मिल गए। राजा ने दंड दिया व देश निकाला दे दिया। देश निकाले के बाद भी चोरों का समूह मिल गया और मैं उनका सरदार बन गया।'

प्रायश्चित्त की अग्नि में जलता हुआ व्यक्ति सोचता है कि किए हुए कर्म मुझे चुभते हैं। हृदय रोता है। जीना चाहता हूँ तो जिया न जाए। मरना चाहता हूँ तो मरा न जाए। किसी जन्म में हँस के बाँधे थे कर्म, आज आँसुओं से नैना भरे हैं। आज सौभाग्य से आपके दर्शन हो गए। मुझे रास्ता बताओ। मुनि के कहने पर उसने संयम ग्रहण कर अपना जीवन सुधारा। यह था प्रायश्चित्त का प्रभाव।

1141 लोगों की हत्या करने वाला अर्जुन मालाकार, प्रभु महावीर की कृपा से तथा सेठ सुदर्शन के सान्निध्य से प्रायश्चित्त करता है। समता भाव से मिट्टी, कंकर, पत्थर को ग्रहण कर सोचता है कि मैंने किसी के पति को मारा है, भाई को मारा है, माँ को मारा है, पिता को मारा है। ये सभी तो केवल मुझे दुत्कार रहे हैं, मार तो नहीं रहे हैं। ऐसी भावना रखते हुए क्रोध को त्यागकर समता भाव में आकर अपना जीवन सुधारा।

### क्षमा अनुकंपा व करुणा को जगाती है :

जिसके मन में दया हो, करुणा हो, मैत्री हो, अनुकंपा हो, संवेदनाएँ हो, वह क्षमा व समत्व भाव की पात्रता रखता है। दृष्टांत है— भूधर जी महाराज साहब ने कालू गाँव (नागौर, राज.) की नदी की रेत में ध्यान लगाया। एक रामा नाम के जाट ने मुनिश्री पर फरसा, कुदाल व लाठी से प्रहार कर दिया। खून बह चला। उसका भ्रम था कि ‘‘यो मोडियो ही वर्षा ने रोकण वालो है।’’ कारण कि वर्षावास में संत विचरण नहीं करते। अपनी साधना में लीन रहते हैं। खून को देखकर लोगों की भीड़ जमा हो गई। रामा जाट घबराया। संत का हृदय जाट की दशा देखकर द्रवित हो गया। उनके हृदय में क्षमा बसी हुई थी। उनका हृदय मक्खन की तरह कोमल व मुलायम था। उन्होंने रामा जाट को क्षमा कर दिया।

सूत्रकृतांग सूत्र में प्रभु महावीर ने यहाँ तक कहा है—  
**‘‘हम्मभाणो न कुपेज्जा, तच्चभाणो न केज्जे’’**

अर्थात् साधक पुरुष मारने पर भी क्रोध न करे, गाली देने पर भी द्वेष नहीं करे। इसी आदर्श पर भूधर जी ने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली। जब तक रामा जाट को बंधनमुक्त नहीं किया जाएगा, मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा। तब कवि ने कहा—

**लाठी फरसा शीष पे, चोट सही बहुवार।  
क्षमा करी फिर भी उन्हें, भूधर सौ-सौ बार।।**

अतः ये कथन स्पष्ट करता है— **‘‘Forgiveness is the noblest revenge’’** अर्थात् क्षमा से अच्छा कोई बदला नहीं है।

इस प्रकार अनेक दृष्टांत क्षमा को अमरत्व की औषधि स्पष्ट करते हैं। क्षमा जीवन का अमृत है। क्षमा से बढ़कर इस संसार में मुक्त करने वाला कोई तप नहीं है। क्षमा जीवन मैत्री का प्रथम सोपान तथा आत्मशुद्धि का द्वार है, जिसके द्वारा कटुता, वैमनस्यता, राग-द्वेष मिटाकर आत्मा को शुद्ध, पवित्र, निर्मल व ज्योतिर्मय बनाया जा सकता है।

मनुस्मृति के श्लोक 6.33 में धर्म के दस लक्षणों में क्षमा को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है, क्योंकि क्षमा ही कषायमुक्ति की परम औषधि है। इसलिए क्रोध को क्षमा के द्वारा शांत किया जा सकता है। क्षमा अर्थात् सहनशील होना और क्रोध को पैदा न होने देना तथा उत्पन्न क्रोध को विवेक व नम्रता से निष्फल कर डालना। एक विद्वान् ने स्पष्ट किया है— **‘‘Who has not forgiven an enemy, he has not yet tasted one of the prime enjoyment of the life’’** अर्थात् जिसने अपने जीवन में शत्रु को क्षमा नहीं की, उसने जीवन में अभी तक क्षमा के अमृत को नहीं चखा है।

पर्युषण पर्व का परिणाम क्षमा है। इन आठ दिनों में दी गई जिनवाणी रूपी औषधि ही आपके जीवन को अमरत्व प्रदान करने वाली है। अतः अपने जीवन में क्षमा के गुणों को विकसित कर स्वयं को धन्य बनाएँ। औपचारिकता से नहीं, यथार्थ में क्षमा माँगे और क्षमा करें।





## सामूहिक भोज रखता है सुपात्रदान से वंचित

-सुभाष कोटड़िया, शहादा/पुणे

शेषकाल में अथवा चातुर्मासार्थ हमारे गाँव/शहर में साधु-संत पधारते हैं और हमारी अनंत पुण्यवानी से हमें सुपात्रदान का अवसर प्राप्त होता है। धन्य हैं वे श्रावक-श्राविकाएँ, जो इन महापुरुषों का सान्निध्य, दर्शन पाते हैं, उनसे जिनवाणी श्रवण कर जीवन में उसे आत्मसात करते हैं। वे पधारे हुए चारित्रात्माओं को निर्दोष आहार बहराकर सुपात्रदान से पुण्य का बंध कर लेते हैं और अपना जीवन धन्य बना लेते हैं।

आज के आधुनिक परिवेश में कहीं हम हमारे साधु-संतों के प्रति अपना कर्तव्य निभाने से चूक तो नहीं रहे? विवेक नहीं रखने से हमारे घर असूझते तो नहीं हो रहे हैं? दूर स्थान से परीषह सहते हुए हमारे घर पधारे संत-महापुरुष बिना गोचरी के वापिस लौट जाने पर हमारे मन में पीड़ा होती भी है या नहीं? माना कि कई बार रसोई न भी बनी हो, पर कुछ न कुछ सूझता आहार तो हर घर में होता ही है ना? हम सहज रूप में उसे बहराकर पुण्य का अर्जन तो कर ही सकते हैं। आज परिवारों का रहन-सहन और लाइफ स्टाइल पूरी तरह बदल गई है। होटलों में जन्मदिन पार्टी, एनिवर्सरी पार्टी, किटी पार्टी में जाना हमारी बहनों व भाइयों के लिए आम बात हो गई

है। घर-सगरी भोज का इनविटेशन मिलने पर घर के सारे सदस्य सामूहिक भोज में चले जाते हैं और रसोईघर को विराम मिल जाता है।

एक समय था जब हमारे पुरखों की रसोई का एक ही सामूहिक चौका लगता था, ताकि संत-महापुरुषों के पधारने पर सुपात्रदान का लाभ हमें मिल सके। कोई भी चारित्रात्मा गोचरी लिए बिना हमारे द्वार से वापस नहीं लौटती थीं। श्रावक-श्राविकाएँ भी पूरी यतना व विवेक रखते थे और चारित्रात्माओं के प्रति उनके मन में अहोभाव रहता था। परंतु आज की अवस्था देखकर मन व्यथित हो जाता है। कहीं हम अपने कर्तव्यों, पुरखों के संस्कारों और जिनवाणी से दूर तो नहीं भाग रहे हैं?

बंधुओ! सोचिए कितने कठिन पलों में अपने सीने पर पत्थर रखकर वीर माता-पिता, परिजन अपने कलेजे के कोर को जिनशासन में समर्पित करते हैं। भगवान ने हम श्रावक-श्राविकाओं को **अम्मा-पिया** की उपमा प्रदान की है। क्या इन चारित्रात्माओं के निर्दोष संयम की पालना में सहयोगी बनना, उनकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य नहीं है? सहज रूप में मिलने वाली इस पुण्यवानी से हम

वंचित तो नहीं हो रहे? याद कीजिए संगम, चंदनबाला, श्रेयांश, सेठ सुदर्शन के कथानक को, जिन्होंने सुपात्रदान देकर पुण्य अर्जित किया था। आज के समय में साधु-संतों के प्रति अहोभाव, विनय, विवेक का अभाव दिखाई देता है। हम अपने कर्तव्य से चूक रहे हैं। इस पर चिंतन जरूर होना चाहिए।

इन विचारों से किसी संघ या व्यक्ति विशेष के मन को दुखाना मेरा उद्देश्य नहीं है। हमारे आगमों द्वारा निर्देशित एवं पुरखों द्वारा संचालित व्यवस्था पहले की तरह अक्षुण्ण रहे। हमारी आने वाली पीढ़ी भी अपना कर्तव्य समझे। **संप्रदाय केवल व्यवस्था मात्र है। किसी भी संप्रदाय के संत-सतियाँजी म.सा. को अहोभाव से बहरावें। उसकी विहार सेवा में पहुँचें। यही भाव श्रद्धेय आचार्य भगवन् पूज्य श्री**



**रामलाल जी म.सा. भी फरमाते हैं कि चारित्रात्माओं को सुपात्रदान, शय्यातर दान से कभी पीछे नहीं हटें। महापुरुषों के वचनों को हम विनय भाव से स्वीकार करें, यही अपेक्षा रखता हूँ।**

बंधुओ! देश में अभी विषम परिस्थितियाँ चल रही हैं। ऐसे में हमारे चारित्रात्माओं के निर्दोष संयम पालन में तथा उनकी सुरक्षा में सहयोग बनाए रखना न केवल हमारा कर्तव्य है, बल्कि जिम्मेदारी भी है। अनंतानंत पुण्यवानी से हमने जैन धर्म पाया है। उसका हम सभी उचित निर्वाह करें, पालन करें। अपने कर्तव्य व जिम्मेदारी का बोध सभी को कराना ही मेरे इस भाव-प्रवाह का उद्देश्य है। मेरे लिखने से किसी के कोमल हृदय को आघात पहुँचा हो तो अंतर्मन से क्षमायाचना करता हूँ।



**भक्ति रस**

## पुकार

**-पायल वया, बंबोरा**

जो किसी प्राणी को मारे, वो शैतान है इनसान नहीं।  
मरे हुए को खाए क्यूँ, ये पेट है श्मशान नहीं।  
मरे हुए को खाना क्यूँ, वो भी तो इक जीव था।

जो काँटा कोई चुभ जाए, तड़पता हुआ तू चिल्लाए,  
काटे तू तलवारों से, क्यूँ चीख ना उनकी सुन पाए।  
दर्द उन्हें भी होता है, वो जीवित हैं बेजान नहीं।  
जो किसी प्राणी को मारे, वो शैतान है इनसान नहीं।1।।

हर इक की अपनी सत्ता है, सबका अपना वजूद है,  
सब हैं जीते अपने लिए, किसी और के लिए नहीं मौजूद हैं।  
सभी को जाया है उसने, कौन यहाँ प्रभु की संतान नहीं।  
जो किसी प्राणी को मारे, वो शैतान है इनसान नहीं।2।।

हय धर्म में हय मजाहब में, बाइबिल, गीता और बुखान में,  
इक है आत्मा, इक ही तरह है, हय पशु और इन्सान में।  
अहिंसा का निर्झर सब में, हिंसा का नामोनिशान नहीं,  
जो किसी प्राणी को मारे, वो शैतान है इनसान नहीं।3।।

नाना कहो या राम कहा या कहो तुम महावीर,  
'जीओ और जीने दो' यही कहे महावीर।  
अभय दो हर प्राणी को, अभय-सा कोई दान नहीं,  
जो किसी प्राणी को मारे, वो शैतान है इनसान नहीं।4।।

जीवन उनका भी अनमोल है, पशुओं का कोई जोर नहीं,  
वो मूक जीव भी क्या जानते, इनसान इस लायक नहीं।  
इनसान को इनसान बनाना, ये कोई पशु का काम नहीं,  
अभय दो पशुओं को, भगवान से डरना आसान नहीं।  
जो किसी प्राणी को मारे, वो शैतान है इनसान नहीं।5।।





# जैन दर्शन



बनाम

# आस्तिक दर्शन

-डॉ. जवाहरलाल नाहटा, बरपेठा रोड

भारतीय दर्शनशास्त्र में जैन दर्शन को नास्तिक दर्शन की श्रेणी में रखा गया है। वैसे नास्तिक का सामान्य अर्थ उस व्यक्ति से है जो ईश्वर, आत्मा व पुनर्जन्म में विश्वास नहीं रखता। किंतु यहाँ नास्तिक का अर्थ उन दर्शनों से है जो वेदों को प्रमाण नहीं मानता। जैन व बौद्ध दर्शन वेदों को शाश्वत व प्रमाण नहीं मानते और वैदिक कर्मकांडों का विरोध करते हैं। इसलिए इन्हें नास्तिक दर्शन कहा जाता है।

वैदिक परंपरा में आने वाले छः दर्शन—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा व वेदांत, ये आस्तिक दर्शन माने जाते हैं। इनमें ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया है, किंतु चार्वाक, जैन व बौद्ध दर्शनों में ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार किया है। चार्वाक तो पूर्णरूपेण भौतिकवादी दर्शन है। वह न ईश्वर को मानता है, न आत्मा को और न ही पुनर्जन्म को। इसलिए इसे नास्तिक दर्शन कहना उचित है, किंतु जैन व बौद्ध आत्मा को भी मानते हैं और पुनर्जन्म को भी, अतः इनको निरीश्वर दर्शन कह सकते हैं, किंतु नास्तिक नहीं।

सभी वैदिक दर्शनों में ईश्वर इस सृष्टि का सृजन करता है, उसका पालन करता है और प्रयोजन नहीं रहने पर उसका हरण करता है। ईश्वर इस सृष्टि का निमित्त व उपादान कारण है अर्थात् ईश्वर इस सृष्टि का निर्माण करता है और अपने ही तत्त्व से करता है। जैन दर्शन सृष्टि के लोक व अलोक को अनादि अनंत मानता है। न कोई इसकी रचना करता है, न इसकी रचना का कोई समय विशेष है। जीव-अजीवमय ये लोक-अलोक तो बस

चलते आ रहे हैं और अनंकाल तक चलते रहेंगे। अंतरिक्ष विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग भी ऐसा मानते थे।

सभी आस्तिक दर्शन ईश्वर को सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापी तत्त्व मानते हैं। सभी प्राणियों में ईश्वर का अंश विद्यमान रहता है। यह अंश व अंशी का संबंध है। मुक्ति के समय अंश का अंशी में विलय हो जाता है। कबीरदास जी इसे इस तरह समझाते हैं -

*जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।  
फूटा कुंभ जल जल ही समाया, यह तथ्य कह्यो ज्ञानी॥*

इसी से एकेश्वरवाद व सर्वेश्वरवाद की विचारधाराएँ विकसित हुईं।

जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक जीव में एक स्वतंत्र आत्मा होती है। सारे कर्मों का क्षय करके जब आत्मा अपने शुद्ध चेतन रूप में स्वतंत्र हो जाती है तो इसी को मुक्ति कहते हैं। यह जीव की सिद्धावस्था कहलाती है। अन्य दर्शनों के अनुसार एक ही परमतत्त्व परमात्मा का अस्तित्व है, किंतु जैन दर्शन के अनुसार अनेकानेक आत्माएँ हैं। यह लोक जीव व अजीव तत्त्वों से ठसाठस भरा हुआ है।

अन्य दर्शन ईश्वर को परम करुणामय मानते हैं। उसकी कृपा व करुणा से महापापी भी कष्टों से छुटकारा पाकर मुक्ति पा जाते हैं। अतः ईश्वर भक्ति, मुक्ति का सहज साधन है। जैन दर्शन के अनुसार कर्मों की निर्जरा मुक्ति का साधन है। अपने किए हुए कर्म अच्छे हों या बुरे, उनको भोगे बिना मुक्ति संभव नहीं। त्याग व तपस्या से किए हुए कर्मों का भोग शिथिल हो सकता है या उदीरणा हो सकती है अर्थात् समय से पहले इनको भोगना संभव

हो सकता है, किंतु इन्हें बिना भोगे छुटकारा नहीं। भक्ति से भाव शुद्धि होती है, जो बुरे कर्मों के प्रवाह को रोक सकती है, किंतु केवल भक्ति करके मुक्त हो जाए ऐसा जैन धर्म-दर्शन नहीं मानता।

अन्य आस्तिक दर्शनों की तरह जैन दर्शन भी पुनर्जन्म को मानता है। अपने कर्मों के अनुसार जीवात्मा अनेकानेक योनियों में जन्म धारण करती है। कर्मों की संपूर्ण निर्जरा न होने तक यह आवागमन चलता रहता है। महापुरुषों व जैन तीर्थंकरों को भी जन्म-जन्मांतर तक

अपने कर्मों को भोगना पड़ा। सिद्धावस्था प्राप्त करने के बाद जीव जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है।

जैन चारित्र साधना में अहिंसा सर्वोपरि है। जैन शास्त्रों में अहिंसा को परमधर्म मानकर इसका अति सूक्ष्म निदर्शन किया है। एककोशीय एकेंद्रिय जीव, जो दिखाई नहीं देते, उनकी हिंसा भी नहीं हो, ऐसा जीवन जीने को प्रेरित किया जाता है। इतनी सूक्ष्म दृष्टि से अहिंसा का पालन जैन दर्शन के अलावा संसार के किसी भी धर्म-दर्शन में नहीं मिलता।



## भक्ति रस

# पंच परमेष्ठी वंदन

—संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

प्रकृति का रंग, संस्कृति के संग,  
अंतरंग चातुर्मास में, छाएगी उमंग ही उमंग।  
आया चातुर्मास तो, मौसम हुआ सुहाना,  
रंग-बिरंगे पुष्प खिले, हर दिल हुआ धर्म दीवाना॥

मालती, मोगरा, रजनीगंधा का,  
स्वच्छ सफेद रंग।  
अरिहंतों का प्रतीक बन, बिखेर रहा,  
चहुँओर भक्ति की विलग सुगंध।  
झूम-झूमकर श्वेत सुमन,  
मानो जप रहे नमो अरिहंतांगं, नमो अरिहंतांगं॥

चटक लाल गुडहल और पलाश,  
गुलाब भी हो रहा सुख लाल।  
धनंत सिद्धों का सुमिरण कर रहा हो जैसे,  
मन में उड़ रहा श्रद्धा का धीर गुलाल।  
ताल में ताल मिलाकर मानो,  
जाप चल रहा हो नमो सिद्धांगं, नमो सिद्धांगं॥

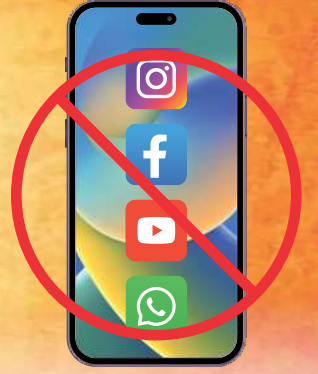
गैला, सरसों और सूरखमुखी धार,  
पीत वस्त्र में सब ध्वज कर।  
स्तुति कर रहे धाचार्यों की जैसे,  
श्रद्धालुगण भक्ति रस में झूम-झूमकर।  
हैं सूरख सब धाचार्य हमार,  
जाप जापो वदो धारारियांगं, वदो धारारियांगं॥

हरे रंग की ओढ़ के चादर,  
हरियाली से आच्छादित पहाड़।  
गुणगान कर रहे हों जैसे,  
उपाध्याय जी आप तो हैं ज्ञान के भंडार।  
भक्ति रस में होकर पावन ये मन,  
जपता जाए नमो उवज्झायांगं,  
नमो उवज्झायांगं॥

नील गगन में उड़ते पंखी,  
जैसे बादल काले कजरारे।  
झुक-झुककर संत-सतियों के,  
चरण पखार रहे मतवाले।  
हाथ जोड़, मान मोड़, शीश झुकाकर,  
जपता जा रे मन नमो लोए सव्वसाहूणं,  
नमो लोए सव्वसाहूणं॥

छम-छम, छम-छम बरस रहे ज्ञान के बादल,  
श्रावक ज्ञान रस तू जी भर पी ले।  
ऐसे पावन पंच परमेष्ठी के चरणों में,  
श्रद्धा से शीश झुका ले।  
प्रक्षालन हो जाएगा पापों का,  
घट को मंगल भावों से भर ले।  
इस अंतरंग चातुर्मास की भक्ति में,  
'संध्या' अंतर्मन को ज्ञान रस से भर ले॥





# चाबुर्माश्र टाइम स्क्रीन टाइम



-भाविन जैन 'सजग', नीमच

वर्तमान समय में सबसे बड़ी लत या एडिक्शन है 'स्क्रीन टाइम'। इस एडिक्शन से लगभग सभी आयु वर्ग के लोग प्रभावित हैं। इंस्टेंट जानकारी तथा मनोरंजन या अन्य किसी उद्देश्य से अधिकांश लोग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म व इंटरनेट का उपयोग करते हैं, जिसके चलते उन्हें स्क्रीन के संपर्क में रहना होता है। अधिकांशतया कुल स्क्रीन टाइम का अधिकांश भाग शॉर्ट वीडियो या रील्स देखने में व्यतीत होता है।

विश्वभर में पिछले कुछ वर्षों से कम अवधि के वीडियो (शॉर्ट वीडियो या रील्स) अर्थात् लगभग 30 सेकंड से लेकर 2 मिनट तक की अवधि के वीडियो देखने का चलन बड़ी तेजी से बढ़ा है। इस प्रकार के वीडियो उपलब्ध करवाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे- यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक और अन्य इस प्रकार डिजाइन किए जाते हैं कि उपयोगकर्ता या वीडियो देखने वाला व्यक्ति अधिक से अधिक समय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर व्यतीत करे। इंस्टाग्राम, रील्स और यूट्यूब शॉर्ट्स खासतौर पर नशे की लत हैं, क्योंकि इनके एल्गोरिदम आपको यथासंभव लंबे समय तक देखते रहने के लिए डिजाइन किए गए हैं। ये एल्गोरिदम आपके व्यवहार को ट्रैक करते हैं। यह पता लगाते हैं कि कौनसी सामग्री आपको व्यस्त रखेगी और आपके फीड में उस सामग्री को ज्यादा से ज्यादा प्रस्तुत करते हैं। रुचिकर विषयों से

संबंधित वीडियो देखकर व्यक्ति इतना ज्यादा मुग्ध हो जाता है कि उसे पता ही नहीं चलता कि 30 सेकंड के वीडियो देखते-देखते कब 3 घंटे व्यतीत हो गए।

इन वीडियो को एक बार देखना शुरू किया तो फिर एक के बाद दूसरा और फिर तीसरा और फिर लगातार यह सिलसिला तब तक चलता रहता है, जब तक अन्य कोई आवश्यक कार्य न आ जाए। इन शॉर्ट वीडियो को देखना शुरू करने के बाद लोग इनमें ही खो जाते हैं।

विभिन्न देशों में 'स्क्रीन टाइम' और 'शॉर्ट वीडियो' के दुष्प्रभावों पर अध्ययन किए गए हैं, जिनके अनुसार मानव शरीर तथा मस्तिष्क पर इसके निम्न दुष्प्रभाव पड़ते हैं –

1. वीडियो देखते समय स्क्रीन से निकलने वाली ब्लू लाइट आँखों की रोशनी तथा मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर दुष्प्रभाव डालती है। इसके कारण शरीर का प्राकृतिक शयन चक्र प्रभावित होता है तथा मस्तिष्क उस समय अधिक सक्रिय हो जाता है जब उसे आराम करना चाहिए।
2. डोपामाइन और वीडियो एल्गोरिदम जैसे कारकों से प्रेरित शॉर्ट-फॉर्म मीडिया की लत दर्शकों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। शॉर्ट-फॉर्म वीडियो से मस्तिष्क में डोपामाइन स्रावित होता है, जो किशोरों को आकर्षित करता है और उपयोगकर्ताओं को स्क्रॉल करते रहने के लिए

प्रोत्साहित करता है।

3. **नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन** के एक अध्ययन से पता चला है कि शॉर्ट-फॉर्म कंटेंट की लत सीधे तौर पर अकादमिक विलंब को प्रभावित करती है। शॉर्ट-फॉर्म मीडिया के बार-बार उपभोग से उनका ध्यान नियंत्रण बिगड़ जाता है, जिससे विलंब और भी बढ़ जाता है।
4. शॉर्ट-फॉर्म वीडियो इस हद तक लत लगाने वाले हो सकते हैं कि आप उनसे बचने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। इन वीडियो द्वारा प्रदान की जाने वाली तत्काल संतुष्टि मस्तिष्क में **डोपामाइन प्रतिक्रिया** को ट्रिगर कर सकती है, जिससे अधिक से अधिक कंटेंट की इच्छा हो सकती है। यह जल्दी से एक अस्वास्थ्यकर जुनून में बदल सकता है, जो दैनिक जीवन व जिम्मेदारियों में हस्तक्षेप कर सकता है।

### स्क्रीन टाइम व शॉर्ट वीडियो के दुष्प्रभाव से बचने के उपाय -

1. यदि अनुकूलता हो तो इसका पूर्ण त्याग कर दें।
2. यदि पूर्ण त्याग करने में समर्थ नहीं हैं तो फिर इसका उपयोग अतिआवश्यक होने पर तथा सीमित समय के लिए ही करें।
3. एक अध्ययन के अनुसार पूरे दिन में स्क्रीन टाइम का अधिकतम उपयोग बच्चों के लिए 1 घंटा तथा वयस्कों के लिए 2 घंटे तक ही होना चाहिए।
4. सोशल मीडिया प्लेटफार्म उपयोग करने से पूर्व यह निश्चित कर लें कि कितनी देर तक इसका उपयोग करना है, उसके बाद निश्चित अवधि का अलार्म लगा लें तथा जब अलार्म बज जाए तो अनुशासन-पूर्वक इसका उपयोग तत्काल बंद कर दें।

इस लेख को पढ़ने के बाद आपको 'स्क्रीन टाइम' तथा 'शॉर्ट वीडियो' के दुष्प्रभाव और इनसे बचने के उपाय के संबंध में जो जानकारी प्राप्त हुई है, उसका

उपयोग करें एवं स्वयं को सोशल मीडिया व स्क्रीन टाइम के जाल से मुक्त करें।

चातुर्मास काल शुरू हो चुका है। विभिन्न तप, त्याग व प्रत्याख्यान के साथ चातुर्मास काल में स्क्रीन टाइम का भी त्याग करें। इससे बचने वाले समय के सदुपयोग के लिए '**महत्तम महोत्सव**' के अंतर्गत ज्ञानार्जन व स्वाध्याय प्रवृत्ति में उपलब्ध धार्मिक पुस्तकें मंगवाकर उनका अध्ययन करें तथा अपने कर्मों की निर्जरा की दिशा में आगे बढ़ें।



### 'ज्ञान का खजाना इसी में है पाना' प्रश्नोत्तरी मई 2024 अंक के विजेता

- रूपेश जी कोठारी, ब्यावर (राज.)
- कमलेश कुमार जी, सवाई माधोपुर (राज.)
- लीलम जी सुराना, धमतरी (छ.ग.)
- मधु जी सामोता, बड़ीसादड़ी (राज.)
- ज्योति जी जैन, पंजाब

### प्रश्नोत्तरी जून 2024 अंक के विजेता

- मधु जी कांकलिया, खरगोन (म.प्र.)
- पूजा जी पारख, धर्मनगर (त्रिपुरा)
- राजश्री जी पींचा, गुवाहाटी (असम)
- निर्मला जी बागरेचा, राजसमंद (राज.)
- सरोज जी बोथरा, कर्नाटक

### प्रश्नोत्तरी जुलाई 2024 अंक के विजेता

- ध्वजा जी डाँगी, नीमच (म.प्र.)
- ममता जी कोठारी, कानोड़ (राज.)
- मोनिका जी पिछोलिया, रतलाम (म.प्र.)
- प्रेमलता जी जैन, गुजरात
- वर्णित जी मेहता, बड़ीसादड़ी (राज.)

# राष्ट्रधर्म के उद्बोधक आचार्य श्री जवाहरलाल जी.म.आ.



-डॉ. दिलीप धींग, बंबोरा  
(पूर्व निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत केंद्र)

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक जैन संतों ने भी अपना योगदान किया। उन संतों में आचार्य श्री जवाहरलाल जी.म.सा. भी एक प्रमुख नाम है। उन्होंने बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया। आचार्य जवाहर जैन आगम शास्त्रों के प्रकांड ज्ञाता थे। आगम ग्रंथों में भगवान महावीर ने जातिवाद का प्रतिकार किया। समता, समानता, स्वतंत्रता व मानवता का उपदेश दिया। उन्होंने ग्राम, नगर व राष्ट्र की उन्नति के लिए निभाए जाने वाले कर्तव्य को भी धर्म कहा। जैन आगम 'ठाणांग सूत्र' में ग्रामधर्म, नगरधर्म व राष्ट्रधर्म का उल्लेख है। वस्तुतः ग्राम, नगर व राष्ट्र धर्म परस्पर पूरक हैं।

जिस देश का गाँव उन्नत होता है, नगर विकसित होता है, निश्चित ही वह देश भी प्रगति के पथ पर तेजी से दौड़ता है। गाँव के प्रति अपने कर्तव्य को निभाना ग्रामधर्म है। भगवान महावीर ने ग्रामधर्म के संदर्भ में ग्राम के मुखिया 'ग्राम-स्थविर' का विचार दिया। महात्मा गांधी ने ग्रामोन्नति पर बहुत जोर दिया। उन्होंने ग्राम-स्वराज का सपना देखा। पंचायती राज के माध्यम से उसे साकार करने की राह सुझाई। गाँव अर्थव्यवस्था की आधारभूत इकाई है। ग्राम स्वच्छ पर्यावरण, संस्कृति संरक्षण और

प्राथमिक उद्योगों के केंद्र होते हैं। कथित विकास की आँधी में भारत के आत्मनिर्भर व सक्षम गाँव आज कमजोर हो रहे हैं। ऐसे में ग्रामधर्म का विचार अधिक प्रासंगिक है।

ग्रामधर्म की तरह नगर के प्रति अपना दायित्व निभाना नगरधर्म है। ठाणांग सूत्र में ग्राम-स्थविर की भाँति 'नगर-स्थविर' की व्यवस्था का उल्लेख भी है। नगरवासियों का दायित्व अपने नगर के प्रति इसलिए भी अधिक बनता है कि वे ग्रामवासियों से अधिक विकसित अवस्था में जीते हैं। इसके अतिरिक्त नगरों का विकास वनों व गाँवों पर भी निर्भर है। नगरवासियों को चाहिए कि वे पर्यावरण संरक्षण, मूक प्राणियों की रक्षा व गाँवों के विकास के लिए अपने दायित्व तय करें। नगर निकाय द्वारा कोई ऐसा नियम नहीं बने जिससे ग्राम्य जीवन और पशु-पक्षियों पर प्रतिकूल प्रभाव हो।

इसी प्रकार ठाणांग सूत्र में राष्ट्रधर्म का उल्लेख है। राष्ट्रधर्म के अनेक रूप हो सकते हैं। जिस देश के नागरिक राष्ट्रधर्म का निष्ठा से पालन करते हैं, वह देश अजेय होता है। उस पर किसी भी प्रकार के राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आक्रमण की आशंका नहीं रहती है। एक अहिंसा का उपासक गृहस्थ भी अवसर आने पर देश की रक्षार्थ शस्त्र उठा सकता है। आगम व इतिहास के पृष्ठों



पर राष्ट्रधर्म की आराधना करने वाले वीर श्रावकों की अनुकरणीय जीवन गाथाएँ अंकित हैं।

जैन आगम ग्रंथों में वर्णित इस प्रकार के तथ्य स्वतंत्रता आंदोलन को गति देने के लिए बहुत सहायक व प्रासंगिक थे। आचार्य जवाहर आगम के इन्हीं सूत्रों के आधार पर युगीन शैली में प्रभावशाली प्रवचन देते थे। उन्होंने कहा कि “जब राष्ट्रधर्म की रक्षा होगी, तभी सत्य धर्म की रक्षा हो सकेगी।” भगवान ऋषभदेव ने पहले राष्ट्रधर्म की शिक्षा और व्यवस्था दी। बाद में आत्मधर्म के लिए उपदेश दिया। तात्पर्य यह है कि राष्ट्र सुरक्षित रहेगा तो ही धर्म सुरक्षित रहेगा। राष्ट्र की रक्षा में हमारी रक्षा है।

राष्ट्रधर्म के पालन के लिए स्वावलंबन पर जोर देते हुए आचार्यश्री कहते थे कि “किसी दूसरे की शक्ति पर निर्भर न बनो। तुम्हारी एक भुजा में अनंत सागर है और दूसरी भुजा में अनंत मंगलमय मुक्ति है। तुम भाग्य के खिलौने नहीं हो, वरन् भाग्य के निर्माता हो। आज का तुम्हारा पुरुषार्थ कल भाग्य बनकर दास की भाँति तुम्हारा सहायक होगा। स्वावलंबी व्यक्ति ही ग्रामधर्म, नगरधर्म व राष्ट्रधर्म का समुचित निर्वाह कर सकता है।”

ओजस्वी प्रवचनकार आचार्य जवाहर जब प्रवचन देते थे, तब श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते थे। राष्ट्रधर्म से अनुप्राणित उनके प्रवचनों की महिमा सुनकर अनेक राष्ट्रनेताओं व स्वतंत्रता सेनानियों ने भी उनका सान्निध्य पाया। सन् 1914 में आचार्यश्री जब महाराष्ट्र में विचरण कर रहे थे, तब उनके दैनिक प्रवचनों में उपस्थित रहने वालों

में देशभक्त कवि सेनापति बापट भी थे। वे आचार्यश्री के प्रवचनों से बड़े प्रभावित हुए। वे आचार्यश्री का प्रवचन सुनने के तुरंत बाद उसके आधार पर मराठी भाषा में कविता बनाकर सुना दिया करते थे।

सन् 1915 में आचार्य जवाहर अहमदनगर में विराजमान थे। तब लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने उनसे भेंट की तथा उनके प्रवचन सुने। तिलक,

आचार्य जवाहर से बहुत प्रभावित हुए। आचार्य जवाहर को श्रेष्ठ व सफल साधु बताते हुए तिलक ने कहा था कि “भारतीय साधु-समाज में जैन साधु त्याग-तपस्या आदि सद्गुणों में सर्वोत्कृष्ट हैं। अहमदनगर चातुर्मास के दौरान ही कलियुगी भीम कहे जाने वाले पहलवान प्रो. राममूर्ति ने आचार्यश्री का प्रवचन सुना और कहा था कि “आचार्यश्री के प्रवचन सुनकर मुझ पर जो प्रभाव पड़ा, वह आज तक और किसी के उपदेश से नहीं पड़ा। यदि भारत में ऐसे दस साधु भी हो जाएँ तो भारत का पुनरुत्थान हो जाए।”

1923 में जब आचार्यश्री बंबई में विराजमान थे। तब उनकी प्रवचन सभा में कस्तूरबा गाँधी आईं। आचार्यश्री ने ‘वा’ का आदर्श प्रस्तुत करते हुए महिलाओं को खादी पहनने का उपदेश दिया। इस पर अनेक महिलाओं ने खादी पहनने का नियम लिया। 1923 में ही केंद्रीय धारा सभा के अध्यक्ष विट्ठलभाई पटेल ने आचार्यश्री का सान्निध्य प्राप्त किया। 1924 में जलगाँव चातुर्मास के दौरान विनोबा भावे, आचार्य जवाहर से मिले। उन्होंने दो-तीन दिन तक सत्संग का लाभ प्राप्त किया। इसी चातुर्मास में जमनालाल बजाज ने भी आचार्यश्री के दर्शन व प्रवचन श्रवण का लाभ उठाया।

1927 में आचार्यश्री जब बीकानेर में विराजित थे, तब महामना मदनमोहन मालवीय ने आचार्यश्री का प्रवचन सुना। वे आचार्यश्री के राष्ट्रीय विचारों से प्रभावित हुए। 1931 के दिल्ली चातुर्मास में काका कालेलकर

और बुखारी बंधु भी आए। उन्होंने आचार्यश्री के राष्ट्रधर्म विषयक विचार सुनकर अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त की।

महात्मा गाँधी भी आचार्य जवाहर की ओजस्वी उपदेश शैली, उत्कृष्ट व उदार विचार तथा संयमी जीवन से परिचित हो चुके थे। जब उनका चातुर्मास राजकोट में था, तब 29 अक्टूबर, 1936 को गाँधीजी राजकोट आए। शांत वातावरण में उन्होंने आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज के साथ वार्तालाप किया। इससे पूर्व 13 अक्टूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल ने आचार्य जवाहर का प्रवचन सुना। राजकोट चातुर्मास के बाद जब वे पोरबंदर में विराज रहे थे, तब पट्टाभि सीतारामैय्या का आगमन हुआ। उनसे हरिजन-उद्धार पर चर्चा की।

तत्कालीन बीकानेर राज्य के प्रधानमंत्री सर मनुभाई मेहता आचार्यश्री के राष्ट्रीय विचारों से बहुत प्रभावित थे। जब वे लंदन में गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने गए, तब आचार्यश्री का आशीर्वाद लेकर गए। हिंदी कवि रामनरेश त्रिपाठी ने भी आचार्यश्री का सान्निध्य प्राप्त किया। उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका में लिखा— "आचार्य जवाहरलाल जी का चरित्र बहुत ही अच्छा, पवित्र व तपस्या से पूर्ण है। वे अच्छे विद्वान, निरभिमानी, उदार, सहृदय और निस्पृह हैं। उनके व्याख्यान में सामयिकता रहती है। वे निर्भय वक्ता हैं, पर अप्रियवादी नहीं।"

आचार्य जवाहर जब सौराष्ट्र में विचरण कर रहे थे, तब एक बार वे राणपुर पहुँचे। वहाँ उनके प्रवचन सुनकर एक पत्रकार बंधु बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने उनके अखबार में जवाहराचार्य का परिचय देते हुए लिखा कि "भारत में एक जवाहर नहीं, परंतु दो जवाहर हैं। एक धर्मनेता जैनाचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज और दूसरे राष्ट्रनेता श्री जवाहरलाल जी नेहरू।"

महात्मा गाँधी की तरह आचार्य जवाहर ने भी स्वाधीनता आंदोलन को राजनीतिक दासता से मुक्ति के साथ ही सांस्कृतिक जागरण, कुरीति निवारण, स्वावलंबन, नशामुक्ति, अहिंसा आदि का एक माध्यम बनाया था।

स्वाधीनता आंदोलन में खादी भी एक अहिंसक हथियार के रूप में जुड़ी थी। खादी के माध्यम से परिश्रम, स्वावलंबन व स्वदेशी के विचार और व्यवहार को आगे बढ़ाया जा रहा था। आचार्य जवाहर ने स्वयं खादी का उपयोग किया और दूसरों को भी खादी पहनने का उपदेश दिया। उनकी प्रेरणा से अनेक लोगों ने खादी पहनना शुरू किया। आचार्य की प्रधानता के साथ उन्होंने साधु समाज में हाथ से कते और बुने सूती कपड़ों का व्यवहार चालू किया।

आचार्य जवाहर समाज में फैली गलत धारणाओं, कुरीतियों तथा रुढ़ परंपराओं के निवारण के लिए बहुत ही प्रभावी ढंग से समझाते थे। वे उनके प्रवचनों में जातिवाद व छुआछूत का जोरदार शब्दों में प्रतिकार करते थे। बाल विवाह, बेमेल विवाह, कन्या विक्रय, वर विक्रय आदि सामाजिक विसंगतियों पर भी वे प्रहार करते थे। आचार्य जवाहर व्यापारियों को मुनाफाखोरी व जमाखोरी से बचने और विद्यार्थियों को अश्लील साहित्य से दूर रहने का उपदेश देते थे। आजादी के आंदोलन में मदिरा भी एक मुद्दा बनी थी। जवाहराचार्य कहते थे कि "मदिरा पीने वाला मदिरा की बुराइयों को समझता हुआ भी उससे बच नहीं पाता।"

आचार्य जवाहर का मानना था कि "अध्यात्म साधना के लिए सामाजिक और राष्ट्रीय वातावरण को भी शुद्ध बनाना आवश्यक है। समाज में विकृतियाँ पनपती रहे, राष्ट्र परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा रहे, देशवासी स्वदेशी को भूल विदेशी के मोहजाल में फँसे रहे तो भला अध्यात्म साधना के लिए शुद्ध, निर्मल वातावरण कैसे बन सकता है? अतः समाज सुधार का प्रश्न और राष्ट्रधर्म की आराधना उपेक्षा करने योग्य नहीं है।" राष्ट्रधर्म के उद्बोधक ऐसे महान संत आचार्य जवाहर का जन्म सन् 1875 में तत्कालीन मालवा की झाबुआ रियासत के थांदला कस्बे में हुआ था। माता नाथी बाई व पिता जीवराज जी कवाड़ के इस सुयोग्य पुत्र ने 16 वर्ष आयु में दीक्षा ली। 10 जुलाई 1943 को राजस्थान में बीकानेर के निकट भीनासर कस्बे में उनका महाप्रयाण हुआ।



# जैन धर्म में वैदिक दर्शन में पंच शरीर कोष

-डॉ. बी रमेश गादिया, बेंगलुरु

जैन आराधना व साधना में पंच कोष के विषय में ज्यादा उल्लेख नहीं मिलता। जैसे वैदिक दर्शन में पंच कोष का विवेचन किया गया है। साधक को इसका ज्ञान होना आवश्यक है। जैन दर्शन में पंच शरीर के बारे में विस्तार से चर्चा हुई है। पंच शरीर और पंच कोष में बहुत समानता है। औदारिक आदि पाँच शरीर के बारे में अधिकांश जैनियों को सैद्धांतिक रूप से जानकारी है, लेकिन प्रयोगात्मक और साधनात्मक रूप में कुछ विशेष जानकारी नहीं है।

## वैदिक दर्शन में पंच कोष

1. **अन्नमय कोष** – अन्न तथा भोजन से निर्मित। शरीर व मस्तिष्क।
2. **प्राणमय कोष** – प्राणों से बना।
3. **मनोमय कोष** – मन से बना।
4. **विज्ञानमय कोष** – अंतर्ज्ञान या सहज ज्ञान से बना कोष विज्ञानमय कोष कहलाता है।
5. **आनंदमय कोष** – आनंदानुभूति से बना।  
पहले हम इसके सिद्धांत को समझें, पश्चात् इसके प्रयोग को जानकर अभ्यास करें।

उपनिषद्, वेद, पुराण आदि वैदिक साहित्य में पंच कोष पर विशेष विवरण मिलता है। उनकी मान्यता है कि हमारा शरीर पंच कोष से निर्मित है। सबसे बाह्य व स्थूल कोष है अन्नमय कोष। इसे ही जैन धर्म में औदारिक शरीर कहा गया है। हाड़-मांस आदि सप्त धातुओं से यह शरीर निर्मित हुआ है। साधक सबसे पहले इस अन्नमय कोष (औदारिक शरीर) को तप-त्याग और वैराग्य से साधता है। जैन धर्म में 12 प्रकार की तपस्या का उल्लेख मिलता है। इसमें 6 बाह्य व 6 आभ्यंतर तप बताए गए हैं।

**छः बाह्य तपाचार** – अनशन, ऊनोदरी, वृत्ति संक्षेप, रस परित्याग, कायाक्लेश व प्रतिसंलीनता, ये सभी काया (शरीर) से संबंधित हैं।

आज का विज्ञान भी इस औदारिक शरीर की शोध में लगा है। मस्तिष्क, आँख, कान, नाक, जीभ, कंठ, हृदय, आमाशय, लीवर, अंतस्त्रावी ग्रंथि यानी शरीर के एक-एक अंग-उपांग पर शोध, अनुसंधान चल रहा है। न केवल शरीर पर बल्कि मन पर भी खोज जारी है। जैन धर्म में शरीर के शोध, स्वयं के शरीर को तपाकर उसमें व्याप्त आत्म-तत्त्व की खोज की साधना पर टिका है।

अन्नमय कोष के पश्चात् प्राणमय कोष का वर्णन



वैदिक दर्शन में किया गया है। अन्न-जल के पश्चात् प्राणमय कोष में श्वासोच्छ्वास पर प्रकाश डाला गया है। 12 तपाचार में श्वासोच्छ्वास का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन जैन आगमशास्त्र **श्री पन्नवणा सूत्र** में श्वासोच्छ्वास पर विवेचन किया गया है। इसमें बाह्य और आभ्यंतर श्वास लेने-छोड़ने की साधना का वर्णन किया गया है। गर्दन व फेफड़ों से श्वासोच्छ्वास लेने व छोड़ने की क्रिया को बाह्य श्वास और पेट व पेड़ू से श्वासोच्छ्वास लेने व छोड़ने की क्रिया को आभ्यंतर श्वास कहा गया है। **उस्संतिवा** व **निस्संतिवा** को बाह्य श्वासोच्छ्वास कहा गया है। **आणमंति वा पाणमंति वा** को आभ्यंतर श्वासोच्छ्वास बताया गया है। बाह्य व आभ्यंतर श्वासोच्छ्वास के सैद्धांतिक रूप शास्त्र में आज भी उपलब्ध हैं। इसका प्रयोगात्मक पक्ष आज विलुप्त हो गया है। पंच कोष वैदिक साधना में आज भी यह अभ्यास साधक कर रहे हैं। आज का विज्ञान भी इसके महत्व को जानने व समझने लगा है।

**श्री पन्नवणा सूत्र** में चारों गति के यथा—नरक, तिर्यच, मनुष्य और देवलोक के जीवों के श्वासोच्छ्वास के गति पर विस्तार से वर्णन किया गया है। जैन दर्शन के अनुसार नरक गति के जीव धौकनी की तरह श्वासोच्छ्वास लेते और छोड़ते हैं। देव गति के जीव के श्वासोच्छ्वास की गति कम से कम 15 दिन और ऊँचे देवलोक में 6 माह में एक बार श्वासोच्छ्वास क्रिया होती है। मनुष्य व तिर्यच के श्वासोच्छ्वास की गति अनियमित होती है। कछुआ एक मिनट में 2 से 3 बार श्वासोच्छ्वास लेता है और वह 80 से 200 साल तक जीवित रहता है। कुत्ता आदि जानवर एक मिनट में 60 से 70 बार श्वासोच्छ्वास लेते व छोड़ते हैं। वे 15 से 20 साल तक जीवित रहते हैं। मनुष्य 20 से 50 बार श्वासोच्छ्वास लेता व छोड़ता है। वह 60 से 100 साल जीवित रहता है। शांति व समता के क्षणों में मनुष्य का श्वासोच्छ्वास धीमा हो जाता है और आवेश-आवेग तथा विषयवासना में श्वासोच्छ्वास

की गति तीव्र हो जाती है।

एक शंका उत्पन्न होती है कि योग-प्राणायाम और ध्यान-साधना में बताया गया है कि श्वासोच्छ्वास की गति धीमी, गहरी व लंबी कर लेने से मनुष्य अपना जीवन बढ़ा लेता है। वास्तव में यह एक गलत और अधूरी जानकारी है। अपने आयुष्य को बढ़ा पाने में कोई समर्थ नहीं होता। जैन धर्म में स्पष्ट लिखा है कि हर सांसारिक जीवात्मा का आयुष्य निश्चित होता है। उसे बढ़ा पाने में तीर्थंकर भी समर्थ नहीं हैं।

यह एक कटु सत्य है कि आयुष्य को बढ़ा पाने में कोई समर्थ नहीं, लेकिन यह भी सत्य है कि अधिकांश मनुष्य अपनी आयु को घटा सकते हैं। आहार, जल के साथ-साथ श्वासोच्छ्वास के असंतुलन (असंयम) से जीवात्मा अपने आयुष्य को कम कर देता है। आजकल बहुत से लोग अकाल मृत्यु को प्राप्त कर लेते हैं और इसका एक कारण भोजन व पानी के साथ श्वास का असंयम भी है। प्रायः लोग आहार-पानी के नियंत्रण की बात समझते हैं, लेकिन श्वासोच्छ्वास लेने व छोड़ने पर (प्राणायाम क्रिया) के सम्यक् अभ्यास को न समझते हैं और न ही करते हैं।

अन्नमय कोष व प्राणमय कोष के पश्चात् मनोमय कोष का वर्णन वैदिक दर्शन में किया गया है। बहुत से धर्म संप्रदाय में मन को ही आत्म-तत्त्व बताया गया है, जबकि जैन व बौद्ध धर्म में मन को एक इंद्रिय माना गया है। श्रोत्र आदि पंचेंद्रियों की तरह मन को छठी इंद्रिय कहा गया है। पंच कोष में भी मन के निग्रह पर जैन धर्म में चक्षु आदि पाँच इंद्रिय, क्रोध आदि चार कषाय और मन आदि तीन योग के प्रतिसंलीनता की बात कही गई है। बौद्ध दर्शन में भी **महासतिपट्टान सूत्र** में मन के निग्रह पर गंभीरता से विश्लेषण किया गया है। जैनागम श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र में मन के निग्रह के लिए श्रुत के अभ्यास पर बल दिया गया है। श्रीमद् भगवद् गीता में मन के लिए मन रूपी घोड़े को नियंत्रित करने की बात कही गई है।

इसके बाद विज्ञानमय कोष का वर्णन आता है। अंतर्ज्ञान अथवा सहज ज्ञान से बना कोष विज्ञानमय कोष है। जैन दर्शन में विज्ञानमय कोष का सर्वप्रथम स्थान दिया गया है। जैन धर्म की शुरुआत सम्यग्ज्ञान से की गई है। सम्यग्ज्ञान के बिना साधना का ऊर्ध्वगमन (गुणस्थान का आरोहण) नहीं होता है। जैन धर्म में 14 गुणस्थान का वर्णन मिलता है। चौथे गुणस्थान अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान से साधना का आरोहण प्रारंभ होता है। **‘पढमं णाणं तओ दया’** यह जैन धर्म का उद्घोष वाक्य है। सम्यग्ज्ञान के पश्चात् सम्यग्चारित्र (आचरण) की बात कही गई है। इसके मध्य सम्यग्दर्शन (अटूट श्रद्धा) का स्थान है।

ज्ञान की जितनी सूक्ष्म विवेचना जैन धर्म में की गई है वैसी अन्य धर्म व संप्रदाय में नहीं मिलती। कर्म सिद्धांत में मोहनीय कर्म को कर्मों का राजा कहा गया है। दर्शन और चारित्र मोह में सम्यग्ज्ञान की महत्ता बताई गई है। पंडित विद्वान् श्री मोहनलाल जी मेहता ने अपने शोध ग्रंथ **‘जैन धर्म और दर्शन’** में इस पर प्रकाश डाला है। वैदिक दर्शन में पाँचवाँ कोष है आनंदमय कोष। इसमें आत्म-साक्षात्कार की महत्ता के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। आनंदमय कोष साधना का चरम लक्ष्य कहा गया है। जैन धर्म के अनुसार पाँचवाँ शरीर कार्मण शरीर बताया गया है। कार्मण वर्गणाओं से परे आत्मा की अनुभूति होती है। जैन धर्म के अनुसार सांसारिक आत्मा की कार्मण वर्गणाओं के पुद्गल निरंतर स्पंदित होते रहते हैं। इसमें मुख्यतया राग व द्वेष के परिस्पंदन प्रमुख हैं।

जैन धर्म में आत्मा के चार मूल गुण (स्वभाव) बताए गए हैं। यथा— **अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख और अनंत बल वीर्य**। अनंत सुख को आनंदमयी कोष माना गया है। बौद्ध दर्शन में दुःख पर जोर दिया गया है, जबकि जैन धर्म में ज्ञान, दर्शन, सुख (आनंद) व बल वीर्य पर जोर दिया गया है। बौद्ध दर्शन अनात्मवादी (शून्यवादी) दर्शन हैं। जैन दर्शन आत्मवादी दर्शन है। जैन दर्शन में समकित का अर्थ है कि साधक को इन बातों पर स्पष्ट दृढ़

श्रद्धा होती है कि — आत्मा है, आत्मा नित्य है, आत्मा शाश्वत है, आत्मा ध्रुव है, मोक्ष है, मोक्ष का उपाय है।

पंच कोष साधना की गहनता में आत्मानुभूति संभव है। इसी तरह कार्मण शरीर की गहरी ध्यान साधना में आत्म-साक्षात्कार संभव होता है। गंभीर साधकों को दस दिवसीय विपश्यना साधना और सप्त दिवसीय सतिपट्टान शिविर में पंच शरीर व पंच कोष की आरंभिक सूक्ष्म अनुभूति होती है। जड़ चेतन का भेद विज्ञान भी लंबे शिविरों के शिविरार्थियों को अनुभव होता है। दस दिवसीय विपश्यना साधना शिविर में प्रतिदिन 8-10 घंटे की मौन ध्यान साधना कार्मण वर्गणाओं के परिस्पंदन 8वें-9वें दिन में अनुभूत होते हैं। जैन धर्म के विभिन्न संप्रदाय विपश्यना साधना अपने-अपने नाम से करवाते हैं।

मध्यकालीन जैनाचार्य संहनन संस्थान की हीनता को देखते हुए ध्यान साधना का निषेध कर स्वाध्याय आराधना पर बल देने लगे। यह बात सत्य है कि स्वाध्याय आराधना को परम तप कहा गया है, लेकिन जैन धर्म के 12 तपाचार में स्वाध्याय के पश्चात् ध्यान व व्युत्सर्ग तप साधना का विवेचन किया गया है। इस संबंध में विशेष जानकारी के लिए गुरु-भगवंतों से चर्चा कर ज्ञान अर्जित करें। ❀❀❀

भक्ति रस

**अपनी अलग पहचान बना**

—मुक्ति जैन, वडोदरा

बाहर जब भी दिखे अंधेरा, खुद में ही तू पाए सवेरा।  
चलते हुए जब थक जाएगा, उड़ने का साहस पाएगा।।  
कुछ पाना है तो नींद गंवाएँ, अंदर बैठा वीर जगाएँ।  
सूरज में तुझ सी चमक नहीं, चाँद में तेरी झलक नहीं।।

अपनी अलग पहचान बना दे,  
भीड़ से खुद को थोड़ी जगह दे।  
कहने दे जो कहते हैं, तू दुनिया को तेरा काम बता दे।।  
मेहनत में ना कमी रखना, जीत की तू राह बना ले।।



## महत्तम परिवर्तन का आधार

# आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण

-प्रो. सुमेरचंद जैन, बीकानेर

भगवान महावीर ने कहा है— “स्वयं सत्य खोजो।” जिन उपकरणों का तुम निर्माण करते हो और जिन उपकरणों के माध्यम से तुम सत्य की खोज करते हो, वे उपकरण तुम्हारे स्वयं के भीतर विद्यमान हैं। तुम्हारी चेतना में विकास की असीम संभावनाएँ हैं। उन्हें विकसित कर लो तो सूक्ष्मदर्शी यंत्रों का सहारा लिए बिना सूक्ष्म सत्य को जान सकते हो। यह एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।

आज का वैज्ञानिक भी यंत्रों के आधार पर सत्य की खोज करता है। उसने बहुत सूक्ष्म नियमों की खोज की है। सत्य की खोज की वैज्ञानिक दृष्टि बन गई।

आध्यात्मिक वह होता है, जिसमें आत्मोपम्य की भावना का विकास होता है। यह चेतना जाग जाती है कि जैसी मेरी आत्मा है, वैसी ही आत्मा सब में विद्यमान है।

### आध्यात्मिक व्यक्तित्व की कसौटी

**1. आत्मतुला का तराजू एक :** प्रत्येक प्राणी में वैसी ही आत्मा है, जैसी मेरी है और मुझ में वैसी ही आत्मा है, जो दूसरों में है। यह आत्मतुला सबके लिए एक है। जिसमें यह चेतना जाग जाती है, वह आध्यात्मिक व्यक्तित्व है।

**2. इंद्रियजयी :** जो व्यक्ति अपनी इंद्रियों व मन पर संयम करने का मूल्य समझ लेता है वह आध्यात्मिक व्यक्तित्व है। इंद्रियों की अतृप्ति, इनकी वासनाएँ, लालसाएँ असीम हैं। जो व्यक्ति इनका संयम न करे, वह

समाज के लिए सुखद नहीं बन सकता। आज की बड़ी समस्या है कि शासक है, किंतु इंद्रियजयी नहीं है। समाज का मुखिया है, बहुत बड़ा उद्योगपति है, किंतु इंद्रियजयी नहीं है। चाणक्य ने कहा है— “जो समाज का नेतृत्व करता है उसे सबसे पहले इंद्रियजयी होना चाहिए।”

**3. दमित वासनाओं का परिष्कार :** कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होता, जिसमें वासना न हो। न जाने कितने जन्मों की वासनाएँ, कितने जन्मों के संस्कार हमारे जीवन के साथ जुड़े हैं। इन दमित वासनाओं का परिष्कार करते जाएँ तो सब ठीक रहेगा। यदि इनका परिष्कार नहीं कर पाए तो व्यक्ति स्वयं विकृत हो जाता है और समाज को भी विकृत बनाता है। आध्यात्मिक व्यक्ति वह है जो परिष्कार करना जानता है और परिष्कार करने का प्रयत्न करता है।

**4. वृत्ति के संबंध में अर्थ का बोध :** आध्यात्मिक व्यक्तित्व की चौथी कसौटी है वृत्ति के संदर्भ में सामाजिक व आर्थिक परिस्थिति का बोध। आज का समाज सबसे ज्यादा आर्थिक परिस्थिति से दबा हुआ है। आर्थिक प्रभाव इतना है कि अर्थ को ही सब कुछ मान लिया गया। आज के इस अर्थ प्रधान युग में यह धारणा बन गई कि अर्थ ही सब कुछ है। आज व्यक्ति के दुःख का सबसे बड़ा कारण अर्थ को सब कुछ मान लेना है। आध्यात्मिक व्यक्ति अर्थ को स्थान देगा, किंतु आंतरिक वृत्तियों की अवहेलना कर अर्थ को स्वीकार नहीं करेगा। महापुरुषों ने

कहा है— “संयम पालो, वृत्तियों का निरोध करो।”

**5. अनासक्ति :** आध्यात्मिक व्यक्तित्व की पाँचवीं कसौटी है अनासक्ति। आध्यात्मिक व्यक्तित्व वह है जो पदार्थ को पदार्थ मानता है। उसको उपयोगी व आवश्यक मानता है, किंतु आत्मीय नहीं मानता।

### वैज्ञानिक व्यक्तित्व की कसौटी

**1. सत्य की खोज :** वैज्ञानिक व्यक्तित्व वह है, जिसमें मिथ्या आग्रह नहीं। यह अनेकांत का दृष्टिकोण है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण में कोई पकड़ नहीं होती, आग्रह नहीं होता। वहाँ तो जानने का प्रयत्न होता है और निरंतर नए-नए तथ्यों को उद्घाटित करने का प्रयत्न होता है।

**2. चेतना की खोज :** वैज्ञानिक व्यक्तित्व की दूसरी कसौटी है चेतना की खोज, मानव की खोज।

मानव की खोज बहुत कम हुई है। लगभग सारे प्रयोग पशुओं पर ही हुए हैं। मनुष्य को प्रयोग भूमि नहीं बनाया गया। अब आवश्यकता है कि मानव का भली-भाँति अध्ययन हो, मानवीय मस्तिष्क का अध्ययन हो, मानव व मानवीय चेतना का अध्ययन हो। जिस दिन यह हमारी वृत्ति बनेगी, उस दिन आध्यात्मिक व वैज्ञानिक व्यक्तित्व की युति बन जाएगी। दोनों का योग बनेगा।

आज की अपेक्षा है कि हर विद्यार्थी वैज्ञानिक बने, किंतु कोरा वैज्ञानिक नहीं बनकर आध्यात्मिक वैज्ञानिक बने। आज हर धर्म संस्थान से जुड़े व्यक्तित्व के लिए तो यह विशेष आवश्यक है कि वह केवल आध्यात्मिक नहीं बने, उसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक भी हो। इन दोनों का योग ही वर्तमान की समस्याओं का समाधान है।



## ज्ञान से खिलता जीवन

प्रश्नोत्तरी

- प्रश्न 1. जिन बच्चों ने पाठ याद नहीं किया उन पर सौरभ की माताजी ने बिलकुल भी गुस्सा नहीं किया और ना ही डाँटा, पर किसे महत्वपूर्ण बताया?
- प्रश्न 2. आज सौरभ की माता जी ने कौनसा पाठ पढ़ाया?
- प्रश्न 3. सामायिक में चार कथाएँ कौन-कौन सी बताई गई हैं?
- प्रश्न 4. आज नीलिमा उदास क्यों थी?
- प्रश्न 5. आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व सभी चारित्रात्माएँ प्रतिदिन क्या समझाते हैं?
- प्रश्न 6. सभी बच्चों को आश्चर्य क्यों हो रहा था?
- प्रश्न 7. सामायिक के 32 दोष कौन-कौन से हैं?
- प्रश्न 8. हम स्वयं के क्या शुद्ध रखें कि बच्चे कोई गलत मार्ग चुनने की सोचें भी नहीं?
- प्रश्न 9. कुछ लोग ऐसा करते हैं और कुछ लोग नहीं करते, फिर भी महापुरुष सबको कैसे देखते हैं?
- प्रश्न 10. जिन बच्चों को गमोत्थु गं का पाठ याद नहीं था उनको सौरभ की माताजी ने क्या कहा?

**नोट :-** 1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में से देने हैं।  
2. उत्तर के साथ पृष्ठ संख्या भी लिखनी अनिवार्य है।  
3. उत्तर किसी खाली पेज पर साफ-सुथरे अक्षरों में लिखकर 5 सितंबर 2024 से पूर्व WhatsApp No. 9314055390 पर भेजें।  
4. सिर्फ उत्तर ही लिखें, प्रश्न नहीं लिखने हैं।  
5. इस प्रतियोगिता में 15 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।



# पार्वीधिराज पर्व

# पर्युषण

-डॉ. आभाकिरण गाँधी, धामडमऊ



परस्परोपग्रहो जीवानाम्

- प - पाप का
- र - रग-रग से वमन करें
- वा - वास करें आत्मा में
- धि - धिक्कारें कषाययुक्त आत्मा को
- रा - राम-तत्त्व का अनुभव करें
- ज - जय पाएँ कषायों पर
- प - परम-तत्त्व का ध्यान कर
- र - रहें सदा अप्रमत्त
- व - वास हो हृदय में
- प - परमात्मा का
- र - रहें हम
- यु - यूँ ही श्रद्धावान बनकर
- ष - षट्द्रव्य के स्वरूप को समझें
- ण - नतमस्तक होकर गुरुचरणों में

मनुष्य का जीवन दो प्रकार का है - एक है वास्तविकता का और दूसरा कल्पना का। कल्पना का विश्व इनसान स्वयं बनाता है, किंतु वास्तविकता का जीवन साधना पर निर्भर है। साधना के दौरान यदि ऊर्ध्वगमन हो जाए तो आत्मोत्थान निश्चित है, किंतु साधना जब पाँच इंद्रियों के विषयों की दीवार पर रुक जाती है तब कभी प्रमाद का राहू तो कभी मूढ़ता का कारावास, कभी निरुत्साह तो कभी पाप के प्रवाह में मन बह जाता है। ऐसी स्थिति में साधक क्या करे? इसके समाधान में श्री आचारांग सूत्र कहता है कि

साधक को इंद्रियों के दलदल तथा आसक्ति के बादल से उपरत होना है, तभी वह विमुक्त हो सकता है। साधक को पदार्थ त्याग से पूर्व पदार्थ वृत्तियों का त्याग करना श्रेष्ठ है। यही साधना का राजमार्ग है।

वृत्तियाँ अर्थात् जन्म-जन्म के कुसंस्कार। इन कुसंस्कारों के कारण पड़ी आदतों का निरोध नहीं, अपितु रूपांतरण करना साधना का हार्द है। जैसे छाया के पीछे दौड़ा नहीं जाता, किंतु दिशा बदल जाती है। ऐसे ही वृत्तियाँ पकड़ी नहीं जाती, बल्कि उन्हें आत्मज्ञान से बदला जाता है। प्रकाश चाहिए तो प्रकाश की दिशा पकड़नी होगी और वृत्तियों को छोड़ना है तो बाह्य त्याग करना होगा। अतः साधना की प्रथम भूमिका में बाह्य पदार्थों का त्याग करना अत्यंत उपयोगी है। बाह्य त्याग करने से इंद्रियों के विषयों का आगमन सीमित हो जाता है। चूँकि इंद्रियाँ ही मन को राँ मैटेरियल (कच्चा माल) सप्लाई करती है। अतः राँ मैटेरियल कम होगा तो मन आसक्ति का उत्पादन भी कम करेगा। आंतरिक शुद्धि बाह्य शुभ व्यवहार पर ही अवलंबित है। बाह्य व्यवहार अशुभ है तो आंतरिक वृत्तियाँ अशुभ हुए बिना नहीं रहती। अतः आंतरिक शुद्धि के लिए भीतर की मलिनता को जानना होगा। जैसे गड्ढे में पड़ा जल ऊपर से शुद्ध दिखाई देता है, लेकिन कोई उसमें पत्थर मारे तो नीचे दबा कचरा उभरकर सतह पर आ जाता है। उसी प्रकार निमित्त पाकर मलिनता प्रकट हो जाती है। यही कारण है

कि भीतर का क्रोध उपवास का निमित्त पाकर बाहर निकल जाता है। द्वेष, अप्रियता आदि भी उपवास, सेवा व साधना करने से मुक्त हो जाते हैं।

जैसे दर्पण चेहरे के दाग को दिखलाता है तो दर्पण को नहीं तोड़ते, बल्कि दाग को दूर करते हैं। ऐसे ही साधना के दर्पण में अपने दोषों को देखकर उन दोषों को दूर करना होता है। अतः ज्ञानी कहते हैं कि मात्र त्याग से साधना की पूर्णता मत मानना। त्याग के साथ अनासक्ति का स्वरूप समझना जरूरी है। त्याग व अनासक्ति में बहुत पतली-सी भेद रेखा/विभाजक रेखा है। जो साधक आसक्ति पर नियंत्रण करने का पुरुषार्थ जगाता है, वह साधना के राजमार्ग पर शीघ्र बढ़ता है।

एक दिन बादशाह अकबर को मजाक सूझी। उन्होंने उपहास करते हुए बीरबल को कहा— “बीरबल! आज मैंने बड़ा विचित्र स्वप्न देखा। हम दोनों घोड़े पर बैठकर कहीं जा रहे थे। मार्ग में दोनों ओर दो कुंड आए। अचानक हमारे घोड़े उछले और हम दोनों अलग-अलग कुंड में गिर गए। आश्चर्य यह था कि मैं अमृत वाले कुंड में गिरा और तुम गंदगी वाले कुंड में गिरे।” यह सुनकर सारी सभा खिलखिला उठी। बीरबल से ईर्ष्या करने वालों के लिए यह सुनहरा अवसर था।

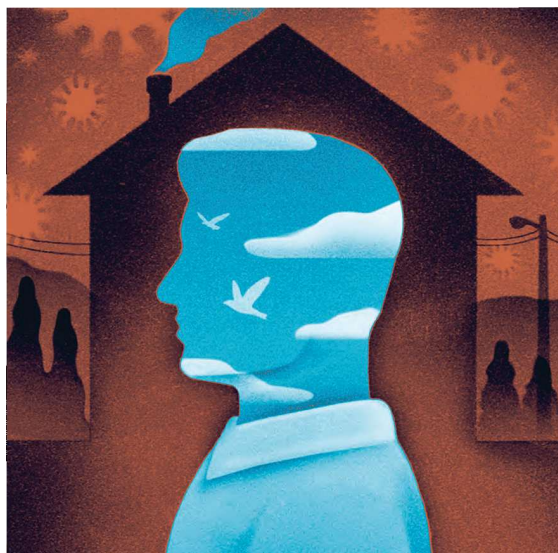
बीरबल ने साश्चर्य कहा— “जहाँपनाह! मुझे भी आज ऐसा ही स्वप्न आया। इसमें रत्तीभर भी अंतर नहीं, किंतु आप कुंड में गिरते ही जाग गए, इसलिए आपका स्वप्न यहीं पूरा हो गया। मैं सोता रहा तो मेरा स्वप्न और भी आगे चला।” अकबर की उत्सुकता देखकर बीरबल ने कहा— “परवरदिगार! यह सिर्फ स्वप्न की बात है। मैंने देखा कि हम दोनों जब कुंड से बाहर निकले तब आप मुझे चाट रहे थे और मैं आपको चाट रहा था।” यह सुनकर अकबर सहित सारी सभा दंग रह गई। इस छोटे से प्रसंग में हमारे लिए बहुत बड़ा बोध छिपा है।

1. अमृत से लिपटे हुए और अमृत को चाटने वाले।
2. अमृत से लिपटे हुए और गंदगी को चाटने वाले।

3. गंदगी से लिपटे हुए और अमृत को चाटने वाले।

4. गंदगी से लिपटे हुए और गंदगी को चाटने वाले।

हमारा नंबर पहले में लग जाए तो अत्यंत श्रेष्ठ वरना तीसरे में तो अवश्य लगे, किंतु दूसरे व चौथे में तो बिलकुल भी नहीं होना चाहिए। प्रथम प्रकार की उत्तम श्रेणी में वे हैं जिनका तन भी धर्म प्रवृत्तियों से जुड़ा है और मन भी धर्म में रमण करता है। ऐसे श्रेष्ठ साधक विचार संपन्नता के साथ आचार संपन्न भी होते हैं। दूसरे प्रकार के वे मनुष्य हैं जिनका शरीर धर्म क्रिया में प्रवृत्त है, किंतु मन पाप में रत है। ऐसे सामान्य स्तर के साधक केवल



क्रिया संपन्न हैं। तीसरे प्रकार के मनुष्य वे हैं जो तन द्वारा पाप प्रवृत्तियों में लिप्त हैं, किंतु उनका मन धर्म रुचि वाला होने से वे धार्मिक व्यक्ति की सतत अनुमोदना करते हैं। ऐसे सुपात्र साधक आत्मकल्याण के मार्ग पर शीघ्र ही बढ़ते हैं। चौथे प्रकार के मनुष्य ऐसे हैं जिनका तन व मन दोनों पाप प्रवृत्तियों में लगे रहते हैं। ऐसे अज्ञान में डूबे लोग आत्मकल्याण से वंचित रहते हैं। जप, तप, दान, त्याग व संयम आदि शुभ क्रिया करते हुए यदि मन में धर्म के प्रति बहुमान नहीं है, समादर का भाव नहीं है, बल्कि अशुभ की ओर मन खिंचता हो तो जानना कि हम अकबर जैसे हैं।

मन रात-दिन बहिर्मुखता के कारण पाप क्रिया में फँसा हुआ है, फिर भी रात्रि में शयन से पूर्व पाप कर्मों का पश्चात्ताप करते हुए शुभ भावना रखनी चाहिए कि वह दिन मेरा धन्य होगा जब मैं हिंसा व परिग्रह का त्याग करूँगा या धन्य हूँ वे साधक जो रात-दिन धर्म योग से जुड़े रहते हैं। इस तरह का चिंतन मन में चलता हो तो मानना हम भी बीरबल हैं। एक छोटा-सा शुभ भाव अनंतकाल के संसार वृक्ष को जलाने में अणुबम का कार्य करता है। करोड़ों बुरे विचार और अनेक अशुभ क्रियाओं के सम्मुख एक उत्कृष्ट शुभतम भाव मानो कौरव सेना के सामने अकेले श्रीकृष्ण जैसा है। इसलिए ज्ञानी कहते हैं कि एक मिनट का शुभ विचार (भाव) आने मात्र से करोड़ों वर्षों का श्रेष्ठ गति का आयुष्य बाँधता है। यहाँ मन व भाव में अंतर समझ लेना जरूरी है। मन का काम सोना व चिंतन करना है, किंतु भाव हमारी चेतना का गहरा स्तर

है। यह इच्छा से आगे का स्तर है, जो बाहर से चाहे नहीं दिखता, किंतु भीतर ही भीतर अपना कार्य करता है। इसी भाव से आचरण या व्यवहार का संबंध है। वस्तुतः व्यक्ति में क्रूरता व नम्रता मन से नहीं भावों से आती है। साधना के राजमार्ग पर बढ़ने वाले साधक को शुभ भाव के साथ शुभ प्रवृत्ति टिकाए रखनी हो तो फल की आसक्ति से नहीं जुड़ना। शुभ क्रिया करते हुए साधक जितना अनासक्त बना रहेगा, उतनी साधना स्वतः फलित होगी। त्याग के साथ जितनी आसक्ति बढ़े, शुभ भाव बढ़े तो जानना साधना पारगामी बनेगी।

“

संसार समुद्र है, जीवन जहाज है,  
हम यात्री हैं। जहाज को किनारे पर  
ले जाने के लिए दो चीजें जरूरी हैं-  
कप्तान और दिशायंत्र। परमात्मा  
दिशायंत्र हैं और गुरु कप्तान हैं।



## ज्ञान का खजाना, इसी में है पाना



- प्रश्न 1. साधु को अपने समस्त दोषों की आलोचना किसका त्याग कर करनी चाहिए?
- प्रश्न 2. करोड़ों साँपों का विष दूर होने से भी अधिक कठिन क्या है?
- प्रश्न 3. गुरु की आत्मा के निकट अपनी आत्मा को जोड़ना क्या कहलाता है?
- प्रश्न 4. काम करें, पर अपनी प्रशंसा बिलकुल न करें और न इच्छा रखें कि कोई करे। यह वचन व्यवहार किसका किसके साथ है?
- प्रश्न 5. निरय में उत्पन्न होने वाले जीवों को क्या कहते हैं?
- प्रश्न 6. पवित्र महापुरुष जिस स्थान को अपने चरणकमलों द्वारा स्पर्श करते हैं, वह स्थान क्या कहलाता है?
- प्रश्न 7. पूर्वभव में सुपात्रदान देकर किसने अपने आपको संसार से परित्त कर लिया?
- प्रश्न 8. समाधि के लिए भगवान ने चार पुरुषार्थ कौन से बतलाए हैं?
- प्रश्न 9. भीड़ कम हो या ज्यादा, श्रोता कैसे होने चाहिए?
- प्रश्न 10. प्रमाद का अर्थ क्या है?

नोट:- 1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में से देने हैं।  
2. उत्तर के साथ पृष्ठ संख्या भी लिखनी अनिवार्य है।  
3. उत्तर किसी खाली पेज पर साफ सुथरे अक्षरों में लिखकर 5 सितंबर 2024 से पूर्व WhatsApp No. 9314055390 पर भेजें।  
4. सिर्फ उत्तर ही लिखें, प्रश्न नहीं लिखें।



# भीलवाड़ा चातुर्मास्य त्रमाचार्य



चातुर्मास में  
कषाय, राग-द्वेष  
घटाने का लक्ष्य रखें  
- आचार्य भगवन्  
जिनवाणी के दर्पण में  
स्वयं का अवलोकन करें  
- उपाध्याय प्रवर

वरत्र नगरी भीलवाड़ा में  
युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008  
श्री रामलाल जी म.सा. व  
बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर  
श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के  
पावन सान्निध्य में 'शिखर महोत्सव'  
चातुर्मास का आगाज

देश-विदेश से श्रद्धा का जनसैलाब उमड़ा

मुमुक्षु सुरेश जी पामेचा, मुमुक्षु लोकेश जी चोपड़ा व  
मुमुक्षु वर्षा जी चोपड़ा की भव्य जैन भागवती दीक्षा संपन्न,  
मुमुक्षु दर्शना जी नाहटा की दीक्षा 14 अगस्त को भीलवाड़ा में

अरिहंत भवन, आर.के. कॉलोनी, भीलवाड़ा।

धन्य हो जाती वो धरती, जहाँ राम गुरु के चरण पड़ते हैं।  
धन्य हो जाते वे लोग, जो राम गुरु के दर्शन करते हैं।।

जन-जन में नैतिकता, मानवता, सच्चाई, ईमानदारी व धर्म के मर्म का बोध कराने वाले युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, मानवता के मसीहा, ज्ञान व क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रांति प्रदाता, जन-जन के भाग्यविधाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-20 व शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि ठाणा-40 का 'शिखर महोत्सव' चातुर्मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप की अनुपम आराधना के साथ प्रारंभ हुआ। आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के आगमसम्मत, हृदयस्पर्शी प्रभावशाली प्रवचनों की धूम मची हुई है। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का ताँता लगा हुआ है।

चातुर्मास प्रारंभ से ही एकासन, आयंबिल, उपवास, तेले की लड़ी निरंतर जारी है। ज्ञानवर्द्धक शिविरों के माध्यम से नए-नए ज्ञान का उपार्जन हो रहा है। 'लोच में क्या सोच' कार्यक्रम निरंतर जारी है। अभी तक 55 लोच हो चुके हैं, जिनमें 4 लोच महिलाओं ने करवाए हैं।



प्रातः मंगलमय प्रार्थना में गुणोत्कीर्तन के पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “धर्म की आराधना करने वाले बहुत हैं, लेकिन धर्म के मर्म को कितना समझ पा रहे हैं? धर्म क्या है? मन की संतुष्टि धर्म है। मन में यदि संतोष आ गया तो सदा प्रसन्नता रहती है, मन खिला हुआ रहता है। समझ लें कि हमारे जीवन में धर्म उतर गया। धर्म वह है जो मन को तृप्त, संतुष्ट कर दे, लेकिन हमारा मन संतुष्ट नहीं होता। इसका कारण भगवान ने बताया है कि यह चित्त (मन) अनेक प्रकार से सोचने वाला बन गया है। मानव का चित्त एक दिशा में नहीं चलता। अनेक दिशाओं में भटकता रहता है। तेल की घाणी का बैल गोल घूमता है, लेकिन रहता वहीं का वहीं है। वैसी दशा यदि हमारी बनी रह जाए तो फिर क्या फायदा होगा? जब तक मन संकल्प-विकल्प में चलता रहेगा, तब तक धर्म आराधना नहीं कर पाएँगे। मन को शांत करने की कोशिश करनी चाहिए। शांत होने के बाद धर्म आराधना करें, ऐसा हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हमारी इच्छाएँ दौड़ती रहती हैं। देखा-देखी करने में हमारी हानि होगी।”

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अनुकूल-प्रतिकूल हर परिस्थिति में धर्म की आराधना करनी चाहिए। आचार्य भगवन् से प्रेरणा लेकर समभाव की साधना करें। सुख-दुःख में सम रहे, वही साधक है।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने ‘जिया कब तक उलझेगा संकल्प विकल्पों में’ भाव गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि प्रेरणा देते-देते समय बीता जा रहा है।

साध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने ‘गुरुचरणों का आश्रय ले’ गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

इसी बीच 20 वर्षीय मुमुक्षु बहन दर्शना जी नाहटा सुपुत्री जितेंद्र कुमार जी किरण देवी नाहटा, सुपौत्री जीवनलाल जी देवी बाई नाहटा, नगरी (छ.ग.) की दीक्षा हेतु शकुंतला जी नाहटा, वीरमाता-पिता किरण देवी जितेंद्र जी नाहटा, महेश नाहटा, मोहन जी नाहटा, विनय जी नाहटा, पीयूष जी टाटिया, किरण जी, मधु जी नाहटा, वंदना जी छाजेड़, जिनेश जी, कल्प जी नाहटा आदि परिजनों ने अनुज्ञा-पत्र गुरुचरणों में समर्पित किया। प्रतिज्ञा-पत्र का पठन मुमुक्षु बहन दर्शना जी नाहटा ने किया। संपूर्ण सभा ‘राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है’, ‘हर्ष-हर्ष, जय-जय’ की ध्वनि से गुंजायमान हो गई।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मुमुक्षु दर्शना जी नाहटा की जैन भागवती दीक्षा 14 अगस्त के लिए जैसे ही घोषणा की, चहुँओर हर्ष की लहर दौड़ गई। एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु दर्शना जी नाहटा व परिवारजनों का स्वागत-सत्कार माला व शॉल द्वारा श्री साधुमार्गी जैन संघ व प्राज्ञ संघ, भीलवाड़ा की ओर से किया गया।

अपने भावोद्गार में मुमुक्षु दर्शना जी नाहटा ने कहा कि संयम में जो आनंद है, वह दुनिया की किसी अन्य चीज में नहीं है। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की कृपा व परिजनों के सहयोग से संयम मार्ग पर आगे बढ़ रही हूँ। धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु परिजनों द्वारा सदैव संस्कार मिले। यह स्वागत-अभिनंदन त्याग व संयम का है। एक बार अपनी संतानों को आरुग्गबोहिलाभ में भेजकर उन्हें सुसंस्कारित जरूर करें।

## युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश का अरिहंत भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

भीलवाड़ा संघ की वर्षों से इच्छा थी कि आराध्यदेव आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर का चातुर्मास प्राप्त हो। इस भावना को साकार रूप देने हेतु शास्त्रज्ञ परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् व बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का प्राज्ञ भवन से विहार कर 'त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की', 'भक्तों के भगवान की, जय बोलो गुरु राम की', 'संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं' आदि जयघोषों के साथ अरिहंत भवन, आर.के. कॉलोनी में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। हजारों की संख्या में जैन-जैनैतर भाई-बहन महापुरुषों की एक झलक पाने को उमड़ पड़े।

मंगल प्रवेश पश्चात् उपस्थित अपार जनमेदिनी को धर्म का मार्ग दिखलाते हुए श्रीमज्जैनाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "सुपात्रदान का बहुत महत्त्व है। भगवान महावीर ने नयसार के भव में सुपात्रदान दिया और सम्यक्त्व व मोक्ष मार्ग की प्राप्ति कर ली। सुपात्रदान की शर्त है कि द्रव्य शुद्ध होना चाहिए, देने वाले का भाव शुद्ध होना चाहिए और लेने वाला भी शुद्ध होना चाहिए। सुबाहु कुमार ने पूर्वजन्म में सुपात्रदान दिया और अपने आपको संसार से परित्त कर लिया। मुनि का एक वचन हमारे जीवन को अमंगल से मंगल बनाने में समर्थ होता है। हमारे सामने अवसर है हम भी सुपात्रदान से अपने आपको लाभान्वित करें। शुद्ध दान अगर एक कण का भी हो तो वह महत्त्वपूर्ण हो जाता है। चातुर्मास में क्या करना है? खाली तपस्या से मन को संतोष नहीं देना है। हमें देखना है कि मेरा क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष बढ़ा या घटा। इस पर आत्मचिंतन करना है।"

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर ने श्री सुखविपाक सूत्र का वाचन किया। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने 'आप पधारें भीलवाड़ा नगरी में, शुभ सौभाग्य हमारा है' भाव गीत प्रस्तुत किया।

चातुर्मास संयोजक व संघ मंत्री ने कहा कि यह 'शिखर महोत्सव' चातुर्मास धर्म, ध्यान, तप, त्याग, दीक्षा प्रसंग का एक नया कीर्तिमान स्थापित करेगा। विभिन्न तप-त्याग के पच्चक्खाण हुए। मंगलपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

प्रवचन सभा पश्चात् आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर का महावीर भवन, सुभाष नगर में पधारना हुआ। आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने उपस्थित श्रद्धालुओं को अपनी दिव्यवाणी से आगम का अमृत पिलाते हुए फरमाया कि "अब तक मैंने क्या किया है? क्या करना बाकी है? सामर्थ्य होते हुए भी मैं क्यों नहीं कर पा रहा हूँ? इन पर आत्मचिंतन जरूर करें। इस मनुष्य जन्म में आत्मा से परमात्मा बना जा सकता है। जिनेश्वर भगवान की वाणी को हम आचरण में लाएँ। क्रोध, मान, माया, लोभ को जीतकर वीतरागता को प्राप्त कर सकते हैं। शांत भाव से धर्मासिद्धि करें।"

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि "तीर्थकर देवों की वाणी के दर्पण में स्वयं का अवलोकन करते हैं तो जीवन के कई दोष दृष्टिगत होते हैं। दोष दूर होने पर हम सुखी बन जाएँगे। एक प्रेरणा जगती है कि यह

करूंगा, वह करूंगा। संकल्प पैदा होते हैं, लेकिन संकल्पों को हम अंजाम दें। हमारी कितनी धारणाएँ मन तक सीमित रह गईं। इच्छाएँ कभी पूरी नहीं होती हैं। सुपात्रदान की भावना अति उत्तम है। साधु के लिए कभी जल्दी व ज्यादा बनाना नहीं है। सुपात्रदान देने से महान पुण्य का लाभ मिलता है, लेकिन शिष्य की भिक्षा महादान है। वे माता-पिता धन्य हैं जो प्रभु व गुरुचरणों में शिष्य प्रदान करते हैं।”

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, सुभाष नगर के मंत्री ने महापुरुषों के आगमन पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। तेला तप व बारह एकासना, बारह आर्यबिल, बारह उपवास के प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने लिए।

सुभाष नगर से आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का पुनः अरिहंत भवन पधारना हुआ। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए। भीलवाड़ा के लोकप्रिय सांसद दामोदर जी अग्रवाल ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

18  
जुलाई  
2024

## श्रुत, विनय व तपस्या से समाधि की प्राप्ति

प्रातःकाल की प्रभात बेला में गुरुवर व जिनधर्म को समर्पित मंगलमय प्रार्थना के स्वरों से संपूर्ण माहौल धर्ममय बन गया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति में जन-जन के धर्मपिपासु मन को पावन करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “साधना का मूल लक्ष्य समाधि प्राप्त करना है। मन यदि स्वस्थ है, चंगा है तो कहते हैं कि ‘मन चंगा तो कठोती में गंगा’। क्रोध, मान, माया, लोभ से समाधि प्राप्त नहीं की जा सकती। समाधि के लिए भगवान ने चार पुरुषार्थ बतलाए हैं - श्रुत, विनय, आचार व तपस्या। इन चार प्रकार के पुरुषार्थों से हम समाधि प्राप्त कर सकते हैं। पहला उपाय श्रुत का अर्थ आगम का ज्ञान, तत्त्वज्ञान जब हृदयंगम होता है तो समाधि मिलती है। मन छोड़े के समान है। यदि नियंत्रण में नहीं रखा जाए तो मन नरक में ले जाने वाला है। ज्ञान की लगाम से मन को नियंत्रित किया जा सकता है। ज्ञान में अपने आपको लगाएँगे तो हमारा मन सधता हुआ चला जाएगा, नहीं तो मन की उड़ान कहीं से कहीं ले जाने वाली बन जाएगी। जिनका मन सदा धर्म में लगा रहता है, उनके सामने कोई भी दुविधा, दुर्बल नहीं होता। हमारी साधना द्रष्टाभाव की होनी चाहिए।”

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने ‘पुण्यशाली हैं हम भाव्यशाली’ गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हमें जिनशासन मिला है, महान सद्गुरु का योग मिला है। गुरु का एक वचन भी जीवन में उतर जाए तो जीवन का कल्याण हो जाएगा। महान आचार्य श्री रामेश का चातुर्मास भीलवाड़ा संघ को मिला है। हमें धर्म-ध्यान व तप-त्याग की ज्योत जलानी है।

साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने ‘राम गुरुवर चरणों में तेरे करते हैं शत-शत नमन’ गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री महावीर सेवा समिति के अध्यक्ष ने कहा कि त्यागी महापुरुषों के पधारने से भीलवाड़ा की धरती पावन व पवित्र हो गई है। हम आपके सदैव ऋणी रहेंगे। महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सहमंत्री ने स्वर्णिम अवसर का अधिकाधिक लाभ लेने की प्रेरणा दी।

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. के 9 उपवास के पश्चात् पुनः 2 उपवास और श्री इभ्य मुनि जी म.सा. के 5 उपवास सहित अन्य कई गुप्त तपस्याएँ गतिशील हैं।

निर्दोष भिक्षा विधि शिविर में श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. एवं साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. ने भाई-बहनों को मार्गदर्शन प्रदान किया। उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, समाचारी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए।

19  
जुलाई  
2024

## धर्म वीरों के लिए है, कायरों के लिए नहीं

‘हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला’ भजन की मधुर स्वरलहरी में प्रार्थना की गई। प्रवचन स्थल पर आचार्य भगवन् के पावन श्रीमुख से जिनवाणी श्रवण हेतु विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति धर्मानुरागता की सूचक थी। धर्मसभा को संबोधित करते हुए जगत् उद्धारक परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “**धर्म दो प्रकार से स्वीकार किया गया है, एक भाव से और दूसरा क्रिया से। क्रिया व भाव दोनों साथ में जुड़े होते हैं तो हमें उसका परिणाम मिलता है। दस प्रकार से धर्म की आराधना करने हेतु बताया गया है - क्षमा, मृदुलता, सहजता, अहिंसा, उपशम भाव यदि नहीं हैं तो धर्म की आराधना संभव नहीं है। कषाय का उद्वेग हो रहा हो तो धर्म कहीं खिलेगा नहीं। छल, कपट, माया आदि दोष दूर हो जाएँगे तो आत्मा का उत्थान होना स्वाभाविक है। धर्म आराधना से पहले हमें अपनी धर्म भूमि को समतल करना चाहिए। यदि हमारे मन में कोई भी विवाद की बात हो तो धर्म की आराधना नहीं होगी। धर्म वीरों के लिए है, कायरों के लिए नहीं। हमें दुनिया को नहीं, अपने आपको जीतना है। जिसने अपने मन को नियंत्रित कर लिया, वह सुखी होगा। मन को खुला छोड़ देते हैं तो मन दुःखी होता है। जिसकी सोच छोटी होगी, वह क्षमा करने में समर्थ नहीं होगा।”**

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने टी.वी., मोबाइल आदि से बचने की प्रेरणा दी। साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

समता महिला मंडल ने ‘**राम पधारें हैं, मेरे भगवान पधारें हैं**’ स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने तप-त्याग से जुड़ने की अपील की। तप-त्याग के विभिन्न प्रत्याख्यान हुए। निर्दोष भिक्षा विधि शिविर में श्रावक-श्राविकाओं ने शुद्ध भिक्षा विधि की जानकारी प्राप्त की।

20  
जुलाई  
2024

## चातुर्मासिक पर्व का आगाज

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना हेतु चातुर्मास एक श्रेष्ठ अवसर है। भीलवाड़ा के गुरुभक्तों के सौभाग्य से इस महान भाग्यशाली, पुण्यशाली क्षेत्र में युगनिर्माता, युगपुरुष, मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् व बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा 20 तथा शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि ठाणा 40 का ‘**शिरखर महोत्सव**’ चातुर्मास प्राप्त हुआ है। चातुर्मासिक पर्व के शुभारंभ पर देश के कोने-कोने व भीलवाड़ा नगर के श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहन आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के दर्शन-प्रवचन के लिए उमड़ पड़े। प्रचुर संख्या में उपवास, पौषध, सामायिक, संवर, दया, प्रतिक्रमण आदि की आराधना हेतु होड़ लग गई।

प्रातः मंगलमय प्रार्थना में ‘**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**’ गुरुभक्ति भजन से आत्मोन्नति हेतु प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए तरुण तपस्वी परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने अपनी सिंहगर्जना में फरमाया कि “**भावना बहुत महत्त्वपूर्ण है। भावना जितनी गहरी होती जाती है, उतना ही हमारे जीवन में आनंद बरसने लगेगा। उतनी ही हमारी प्रसन्नता बढ़ती हुई चली**

जाएगी। प्रसन्नता कहीं बाहर नहीं है, हमारे भीतर है। जितने गहरे उतरेंगे, उतनी ही प्रसन्नता प्राप्त होगी। चातुर्मासिक प्रसंग एक प्रकार से साधुओं के लिए मन को नियंत्रित करने का प्रसंग है। साधु घुमक्कड़ होते हैं, लेकिन साधुओं को चार महीने एक जगह आबद्ध होना होता है। भीड़ कम हो या ज्यादा, श्रोता श्रेष्ठ होने चाहिए। श्रोता जितने क्वालिटी वाले होंगे, तत्त्व को ग्रहण करने में समर्थ होंगे तो जीवन में बदलाव लाने हेतु उनकी इच्छा बनेगी। कई लोग समय पास करने के लिए धर्मस्थान में आते हैं। सच्चे श्रोता की पहचान है कि वह कुछ लेकर जाता है, खाली हाथ नहीं जाता। सद्गुरु का एक वचन भी हृदय में उतर गया तो हमारे जीवन को आमूलचूल परिवर्तित करेगा। सारी समस्या का समाधान एक वचन में हो जाएगा, फिर विचार बदल गया, दृष्टि बदल गई, सोच बदल गई, समझ बदल गई। साधु के दर्शन पुण्य रूप होते हैं। साधु तीर्थ रूप होते हैं। 20 संत और 40 महासतियों के सान्निध्य का आपको मौका मिला है। केवल दर्शन व वंदन से लाभान्वित न हों, अपने ज्ञान में वृद्धि करें, दर्शन को कुशल बनाएँ, चारित्र्य को श्रेष्ठ बनाएँ और सच्चे श्रोता बनकर उसे ग्रहण करने का लक्ष्य रखें।”

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि दान, शील, तप, सामायिक, संवर, पौषध, गुरुदर्शन आदि से अहोभाव से जुड़ जाएँगे तो ये भाव प्रसन्नता देंगे। साधु-साध्वी गोचरी पधारें तो अहोभाव व प्रसन्नता होनी चाहिए। गुरुदेव के दर्शन हों तो अपना मन अहोभाव से जुड़ जाना चाहिए। चातुर्मास में प्रत्याख्यान लेते हैं तो उसका पालन भी अहोभाव से होना चाहिए। चातुर्मास काल में प्रतिदिन एक सामायिक, घर पर रहते हुए कच्चे पानी का त्याग, रात्रिभोजन त्याग, जमीकंद का त्याग, 21 द्रव्यों से ज्यादा नहीं खाना, एक विगय का त्याग, रोज 36 वंदना करना, कम से कम 8 दया करना, सेल की घड़ी नहीं पहनना, सौंदर्य प्रसाधन का त्याग करना आदि नियमों का यथाशक्ति पालन करना चाहिए।

साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि 14 वर्ष के बाद भीलवाड़ा में गुरु सान्निध्य का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। पहले नाना गुरु व राम गुरु के दर्शन एक साथ हुए। अब भीलवाड़ा में राम गुरु व उपाध्याय प्रवर के सूरज-चाँद के रूप में एक साथ दर्शन हुए।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने ‘**राम राम जय गुरुवर राम**’ गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने शुद्ध सामायिक की आराधना तथा हर परिस्थिति में समभाव की साधना करने की अद्भुत प्रेरणा दी। श्री साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष ने कहा कि वर्षों बाद आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर का चातुर्मास ‘**शिखर महोत्सव**’ के रूप में हमें प्राप्त हुआ है। सबको मिल-जुलकर धर्म-ध्यान, तप-त्याग के साथ इसे सफल बनाना है। समता बालिका मंडल ने गुरु महिमा गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने महापुरुषों के पावन सान्निध्य का अधिकाधिक लाभ उठाने की अपील की। दो माह व चार माह हेतु शीलव्रत पालन, रात्रिभोजन व जमीकंद त्याग के प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने लिए।

चातुर्मास के प्रथम दिन मासखमण तप पूर्ण करने वाली कल्पना जी दीपक जी बेताला, भीलवाड़ा ने गुरुचरणों में 30 उपवास (मासखमण) के प्रत्याख्यान जैसे ही ग्रहण किए, पूरी सभा जय-जयकारों से गुंजायमान हो उठी। विहार सेवाकर्मी बगदीराम जी ने 20 उपवास के प्रत्याख्यान लिए। निर्दोष भिक्षा विधि शिविर में श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. व साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. ने शुद्ध भिक्षा की जानकारी दी।

## भोजनार्थी नहीं, मोक्षार्थी बनें

आज चातुर्मास प्रारंभ पश्चात् एक विशेष प्रसंग इस चातुर्मास की प्रथम समता शाखा के आयोजन के रूप में उपस्थित हुआ। प्रातःकाल से ही अपार जनसैलाब स्थानक की ओर उमड़ रहा था। गुरुभक्तों ने यथासमय स्थानक पहुँचकर आचार्य भगवन् के सान्निध्य में समता शाखा की आराधना कर अपना जीवन धन्य बनाया। देश-विदेश से दर्शनार्थी आराध्यदेव के दर्शन-वन्दन, मंगलपाठ व प्रवचन श्रवण के लिए उपस्थित हो रहे हैं। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, धांधोलाई में आयोजित प्रवचन पांडाल में **‘जीवन परिवर्तन’** प्रवचनमाला के अंतर्गत प्रशांतमना, उत्क्रांति प्रदाता परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **“आत्म-समाधि के लिए श्रुत, विनय, आचार व तपस्या की जाती है। आध्यात्मिक शांति-समाधि की कोई कीमत नहीं होती, उसकी महिमा अलग ही होती है। यदि दूसरों की सेवा लेने की आदत पड़ गई तो शांति-समाधि छिन्न हो जाएगी। विनय के बिना श्रुत की आराधना नहीं होगी, उसका रहस्य प्राप्त नहीं हो पाएगा। विनय से बुद्धि विकसित होती है। विनय के लिए अपने अहंकार को छोड़ना होगा। संघ-समाज की सेवा करने में भी यदि अहंकार खड़ा रहेगा तो वह सेवा नहीं होगी। कभी मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा के लिए सेवा की, किंतु मान से मनोयोगपूर्वक धर्म की आराधना नहीं की। सहयोग करने वाले बहुत कम लोग मिलेंगे, क्योंकि टाँग खींचने की भावना वाले ज्यादा होते हैं। किसी भी विचार या क्रिया के सोचने के प्रकार भिन्न-भिन्न हैं। हम यदि सकारात्मक सोचेंगे तो हमारा मन खिन्न नहीं होगा। हमें मनुष्य तन मिला है, किंतु मोक्षार्थी बने या नहीं? **‘मानव का तन अनमोल मिला, मोक्षार्थी बनो, मोक्षार्थी बनो’**। हम बहुत बार भोजनार्थी, सेवार्थी, विद्यार्थी बन गए, किंतु मोक्षार्थी बने या नहीं? जो मोक्ष प्राप्त करने का इच्छुक है, मोक्ष के रास्ते पर चलने वाला है, उसे मोक्षार्थी कहते हैं।”**

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सामायिक विधि के साथ होनी चाहिए और द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव की शुद्धि का ध्यान रखना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। कई भाई-बहनों ने दो व चार माह हेतु शीलव्रत का प्रत्याख्यान लिया। धार्मिक क्रियाविधि, तप, अनुष्ठान शिविर में श्री यलेश मुनि जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन दिया। बाहर के दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। कल्पना जी बेताला का मासखमण सानंद संपन्न हुआ। अन्य कई गुप्त तपस्याएँ जारी हैं।

महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत 9 नवकार, 9 लोगस्स, 9 णमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरु वंदना करने का प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने लिया। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आयोजित जिज्ञासा-समाधान कार्यक्रम में आगमसम्मत सुंदर समाधान प्राप्त कर जनता अभिभूत हो गई।

## मोह का नशा आत्मकल्याण में घातक

**‘हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला’** भजन के सामूहिक संगान के साथ मंगलमय प्रार्थना की गई। प्रवचन पांडाल में विशाल धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी गुरुवचनों से आत्मतृप्त होने हेतु लालायित नजर आ रही थी। दयानिधि, कृपानिधान आचार्य भगवन् ने अपूर्व कृपा का वर्षण कर उपस्थित जनसमूह को भगवान महावीर की अमृतवाणी रूप खजाना प्रदान करते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **“मनुष्य जन्म एक अवसर है, जहाँ आत्मा से परमात्मा बना जा सकता है। चार गतियों में, नरक-निगोद में जीव दुःख भोगता है। वहाँ धर्म करने का अवसर**

नहीं मिलता। तिर्यच गति में कुछेक जीवों को धर्म करने का अवसर मिलता है। देवगति में दर्शन का सम्यक् रूप घटित हो सकता है। मनुष्य जीवन को देव दुर्लभ कहा जाता है, किंतु जो जहाँ है वहाँ संतुष्ट नहीं रहता। आत्मकल्याण के लिए संतोष होना आवश्यक है। मोह का नशा इतना भारी है कि व्यक्ति यह भी नहीं समझ पा रहा है कि 'मैं कौन हूँ'। हम दुनिया की पहचान कर रहे हैं, किंतु स्वयं की पहचान नहीं कर पा रहे हैं। कहाँ, क्या हो रहा है उस ओर ध्यान दे रहे हैं, किंतु अपनी ओर ध्यान नहीं दे रहे। जीवाजीव का ज्ञान नहीं होगा तो संयम की आराधना नहीं कर पाएँगे। सामायिक में हम इतनी ऊर्जा भर लें कि हमारे सामने कैसे भी ऊँचे-नीचे प्रसंग आ जाएँ तो हमारा चित्त समाधि में रहे, तनाव और टेंशन में नहीं जाए। तनाव मतलब हम धर्म की राह से हट गए हैं। परेशानी होती है मोह-माया व स्वार्थ से, इसलिए स्वार्थ भावना को दूर करें।”

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने आगम अध्ययन पर जोर देते हुए फरमाया कि प्रतिदिन 15 मिनट अवश्य रूप से आगम का पठन करें। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने 'राम आ गए हैं, गुरु राम आ गए हैं' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सुश्राविका शांता देवी मोहनलाल जी मुणोत, जलगाँव के निधन पर पारिवारिकजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

धार्मिक क्रियाओं की शुद्ध विधि शिविर में संत श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. व साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन दिया। 'लोच में क्या सोच' कार्यक्रम निरंतर जारी है।

23  
जुलाई  
2024

## उठो, प्रमाद मत करो

प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में चतुर्विध संघ की नयनाभिराम उपस्थिति में जीवन परिवर्तनकारी प्रवचन शृंखला का प्रवाह हुआ। सिरीवाल प्रतिबोधक परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “मोक्ष के चार दुर्लभ अंग हैं। मनुष्य जन्म प्राप्त कर लिया, वीतराग वाणी श्रवण करने का अवसर प्राप्त कर लिया, उस पर श्रद्धा का भी हमें विश्वास है तो अब केवल संयमी पुरुषार्थ बाकी रह गया है। इसलिए आत्मकल्याण के लिए हमें सुखद अवसर मिल गया है। अब हमें जगने में देरी नहीं करनी चाहिए। आचारांग सूत्र में एक सूत्र है - 'उड़िए णो पमायए', उठो, प्रमाद मत करो। प्रमाद का अर्थ है आत्मा को भूल जाना। संसार में रहते हुए, अनेक कार्य करते हुए आत्मा का स्मरण बना रहना कठिन हो जाता है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र से लेना-देना नहीं है, ऐसी बातें साधु को नहीं करनी चाहिए। चार विकथा व इधर-उधर की बात सामायिक में नहीं करनी चाहिए। श्रावक हो या साधु, हर किसी को स्त्री कथा, भक्त कथा, देश कथा और राज कथा टालने का लक्ष्य रखना चाहिए। आत्मा व ज्ञान की चर्चा करने में बाधा नहीं है। जैसे श्वासोच्छ्वास की क्रिया चल रही है वैसे ही भगवान के प्रति हमारे भाव व स्मरण चलता रहे।”

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने शुद्ध सामायिक की आराधना करने की प्रेरणा देते हुए फरमाया कि ज्ञान का अपच अभिमान है और क्रिया का अपच दूसरों की निंदा करना है। ऐसी प्रवृत्ति से हम बचें। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। धार्मिक क्रियाओं की शुद्ध विधि शिविर में श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. व साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा. ने ज्ञानार्जन करवाया। 93 वर्षीय मोहन जी सुधार (देवरिया) ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर जीवन धन्य किया।

## जहाँ सत्य है, वहाँ डर नहीं

प्रभातोदय के साथ ही मंगलमय प्रार्थना से जीवन पावन हो गया। राजकीय प्राथमिक विद्यालय, धांधोलाई में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आगममर्मज्ञ परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “हमें जो समय मिला है उसे कैसे सार्थक करना है, यह हमारे पर निर्भर है। हम चाहें जैसे समय का सदुपयोग या दुरुपयोग कर सकते हैं। यदि हम बुरे कार्य करेंगे तो उसका परिणाम बुरा आएगा और यदि अच्छे कार्य करेंगे तो परिणाम भी अच्छा आएगा। अब चिंतन हमें करना है कि हम कैसे कर्म करें? साधु-संतों से परिचय करना चाहिए। साधु का परिचय पापों का घात कराने वाला होता है। हमारा लक्ष्य कर्मों की निर्जरा करना, समाधि को प्राप्त करना और उस पर हमारा निशाना होना चाहिए। जब हमारे साथ सत्य है तो हमें किसी से डरने की आवश्यकता नहीं है। अभयदान सर्वश्रेष्ठ दान है। यदि हम एक सामायिक भी करते हैं तो छह काय के जीवों को शांति-समाधि मिलती है। हमें लोगों में परिवर्तन लाने की जरूरत नहीं है, अपने भावों में परिवर्तन लाना है। परिवर्तन के लिए चिंतन करना चाहिए कि मैं अपने जीवन में कैसे बदलाव ला सकूँ। हम इधर-उधर की बातों में समय निकालते हैं। इससे अच्छा है कि स्वाध्याय व ध्यान में समय लगाएँ तो हमारा वह समय सार्थक होगा।”

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने सामायिक में निंदा, विकथा से दूर रहने तथा इधर-उधर की व्यर्थ चर्चा सामायिक में नहीं करने की शिक्षा प्रदान की। साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा., साध्वी श्री विरल श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने ‘अहो अहो मेरे भगवन्’ गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। कर्म सिद्धांत की कक्षा में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने सुंदर समझाइश दी।

## गुरु के इशारे पर चलें तभी सच्ची समर्पणा

मंगलमय प्रातःकालीन प्रार्थना में प्रभु व गुरुभक्ति पश्चात् भक्तों का जीवन धन्य बनाने वाले परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करते हुए मंगलपाठ फरमाया। प्रवचन सभा में श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारा जीवन कुछ प्राप्त करने, कुछ कर गुजरने के लिए है। हमारा जीवन ऐसा होना चाहिए कि कोई आए और हमें बनाए। हमने गुरु को ढूँढ़ा, परंतु गुरु हमें नहीं अपनाते तो क्या होगा? बात यह नहीं कि गुरु को हमने खोजा, प्रश्न यह है कि गुरु ने हमको अपनाया या नहीं? मैं गुरु का बन पाया हूँ कि नहीं? जब परम सौभाग्य का उदय होता है तब गुरु की प्राप्ति होती है। गुरु के इशारे पर जब चलेंगे तभी गुरु के प्रति सच्ची समर्पणा होगी। गुरु के हाथ में जीवन की डोर है। हमें महान राम गुरु प्राप्त हुए हैं। अब जैसा बनना हो वैसा बन सकते हैं। यह जीवन इधर-उधर भटकने के लिए नहीं मिला है।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सदैव सोच-विचार कर बोलें। जितना आवश्यक है उतना बोलें। अनावश्यक व्यर्थ न बोलें। स्वाध्याय करते समय शुद्ध उच्चारणपूर्वक बोलने व सीखने का लक्ष्य रखें। सामायिक भी करें तो 32 दोष टालकर करें। सामायिक अविधि से करने से दोष लगता है। सांसारिक कार्य आने के बावजूद भी सामायिक को गौण न करें। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। कई भाई-बहनों ने चार माह के लिए जमीकंद का त्याग ग्रहण किया। कर्म सिद्धांत कक्षा में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन दिया। स्कूलों में व्यसनमुक्ति व संस्कार जागरण कार्यक्रम हुए। समता महिला मंडल, मुंबई ने विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान लिए।



## लाभ होने पर गर्व नहीं करें

दैनिक धार्मिक दैनंदिनी में प्रार्थना तथा धर्म-ध्यान पश्चात् साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् व बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में प्रवचन सभा का आयोजन हुआ। इस धर्मसभा में ज्ञानपिपासु गुरुभक्तों को आत्मतृप्त करते हुए जिनशासन प्रद्योतक परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “आत्मकल्याण के सूत्र आत्मा में भरे पड़े हैं, उनका उपयोग करना हमारे लिए बहुत जरूरी है। एक छोटा-सा सूत्र ‘लाभो तिण मज्झेसा’, लाभ होने पर गर्व नहीं करें। सामान्य व्यक्ति को थोड़ा-सा लाभ हो जाए तो उसके पाँव जमीन पर नहीं टिकते। गर्व नहीं करोगे तो जमीन पर चलते रहोगे। यदि गर्व आ गया तो जमीन से पाँव उखड़ जाएँगे। दूसरी बात है - लाभ नहीं हो तो शोक नहीं करना। प्रत्येक प्राणी लाभ के लिए प्रयत्नशील है। हकीकत में लाभ क्या है? धन छोड़ना लाभ है या नहीं छोड़ना? समभाव बढ़े वह लाभ है और समभाव नहीं बढ़े वह हानि है। लाभ व हानि में मन शांत करना चाहिए। व्यापार किया जाता है तो कभी लाभ होता है तो कभी हानि भी हो जाती है।”

आचार्य भगवन् के श्रीमुख से ‘वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से’ चारित्र भाग की अति सुंदर व्याख्या से धर्मप्रेमी जनता भाव-विभोर हो गई।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने बारह व्रतों को धारण करने व आरंभ-समारंभ से दूर रहने की प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। परम गुरुभक्त हरकचंद जी गोखरू, कंवलियास के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। कर्म सिद्धांत की कक्षा में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन दिया।

## पृथ्वी के समान सहनशील बनें

‘हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला’ भजन के साथ प्रातःकालीन प्रार्थना की गई। शिखर महोत्सव चातुर्मास में गुरुमुख से व्याख्यानों का ठाठ लग रहा है। गुरुवर के पावन श्रीमुख से प्रतिदिन प्रवाहमान जिनवाणी से जन-जन अपना जीवन सार्थक कर रहे हैं। प्रार्थना पश्चात् अरिहंत भवन में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आगमज्ञान के पुरोधा परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी गुणमय दिव्यवाणी में फरमाया कि “मुनि को पृथ्वी के समान सहनशील होना चाहिए। सहन कौन कर सकता है? जिसमें सामर्थ्य होगा वही सहनशील होगा। जो सामर्थ्यवान नहीं होगा वह सहन नहीं कर पाएगा। मुनि को सामर्थ्यवान होना चाहिए। कोई कितना भी अपराध कर ले, लेकिन मुनि को प्रतिकार नहीं करना चाहिए। मुनि के मन में शिकायत के भाव नहीं आएँ कि मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? यदि हलचल पैदा होती है तो यह हमारी साधना के कारण होती है। मुनि द्वारा धर्मोपदेश दिया जाता है, जो जीवन उन्नति की राह दिखाने वाला होता है। जिसको जितनी खुराक चाहिए वह ले सकता है। मुनि के उपदेश का सार यही है कि कषायों को शांत व सीमित करो, विषयों एवं आरंभ-परिग्रह से ऊपर उठो। यही सार है। मुनि धन इकट्ठा करने का उपदेश नहीं दे सकता कि तुम धन कमाओ।”

‘वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से’ चारित्र भाव की सुंदर व्याख्या आचार्य भगवन् ने फरमाई।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने शुद्ध आहार बहराने व भिक्षा विधि में दोष नहीं लगाने की विशेष प्रेरणा दी एवं दीक्षार्थी व सुश्रावक बनने का आह्वान किया। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री

जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने 'राम गुरु हैं खेचैया' भक्ति गीत प्रस्तुत किया।

## सादगीपूर्ण दीक्षा की शुभ भावना : ओघा बँधाई संपन्न

दीक्षा, राग से वीतराग की महायात्रा है। इसी पथ पर अग्रसर होने वाले मुमुक्षु भाई लोकेश जी चोपड़ा, शिंदखेड़ा ने परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में अत्यंत ही सादगीपूर्ण तरीके से जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया। न कोई वरघोड़ा, न कोई अभिनंदन समारोह, केवल ओघा बँधाई कार्यक्रम नवकार जाप के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम में समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल, अरिहंत महिला मंडल, जैन नवयुवक मंडल, शिंदखेड़ा ने भक्ति गीतों से माहौल को उल्लासमय बना दिया।

इस अवसर पर श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता युवा संघ व समता महिला मंडल, भीलवाड़ा के पदाधिकारियों तथा श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ व आरूग्गबोहिलाभं द्वारा मुमुक्षु भाई लोकेश जी चोपड़ा का अभिनंदन मात्र तिलक लगाकर व वीर माता वर्षा जी राजेंद्र जी चोपड़ा, वीर दादा जसराज जी चोपड़ा, कमलेश जी अश्विनी जी, मनीष जी, चेतन जी हितेश्री जी चोपड़ा, हेमंत जी अलका जी कुचेरिया, हीना जी यशपाल जी टाटिया आदि परिवारजनों का तिलक, शॉल व माला द्वारा आत्मीय बहुमान किया गया।

मुमुक्षु भाई लोकेश जी चोपड़ा ने अपने भावोद्गार में कहा कि आप जय-जयकार दीक्षार्थी का कर रहे हैं, पर सब कुछ गुरु राम हैं। उन्हीं की कृपा सर्वोपरि है। मैंने अनंत बार यह वेश धारण किया है। अब यह वेश अंतिम बार हो इसके लिए राम गुरु व उपाध्याय प्रवर के चरणों में संयम ग्रहण करने जा रहा हूँ और आप सबके आशीर्वाद की कामना करता हूँ। जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए क्षमायाचना करता हूँ।

28  
जुलाई  
2024

## मुमुक्षु सुरेश जी पामेचा तथा मुमुक्षु सुपुत्र के साथ माँ भी संयम पथ पर अग्रसर

संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे...

वैराग्य पथ के कुशल मार्गदर्शक, जो आगमसार समझाते हुए मोक्ष मार्ग की ओर भवीजनों को अग्रसर कर रहे हैं। ऐसे साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में 3 मुमुक्षु भाई-बहनों ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। पूर्व में आज के दिन के लिए केवल मुमुक्षु भाई लोकेश जी चोपड़ा की ही दीक्षा घोषित थी, लेकिन पांडाल में जब 3 मुमुक्षु भाई-बहनों का धवल वेश में प्रवेश हुआ तो उपस्थित सारी जनता आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के अतिशय हेतु अहोभाव व्यक्त करने लगी। मुमुक्षु भाई लोकेश जी चोपड़ा के साथ उनकी माताजी वर्षा जी चोपड़ा, शिंदखेड़ा तथा मुमुक्षु भाई सुरेश जी पामेचा, पिपलिया मंडी भी आत्मकल्याण का संकल्प लिए गुरुचरणों में उपस्थित हुए।

सिद्धों की आत्मा से मेरा तार मिल गया। शुद्ध सुख स्वभाव से मेरा तार मिल गया।।

विशाल धर्मसभा में दीक्षा साक्षी बनने हेतु उपस्थित अपार गुरुभक्तों को संयम का मर्म बताते हुए संयम सुमेरु आचार्य भगवन् अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "धन, परिवार, भौतिक सुख-सुविधाओं की इच्छा हर किसी को होती है, किंतु आत्मकल्याण की इच्छा विरले व्यक्तियों को ही होती है। मुमुक्षु लोकेश जी चोपड़ा के साथ उनकी माताजी वर्षा जी चोपड़ा व सुरेश जी पामेचा, पिपलिया मंडी भी हिम्मत करके संयम रथ पर सवार हो गए हैं।

हमें भी इस प्रसंग से प्रेरणा लेकर मोक्षार्थी बनना है। हमें भी उन गुणों को आत्मसात करना है। संसार का वैभव एक बार नहीं अनेक बार प्राप्त किया, किंतु उससे लाभ क्या हुआ? हम जहाँ हैं वहीं बैठे हुए हैं। हमें मनुष्य जन्म, जिनेश्वर देवों का धर्म मिला है। हम अपने सौभाग्य को दुर्भाग्य में नहीं बदलें, अपितु सौभाग्य को शिरोधार्य कर आगे बढ़ें, जिससे हमारे नरक-निगोद टल जाएँ। पुरुषार्थी ही मोक्षार्थी होता है। धर्म के क्षेत्र में परिश्रम होता है, उसी को पुरुषार्थ कहा है। चार दुर्लभ में से तीन को हमने प्राप्त कर लिया, लेकिन चौथा बोल संयम में पुरुषार्थ संयमी आत्मा ने ही प्राप्त किया है। संपूर्ण सावद्य योगों का त्याग करने से संयम भाव पैदा होता है। अपने आप पर हमारा नियंत्रण हो जाता है तो मन नियंत्रण में रहता है। संयमी जीवन आत्म-नियंत्रण है। मन का नियंत्रण तप और संयम से किया जाए। आरंभ और परिग्रह सांसारिक दलदल हैं। उस कीचड़ में फँसना संसार है और उस कीचड़ से बाहर निकलना संयम है। संयम में आत्मा की उड़ान भरी जाती है। जीना है तो धर्म के लिए और मरना है तो धर्म के लिए। धर्म कार्य में कभी अंतराय नहीं दें। ऐसा अपूर्व अवसर मेरे जीवन में आए, ऐसी भावना भाएँ।”

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने ‘**पुण्यशाली हैं हम भाव्यशाली**’ गुरुभक्ति गीत के साथ फरमाया कि साधनों के होते हुए भी उनका त्याग करना बहुत कठिन कार्य है। एक दिन मोबाइल का त्याग या एक माह रात्रिभोजन त्याग के लिए भी बहुत सोचना पड़ता है तो संपूर्ण संसार की मोह-माया का त्याग कोई सरल कार्य नहीं है। वीर आत्मा ही वीरता का काम करते हैं और परम मंजिल की ओर आगे बढ़ जाते हैं। गुरु हैं तो सब कुछ है, नहीं तो कुछ भी नहीं है।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा., श्री रामयश मुनि जी म.सा. आदि संतरत्नों ने ‘**परम प्रभु मेरी अर्ज सुनना... मेरे नाम के आगे राम लगे**’ संयम गीत प्रस्तुत कर सभी को भाव-विभोर कर दिया। साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने अपने भावोद्गार में ‘**तेरा भाव्य सचाया है, जिनशासन पाया है**’ भजन प्रस्तुत किया। मुमुक्षु भाइयों ने ‘**वीतरागता की ओर बढ़ रहे हैं ये चरण**’ तथा मुमुक्षु बहनों ने ‘**संयम की महिमा क्या है जीकर दिखा देना, दुनिया गाए यश तेरा इतिहास रचा देना**’ संयम गीतों से सभी को वैराग्य में सराबोर कर दिया।

साध्वी श्री वीतराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् आदर्श सिद्धांत व अनुशासन के हिमायती हैं। आपश्रीजी सिद्धांतों से कोई समझौता नहीं करते।

उपाध्याय भगवन् ने दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए सर्वप्रथम तीनों मुमुक्षुओं से दीक्षा के लिए तैयारी के संबंध में जैसे ही पूछा तो तुरंत ही तीनों मुमुक्षुओं ने संयमरत्न शीघ्र ही प्रदान करने का निवेदन किया। तत्पश्चात् उपस्थित जनसमूह से दीक्षा हेतु स्वीकृति चाही तो दीक्षार्थी भाई-बहनों के परिवार, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री साधुमार्गी जैन संघ, महिला मंडल व समता युवा संघ, भीलवाड़ा के पदाधिकारियों व सदस्यों सहित उपस्थित अपार जनसमूह ने अपने दोनों हाथ खड़े कर दीक्षा की पूर्ण अनुमोदना कर कर्मनिर्जा का लाभ लिया। तीनों मुमुक्षुओं ने उपस्थित जनसमूह से जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए क्षमायाचना की। बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने संपूर्ण दीक्षा विधि पूर्ण की।

संयम सुमेरु आचार्य भगवन् ने प्रातः 6:43 बजे तीन बार करेमि भंते के पाठ से तीनों मुमुक्षुओं को संपूर्ण सावद्य योगों का त्याग करवाकर नवकार मंत्र के पाँचवें पद पर आरूढ़ किया। नवदीक्षित संतों का केशलुंचन आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के करकमलों से तथा नवदीक्षिता साध्वीवर्या का केशलुंचन शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. के करकमलों से संपन्न हुआ। ‘**राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है**’ व **जयवंता-जयवंता** गीतों से संपूर्ण पांडाल गुंजायमान हो गया। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने महापुरुषों के अतिशय का बखान करते हुए इस विराट दीक्षा महोत्सव को अविस्मरणीय बताया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने दीक्षा पश्चात् नवीन नामकरण इस प्रकार किए -

- मुमुक्षु भाई सुरेश जी पामेचा, पिपलियामंडी.... नवदीक्षित संत श्री रामसुमन मुनि जी म.सा.
- मुमुक्षु भाई लोकेश जी चोपड़ा, शिंदखेड़ा..... नवदीक्षित संत श्री रामलक्ष्य मुनि जी म.सा.
- मुमुक्षु बहन वर्षा जी चोपड़ा, शिंदखेड़ा..... नवदीक्षिता साध्वी श्री रामवती श्री जी म.सा.

नवीन नामकरण की घोषणा होते ही जय-जयकारों से संपूर्ण सभा गूँज उठी। सभा में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, पिपलिया मंडी, शिंदखेड़ा से वीर परिवारजन व देश-विदेश से आगत हजारों धर्मप्रेमी भाई-बहन उपस्थित थे। आयोजन को सफल बनाने में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, बहू मंडल, समता बालिका मंडल, महावीर सेवा समिति व सकल जैन समाज, भीलवाड़ा का सराहनीय योगदान रहा। यह दीक्षा महोत्सव भीलवाड़ा संघ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

श्री गगन मुनि जी म.सा. के 26 उपवास की घोषणा जैसे ही आचार्य भगवन् के श्रीमुख से हुई तो सभी जन जय-जयकारों से तपानुमोदना करने लगे।

29  
जुलाई  
2024

## हमारा मन पवित्र होना चाहिए

जन मन में धर्म राग उत्पन्न करते हुए प्रातःकालीन प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में जिनवाणी का अमृतपान कराते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ‘हमने जितना ध्यान बाहरी चीजों पर दिया उतना ही अपने आपको कमजोर किया। अगर हम सोचें कि हमारे साथ अच्छा हो, लोग हमेशा अच्छा बर्ताव करें, हमारे प्रति लोगों के मन में सद्भावना हो, हमेशा चारों तरफ अनुकूलताएँ मिले तो हम बहुत सुखी बनेंगे तो ध्यान देना कि ऐसा सोचना गलत है। हमारे साथ क्या हो रहा है, उससे हमारा जीवन नहीं बनता। हम क्या खा रहे हैं, उससे हमारा शरीर नहीं बनता। हम कितने सुरक्षित वातावरण में हैं, इससे सुरक्षा नहीं होती। लेकिन हमारा जीवन उससे बनता है कि हमारा मन कितना पवित्र है और हमारे मन में दूसरों के प्रति कितने आत्मीय भाव हैं।’

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधु के लिए आहार जल्दी नहीं बनाना, ज्यादा नहीं बनाना। गवेषणा के समय झूठ नहीं बोलना। बच्चों को भी गोचरी बहराने का अभ्यास करवाना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। मोक्षार्थी शिविर ज्ञान-ध्यान, संयमचर्या, अनुशासन, समयबद्धता के साथ महापुरुषों के सान्निध्य में निरंतर गतिमान था। इस शिविर में लगभग 300 भाई-बहन भाग लेकर अपना जीवन उन्नत बना रहे हैं।

30  
जुलाई  
2024

## मोक्षार्थी बनने से पहले अहंकार छोड़ें

मंगलमय प्रातःकालीन प्रार्थना से दिन के शुभारंभ पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में जीवन उत्कर्ष की ओर बढ़ रहे गुरुभक्तों की अतृप्त जिज्ञासाओं को तृप्त करते हुए व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में संयम गीत के माध्यम से जन-जन के सुप्त आत्म-तत्त्वों को जागृत किया-

मानव का तन अनमोल मिला, मोक्षार्थी बनो-2।  
जिनधर्म मिला, शुभ पुण्य खिला, मोक्षार्थी बनो-2।।टेर।।

क्यूँ मोह-मदिरा पीते हो, क्यूँ राग रंग में जीते हो?  
 क्यूँ आत्मज्ञान से पीछे हो, मोक्षार्थी बनो-2॥1॥  
 एक मोक्ष मार्ग को ध्याने से, एक मोक्ष मार्ग अपनाने से।  
 सुख, शांति, सुकून, सौभाग्य खिले, मोक्षार्थी बनो-2॥2॥  
 उपशम का जहाँ झरता झरना, जिनवाणी का है वहाँ शरणा।  
 फिर काम-क्रोध से क्या डरना, मोक्षार्थी बनो-2॥3॥  
 जहाँ ठहर सके ना कठिनाई, बजती रहती जहाँ शहनाई।  
 ऐसा अवसर फिर मोक्ष मिले, मोक्षार्थी बनो-2॥4॥

“मोक्षार्थी बनने से पहले अहंकार को गलाना जरूरी है। क्रोध, मान, माया, लोभ को गलाना है। जब अहंकार गलेगा तो नमन होगा। आध्यात्मिक साधना के लिए साधक को नमना जरूरी है। नमन करेगा तो गति आगे बढ़ेगी। नमने सो गमे, जो नमता है वो पाता है। धन-दौलत, वैभव की प्राप्ति के लिए नमना जरूरी हो जाता है। कभी-कभी बिना नमने भी सांसारिक चीजें मिल सकती हैं, किंतु आध्यात्मिक ज्ञान बिना नमने नहीं आ सकता। बिना नमने जो ज्ञान होगा वह केवल ऊपरी ज्ञान होगा। बिना विनय के जो ज्ञान प्राप्त होगा वह ज्ञान ऊपर-ऊपर दौड़ता रहेगा, आत्मा के साथ आत्मसात नहीं हो पाएगा। मोक्षार्थी बात नहीं करता। वह मुखरता रहित होता है। बोलने का काम पड़े तभी बोलना। जितना काम पड़े उतना ही बोलना। जितना जरूरी हो उतना ही बोलना। अनावश्यक बकबक नहीं करना। थोड़ा बोलने से भीतर शक्ति बढ़ती है। साधु के लिए वचन गुप्ति बताई गई है। कम बोलने वालों को लोग ज्यादा सुनते हैं।”

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने व्रत धारण करने की विशेष प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सहमंत्री ने त्याग-प्रत्याख्यान व दया करने की प्रेरणा दी। दोपहर में कर्म सिद्धांत की कक्षा में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने आठ कर्मों की सुंदर व्याख्या फरमाई।

31  
जुलाई  
2024

## धर्म के नाम पर हिंसा धर्म नहीं हो सकती

प्रातःकाल मंगलमय भोर के प्रस्फुटन के साथ ही प्रार्थना के माध्यम से प्रभु व गुरुभक्ति की गई। धर्मसभा में चतुर्विध संघ की नयनाभिराम उपस्थिति के मध्य परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना से जन-जन को मोक्ष का तलस्पर्शी ज्ञान प्रदान करते हुए फरमाया कि “मोक्षार्थी की पहचान सत्य, अहिंसा पालन करना, मन में उपशम झरना झरता तथा अहिंसा को बताया गया है। सभी धर्मों में अहिंसा को धर्म के रूप में स्वीकार किया गया है। कोई कहता है कि धर्म के लिए जो हिंसा की जाती है वह हिंसा, हिंसा नहीं होती। पशुबलि दी जाती है, उसको लोग हिंसा नहीं मानते, किंतु जैन सिद्धांत उसको हिंसा मानता है। हेमचंद्र आचार्य ने बताया कि धर्म के नाम पर की गई हिंसा कभी धर्म नहीं हो सकती। धर्म अलग है, हिंसा अलग है। आज धर्म के नाम से हिंसा, मारकाट चालू है। वास्तव में इसका धर्म से कोई संबंध नहीं है। वहाँ पर द्वेष की भावना सक्रिय होती है। राग-द्वेष दोनों ही धर्म से अलग हैं। राग से वैराग्य की ओर चलने से धर्म का भाव अंदर पैदा होगा। मोक्षार्थी की कथनी-करनी में अंतर नहीं होना चाहिए। यह सत्य का रूप है। मोक्षार्थी अपने कषायों को धीरे-धीरे कम करने की दिशा में आगे बढ़ता है।”

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि एक-दूसरे पर विश्वास होना चाहिए, क्योंकि जब तक विश्वास नहीं होगा तब तक संदेह रहेगा। यदि आपस में विश्वास नहीं होगा तो हमारा जीवन सुखमय नहीं होगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दर्शनार्थियों का ताँता लगा हुआ है। भीलवाड़ा नगर धर्ममय, राममय हो गया है।

## तपस्या सूची

### संत-सती वर्ग

श्री गगन मुनि जी म.सा.	मासखमण	साध्वी श्री सुशक्ति श्री जी म.सा.	9 उपवास
श्री इभ्य मुनि जी म.सा.	8 उपवास (अठाई)	साध्वी श्री रामत्रया श्री जी म.सा.	5 उपवास
श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा.	5 उपवास	साध्वी श्री रामप्रणीता श्री जी म.सा.	3 उपवास (तेला)

### संत-सती वर्ग

आजीवन शीलव्रत	अशोक जी सुशीला बाई सांखला-भीलवाड़ा, भोपाल सिंह जी अंजू देवी मारू-भीलवाड़ा, दिनेश जी जैन-मंगरोड़ा, ललित कुमार जी मधुलता जी मूलावत-भीलवाड़ा, शांतिलाल जी सरला देवी सेठिया-भीलवाड़ा/भीनासर, रमेश जी पुष्पा जी गुगलिया-भीम, करणमल जी पुष्पा जी कोठारी-भींडर, पारसमल जी कुदाल-भींडर, हीरालाल जी लीला बाई धर्मपाल जैन-लामगरा, पन्नालाल जी अरुणा जी मुणोत-जलगाँव, रमेशचंद जी जैन-रायपुर, प्रकाशचंद जी लूणिया-बेंगलुरु, दिनेश जी पींचा-बेंगलुरु, रंजना जी गणपतलाल जी नंदावत-सूरत, आसकरण जी कमला देवी मालू-डिब्रूगढ़, अंजना जी गणपत जी नंदावत-सूरत, हेमंत जी अलका जी कुचेरिया-चिखली, बसंतिलाल जी ललिता जी-विजयनगर, कमलेश जी अश्विनी जी चोपड़ा-शिंदखेड़ा, राजमल जी-निर्मला जी मुणोत-निन्नोर, सुशील जी गुलाब देवी लुणावत-गुरुग्राम, भागीरथी जी धर्मपाल जैन-माताजी का बड़ोला, कैलाशचंद्र जी चंद्रा देवी दक-मैसूर, अभय कुमार जी समता देवी जैन-मंदसौर, प्रकाश जी बोथरा-दोंडाइचा, दलपत सिंह जी हिंण्ड-बनेड़ा
गाथा का स्वाध्याय	एक लाख - सुशीला देवी आरी-बीकानेर, सरोज देवी पुगलिया-बीकानेर, आशा जी कांठेड़-उज्जैन, प्रभा जी बुच्चा-सूरत
पोरसी	100 - ज्ञानचंद जी रांका-जयपुर (100 - डेढ़ पोरसी भी), चंदनमल जी छल्लाणी-गंगाशहर
वर्षीतप	पुष्पलता जी बरमेचा-भीलवाड़ा (9 उपवास भी), सातवाँ - सरोज जी मूणत
उपवास	30 - कल्पना जी बेताला, बगदीराम जी ओम परमार, कामलीखेड़ा (उज्जैन) 20 - शशि देवी मोगरा-प्रतापगढ़ 19 - कुमारी दीक्षा जी सुपुत्री बसंत जी सेठिया-भीलवाड़ा 14 - राजकुमारी जी नादेचा-खाचरोद 12 - आशा जी नाहर-भीलवाड़ा 11 - सागरमल जी सुराना-कांकरोली 10 - अंजना देवी पोखरना-बेगूँ, प्रिया जी भूरा 9 - अशोक जी बागमार-कपासन, भीलवाड़ा से- पंकज जी लालानी, विजयश्री जी लालानी, संगीता जी भालावत, कु. निर्विता जी बुलिया अठाई - धर्मचंद जी छाजेड़, मीनाक्षी जी मूलावत, शीतल जी सुराणा

अन्य कई गुप्त तपस्याएँ जारी...

-महेश नाहटा ❤️❤️❤️

## शंक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान	: पिपलिया मंडी, मंदसौर (म.प्र.)
जन्म तिथि	: 12 दिसंबर 1952
वैराग्यकाल	: लगभग 1 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	: बी.ए. प्रथम वर्ष
धार्मिक अध्ययन	: प्रतिक्रमण, लगभग सभी आगमों का अध्ययन
पदयात्रा	: मंदसौर से नीमच तक अनेक बार

## पारिवारिक परिचय

दादाजी	: श्री छोगमल जी वृद्धिचंद जी पामेचा
पिताजी-माताजी	: स्व. श्री बापूलाल जी-स्व. श्रीमती मोहन बाई पामेचा स्व. श्री माणकलाल जी-स्व. श्रीमती चतर बाई पामेचा (दत्तक)
भाई-भाभी	: तेजमल जी-सुभद्रा जी, साहेबलाल जी-प्रीति जी, समरथमल जी-दिलखुश जी, स्व. ज्ञानचंद जी-निर्मला जी पामेचा
धर्मसहायिका	: शोभा जी पामेचा
बहन-बहनोई	: स्व. श्रीमती फूल कँवर जी-अमृतलाल जी मेहता (जीरन), विमला जी-स्व. श्री बृजलाल जी पितलिया (ताल)
पुत्री-दामाद	: मुक्ता जी-ऋषभ जी चौधरी (इंदौर)
भतीजे-वधू	: अजीत जी-प्रमिला जी, राजेंद्र जी-मेघा जी, दर्शन जी-निधि जी, निखलेश जी-वैशाली जी पामेचा
भतीजी-दामाद	: ममता जी-विजय जी हरणिया, समता जी-नवीन जी कांठेड़, पूजा जी-अरुण जी मांडावत, नेहा जी-विकास जी रांका
मामा जी	: रंगलाल जी खिंदावत (आंतरी माता), डूंगरवाल परिवार, चपलाना
ससुराल पक्ष	: बंब परिवार, भाटखेड़ी
परिवार से दीक्षित	: श्री वृद्धिचंद जी म.सा. (संसारपक्षीय दादाजी), श्री अमर मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय काकाजी), श्री बलभद्र मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय पिताजी), श्री रणजीत मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय बड़े पिताजी), श्री अटल मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय भाई), श्री आदित्य मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय भतीजे), साध्वी श्री कस्तूर कँवर जी म.सा. (संसारपक्षीय काकीजी), साध्वी श्री विमला कँवर जी म.सा. (संसारपक्षीय बड़ी माताजी), साध्वी श्री चंदनबाला जी म.सा., साध्वी श्री विचक्षणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमलता जी म.सा., साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा., साध्वी श्री सुलक्षणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री कल्पमणि जी म.सा., साध्वी श्री सुमंगला श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बहनें), साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय भाभी)

## मुमुक्षु श्री सुरेश जी पामेचा



## शंक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान/मूलनिवास	: चिखली, बुलढाणा (महा.)
जन्म दिनांक	: 26 मई 1970
वैराग्यकाल	: 1 माह
व्यावहारिक शिक्षा	: 10वीं
धार्मिक शिक्षा	: श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 6 अध्ययन, पुच्छिसुणं, लघुदंडक, गति-आगति
धार्मिक परीक्षाएँ	: जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1 से 7
पदयात्रा	: लगभग 100 किमी.

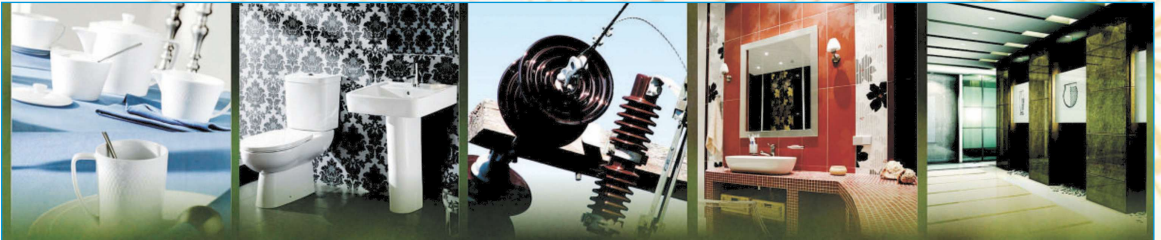
## पारिवारिक परिचय

दादा ससुरजी	: स्व. श्री हस्तीमल जी चोपड़ा
ससुरजी-सासजी	: स्व. श्री हिम्मतमल जी-स्व. श्रीमती बनारस बाई चोपड़ा
धर्मसहायक	: स्व. श्री राजेंद्र जी चोपड़ा
पिताजी-माताजी	: स्व. श्री जसराज जी-स्व. श्रीमती सुशीला बाई कुचेरिया
देवर-देवरानी	: मनीष जी, कमलेश जी-अश्विनी जी चोपड़ा
ननद-ननदोई	: स्व. श्रीमती शकुंतला जी-स्व. श्री रूपचंद जी बोरा, चंद्रकला जी-स्व. श्री भागचंद जी लोढ़ा, अलका जी-नथमल जी संचेती, वैशाली जी-स्व. श्री तिलोकचंद जी बोथरा
देरूता-वधू	: चेतन जी-हितेश्री जी, दीक्षांत जी, अरिहंत जी चोपड़ा
देरूती-दामाद	: हीना जी-यशपाल जी टाटिया
भाई-भाभी	: हेमंत कुमार जी-अलका जी कुचेरिया
बहन-बहनोई	: स्व. श्रीमती हर्षा जी-एड. नंदलाल जी ओस्तवाल, संगीता जी-सुमति कुमार जी कोठारी, योगिता जी-राजेंद्र कुमार जी बागरेचा
परिवार से दीक्षित	: श्री रामलक्ष्य मुनि जी म.सा. (साधुमार्गी) साध्वी श्री वरण श्री जी म.सा. (साधुमार्गी) साध्वी श्री साक्षी श्री जी म.सा. (साधुमार्गी) साध्वी श्री हिमानी श्री जी म.सा. (साधुमार्गी) साध्वी श्री स्वस्तिप्रज्ञा श्री जी म.सा. (अन्य संप्रदाय)

## मुमुक्षु श्रीमती वर्षा जी चोपड़ा

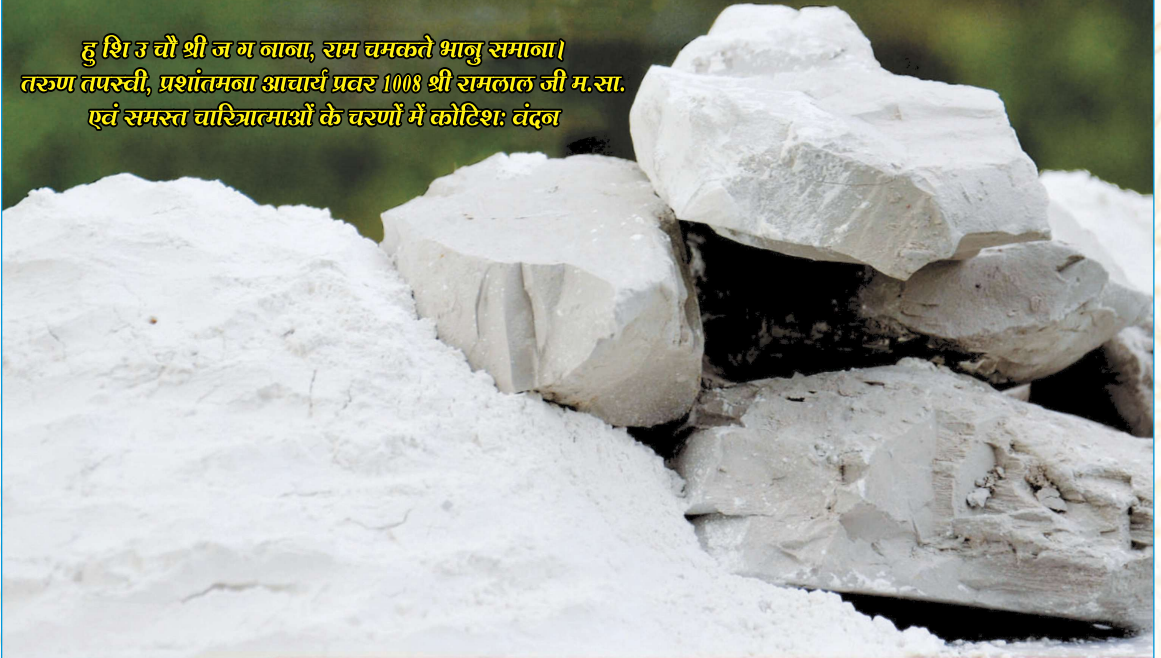






## Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज न नाना, राम चमकते भानु समाना।  
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.  
एवं समस्त चाखिात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन



### A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

**JLD MINERALS**  
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :  
1st Floor, Labhuji Ka Katla,  
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234  
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944  
Email : wbcclay@yahoo.com

[www.jldminerals.com](http://www.jldminerals.com)

15-16 अगस्त 2024  
[www.sadhumargi.com](http://www.sadhumargi.com)

श्रमणोपासक

81



**SIPANI MARBLES**

**STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED**

*Royal Italian Marbles*

**AS PER ISI STANDARDS**



**WWW.SIPANIMARBLES.COM**

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,  
राम चमकते भानु समाना।  
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर  
1008 श्री रामलाल जी म.सा.  
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में  
कोटिशः वंदन!

# संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,  
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401  
(राज.) फोन : 0151-2270261  
[helpdesk@sadhumargi.com](mailto:helpdesk@sadhumargi.com)

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में 1,000/- (15 वर्ष के लिए)

विदेश हेतु 15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक 50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता 500/-

आजीवन सदस्यता 5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से

कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : [ho@sadhumargi.com](mailto:ho@sadhumargi.com)

## बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : [accounts@sadhumargi.com](mailto:accounts@sadhumargi.com)

SCAN & PAY



## व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	} <a href="mailto:news@sadhumargi.com">news@sadhumargi.com</a>
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: <a href="mailto:sahitya@sadhumargi.com">sahitya@sadhumargi.com</a>
महिला समिति	: 6375633109	: <a href="mailto:ms@sadhumargi.com">ms@sadhumargi.com</a>
समता युवा संघ	: 7073238777	: <a href="mailto:yuva@sadhumargi.com">yuva@sadhumargi.com</a>
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	} <a href="mailto:examboard@sadhumargi.com">examboard@sadhumargi.com</a>
कर्म सिद्धांत	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: <a href="mailto:anjali@sadhumargi.com">anjali@sadhumargi.com</a>
विहार	: 8505053113	: <a href="mailto:vihar@sadhumargi.com">vihar@sadhumargi.com</a>
पाठशाला	: 9982990507	: <a href="mailto:pathshala@sadhumargi.com">pathshala@sadhumargi.com</a>
शिविर	: 7231833008	: <a href="mailto:udaipur@sadhumargi.com">udaipur@sadhumargi.com</a>
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: <a href="mailto:globalcard@sadhumargi.com">globalcard@sadhumargi.com</a>
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियां	: 9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियां	: 7231933008	

## -: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

## आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर  
YOUR TRUST

जय गुरु राम



# RAKSHA<sup>®</sup>

## PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND



FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED  
CO-MOULDED DURO RING SEAL

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,  
राम चमकते भानु समाना।  
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर  
1008 श्री रामलाल जी म.सा.  
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में  
कोटिशः वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand  
**SHAND GROUP OF INDUSTRIES**

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA  
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.  
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



**RAKSHA FLO**  
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

**Diamond**  
Duroflex  
**Diamond**  
DUROLON



Now with new  
**M.R.O.**  
Technology  
Resists high impact



IS 15778 : 2007  
  
CM/L NO : 2526 149



**LUCALOR**  
FRANCE

www.shandgroup.com

रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।  
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25,000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ  
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

@absjainsangh



www.facebook.com/HOSadhumargi

